आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ. सुभाष जैन, उज्जैन

प्रमुख सलाहकार

श्री प्रेमजी डूंगरवाल

35, तिलकनगर, इन्दौर

मोबा. नं.94253-13434

संपादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46,सखीपुरा,उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं.-94250-91012

E-mail-Subash_3333 @ yahoo.co.in

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O से श्री अभ्युदयफाउण्डेशन, उज्जैन के नाम सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी।

-डॉ.सुभाष जैन

आपकी लड़की कुरूप होगी, अपाहिज होगी, तो क्या कोई उससे शादी करना चाहेगा? वैसे ही धर्मक्रियाएं यदि सुन्दर नहीं होगी, धर्मक्रिया करनेवालों ने उनका सौंदर्य नष्ट कर दिया होगा, तो क्या दूसरे उन क्रियाओं से प्रेम करेंगे? जीवन में उन्हें अपनायेंगे? क्रिया में सौंदर्य चाहिए, मनुष्य को उस क्रिया में क्षणिक तृप्ति भी चाहिये! अन्यथा कोई क्रिया क्यों करेगा?

आशीर्वाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्रीनवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठि-सुपट्ठिओ।।

- उत्तरा. सूत्र, 20.37

आत्मा ही सुख और दुःख को उत्पन्न और अनुत्पन्न करने वाली है। सदाचार में परिणत आत्मा ही मित्र और दुराचार में परिणत आत्मा ही शत्रु है।

पाथेय

हे प्रभु! वर दो कि हम तुम्हारे विधान के प्रति हो सके अधिकाधिक जागृत एवं सचेतन, जिससे हम सभी पदार्थों में इसकी अभिव्यक्ति को कर सके सुगम। ऐसी कृपा करो कि मैं अपने भटकते विचारों का स्वामी बन सकूं और तुममें एवं तुम्हारे द्वारा प्रेरित, जीवन को देखने की दृष्टि पाऊं इस मिथ्या भौतिक जगत को सत्य रूप मानने की भ्रांति दूर हो सके और इसके स्थान पर तुम्हारी चिर अनन्त मूल सत्ता का ज्ञान बोध अन्तर में हो जाए जागृत एवं सचेत। प्रभु! मुझे अपने दिव्य प्रेम में आश्रय प्रदान करो जिससे वह प्रेम मुझमें रहकर व मेरे द्वारा प्रस्फुटित हो। मुझे बनने दो अपना एक कुशल एवं स्पष्टदर्शी सहायक और मेरे अन्दर का प्रत्येक तत्व कर सके तुम्हारी अभिव्यक्ति को उन्नत एवं स्थायी। अपने सभी दोष, कठिनाईयाँ, अपूर्णताएँ एवं अज्ञान मैं जानता हूं लेकिन तुम्हारी कृपा में मेरा पूर्ण विश्वास है, मैं तुम्हारे समक्ष नतमस्तक हूं।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रूपये
आजीवन	1000/- रूपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रूपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रूपये
एक प्रति	10/- रूपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष 21 आसोज-कार्तिक अक्टूबर 2016 अंक (10)

विषय-सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	1
2- विषय सूची	2
3- दुःख : नहीं सुख चाहिए-(सम्पादकीय)-डॉ.सुभाष जैन	3
4- गुरू और सद्गुरू में फर्क?	4
5- श्री कयावन्ना-चरित्रम्-आचार्यश्री जयानंदसूरीश्वरजी म.	5-6
6- अमृत पुत्र	7-8
7- क्या विश्वरत्न किसी से कम है? -डॉ. सुभाष जैन	9-10
8- पाप की सजा भारी...! -प.पू.आचार्य श्री अरूणविजयजी म.	11-12
9- नमस्कार महामंत्र- सुधीर पटवा, इंदु-मुक्तक-रामेश्वरप्रसाद गुप्त "इंदु" श्रेणिक राजा के जीवन की अनहोनी बातें-श्रीमती मनोरमा खाब्या	13-14
10-सफ्लता का अमोघ मंत्र : समय प्रबंधन, जिन्दगी और मौत की हकीकत	15-16
11-स्वप्न के झरोखे से परोक्ष की झांकी	17-18
12-आ रहा है निश्चित ही स्वर्णिम युग, लालच बुरी बला है	19-21
13-मजहब राह है संस्कृति जमीन	22
14-पर्व सिखाते हैं कि जीवन एक उत्सव है, पाप और पुण्य	23-24
15-पापा सुधर गए....	25
16-माया- आचार्य श्रीमद् जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.	26
17-अजब है तेरी खुदाई !, संन्यास का सच्चा मार्ग-डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि	27
18-आगमोद्धारक भविष्य फल-अक्टूबर 2016-अनु दीपक जैन	28
19-वर्ग पहेली क्रमांक-263	29
20-ज्ञान गंगोत्री कमांक-263 -पंन्यास प्रवर मृदुरत्नसागरजी म.	30
21-शासन समाचार	31-39
22-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण,सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है, आत्म-उपदेश	40

संपादकीय

दुः,ख - नहीं सुख चाहिए

संसार *सागर का अध्ययन यही बतलाता है कि इस नष्टमय संसार के हर प्राणी को सुख चाहिये दुःख नहीं किसी को भी दुःख नहीं चाहिये। अजब चाहत है मानव की। क्या कभी यह भी सोचा है कि यह सुख कहां से और कैसे आता है। यह भी विचारा है कि दुःख वह भी कहां से आते, क्यों आकर हमारे जीवन को झकझोर देता है? यह सुख-दुःख की थ्योरी आखिर है क्या? क्यों सुख की चाहत बनी रहती है और दुःख से दूर रहने की इच्छा होती है? इन्हीं प्रश्नों के साथ पूज्यपाद गुरूदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा भी कहते थे कि- संसार के सब प्राणी को सुख चाहिये। दुःख किसी को भी नहीं चाहिये परन्तु हमारे पूर्व और वर्तमान के काम ऐसे है कि हमें सुख ही मिलेगा दुःख नहीं, कभी इस पर विचार किया है?*

जीवन में सदा सुख बना रहे यह आवश्यक नहीं है, हम चाहते हुए भी सुख को हमेशा बनाये नहीं रख सकते है और न चाहने पर भी दुःख आ ही जाता है। संसार में कोई भी प्राणी न तो हमेशा सुखी रह सकता है और न ही दुःखी। संसार में जीवन है तो सुख और दुःख से सामना अंतिम सांस तक साथ रहेगा। हम उससे बच नहीं सकते। आगे भी यह सदा बना रहने वाला है, मूल बात है कि यह सुख-दुःख की परम्परा का क्या कारण है। इसकी गहराई में जाकर हमें खोजना होगा। हमारे शास्त्रों में कही गई परमात्मा की वाणी का स्पष्ट निर्देश है कि सम्पूर्ण जीवन कर्म अधीन है। जब तक कर्मों की क्रिया को हम नहीं समझेंगे तब तक वह सब करते रहेंगे जो नहीं कहना चाहिये और वह सब हम नहीं करते है जो करना चाहिये, किस तरह से कर्म सिद्धांत जीवन को प्रभावित करते है और सुख-दुःख का यह खेल हमारे जीवन में चलता रहता है इसको जानना जरूरी है।

इस विश्व में हम जहां भी दृष्टि डालेंगे वहां सभी जीव दुःख से पीड़ित दिखाई देते है फिर वह चाहे एक साधारण मनुष्य हो या फिर राजा-महाराजा जैसा समृद्धिवान मनुष्य। हर कोई किसी न किसी दुःख से पीड़ित है, सम्पत्ति उपाधिवाले को अधिक दुःख व कम सम्पत्ति वाला कम दुःखी है, स्पष्ट दिखाई देता है कि जिसके सम्बन्ध-सम्पर्क अधिक है,वह अधिक परेशान है, प्रभावित है। आपके जीवन का हिस्सा जब अधिक से अधिक स्वयं के लिये नहीं ओरों के लिये खर्च होता है तो आपके हिस्से दुःख ही आयेगा सुख नहीं क्योंकि आप अपने लिये नहीं जी रहे होते है। आसक्ति और आवश्यकताएं कम नहीं होगी तो परेशानी बढ़ेगी ही। मुक्ति वस्तु को इकट्ठा करने से नहीं मिलती है बल्कि त्याग करने से, छोड़ने से मिलती है। हम जीवन का अधिकांश हिस्सा नश्वर वस्तुओं के संग्रह में ही व्यर्थ कर देते है। यह सब होने के बाद भी मनुष्य के हाथ में दुःख के अलावा कुछ नहीं आता है सुख की इच्छा दुःख की वृद्धि का कारण बन जाती है।

मनुष्य मन से उत्पन्न होनेवाले विकल्प सुख दुःख का कारण बनते है जितने विकल्प अधिक होंगे उतनी उलझने मन को बैचेन करती है। मन से विकल्पों के आने का कारण मनुष्य की वे प्रवृत्तियां है जो उसे नहीं करना चाहिये पर फि र भी वह करता है। जैसे विकल्प होंगे वैसा मन बनेगा और सुख दुःख का कारण बनेगा। लगता तो यहीं है कि हम ही हमारे दुःख-सुख को उत्पन्न करनेवाले है, हम ही उन्हें जन्म देकर हंसते-रोते है। पौद्गलिक अर्थात् नष्ट होनेवाले पदार्थों के प्रति हमारी आसक्ति, हमारा चिंतन विषपान के समान है, कुछ क्षण के लिये तो वह अच्छा लगता है किंतु बाद में वहीं हमारे लिये दुःख का कारण बनता है।

मनुष्य जीवन में हम जिस तरह से दुःख में अधिक वेदना के कारण अन्य सब बातें भूल जाते है उसी प्रकार सुख की अधिकता में भी हम अन्य वे महत्वपूर्ण बातें और सम्बन्ध-व्यवहार भूल जाते है जिसकी वजह से आज हम उस स्थान पर है स्पष्ट है हम कंडीशनल जिंदगी जीते है, कंडीशन के अनुसार हमारे आचार-व्यवहार और आचरण में परिवर्तन होता रहता है, हमारी जाग्रति और स्मृति का भान हमें नहीं होता है और हम भूत को भूलकर वर्तमान में जाने लगते है परन्तु जब परिस्थतियां बदलेगी तब क्या होगा यह निर्णय लेने में हम चुक जाते है, क्या यह हमारे लिये सुख-दुःख का कारण नहीं बनेगा? यह चिंतन करने जैसा है।

यह मनुष्य का साधारण स्वभाव है कि यश कीर्ति, स्वामित्व सौंदर्य, समृद्धि प्राप्त होने पर वह बहुत हर्षित होते हुए अपने जीवन को सफल मानता है और इसके अनुसार ही जीवन जीता है किंतु परिवर्तन के स्वरूप से वह अनभिज्ञ होता है, समय के परिवर्तन से हमें सचेत रहना चाहिये। क्योंकि ये सारी वस्तुएं परिवर्तन के दौर में अहितकारी बन जाती है और सुख में से दुःख प्रकट कर देती है, इन सब में से उत्पन्न तेरे मेरे के राग के कारण कर्म उन्हें दुःख की खाई में घसीट ले जाता है और मनुष्य फिर से सुख-दुःख के जंजाल में उलझ जाता है, मनुष्य के जीवन में चलनेवाली यह संतत प्रक्रिया है इससे कोई भी बच नहीं पाता है तो फिर? मनुष्य क्या करें कि इस सुख-दुःख के प्रभाव से मुक्त होकर अपना जीवन जी कर सफल बना सके? कैसे उस शाश्वत सुख को पाये जो उसे परम शांति कर अनुभव कराये?

परमात्मा की वाणी से इस जंजाल से मुक्त हो सकते है जो ज्ञान प्रभु ने फ रमाया है उस पर आचरण करेंगे तो जीवन में बहुत शांति पाई जा सकती है। दो बातें बहुत महत्वपूर्ण है, पहली आत्मज्ञान को पाये और दूसरी जड़ चेतन के भेदज्ञान को समझे। अगर यह ज्ञान पा लिया तो जीवन निर्विकल्प होकर जीना आसान हो जायेगा। जड़ चेतन्य के भेदज्ञान को समझकर हम नये कर्मों के आगमन को रोक सकते है और आत्म जागृति के बल पर पहले के कर्मों को नष्ट कर अपने आत्म स्वरूप को हम पहचान सकते है। आत्मबोध का ज्ञान भेद ज्ञान से प्राप्त होता है सिर्फ थोड़ा सा चिंतन ही हमें सुख-दुःख के मोह-जाल से मुक्त कर देगा, आगे तो बढ़े।

*** डॉ.सुभाष जैन**

गुरू और सद्गुरू में फर्क?

गुरू का अर्थ होता है, जो एक प्रकार की बुद्धि के लिये सूत्र दे जाए। उसकी सीमा है। वह एक तरह की बात कह जाता है, उतनी बात जिनकी समझ में पड़ती है उतने थोड़े से लोग उसके पीछे चल पड़ते है। सद्गुरू कभी-कभी होता है। सद्गुरू का अर्थ होता है, जो मनुष्य मात्र के लिये जो बात कह जाएं। जो किसी को छोड़े ही नहीं। जिसकी बाहें इतनी बड़ी हों कि सभी समा जाएं- स्त्री-पुरूष, सक्रिय और निष्क्रिय, कर्मठ और निष्क्रिय, बुद्धिमान और भाविक, तर्कयुक्त और प्रेम से भरे, सब समा जाएं, जिसकी बांहों में सब आ जाएं, जिसकी बांहों में किसी के लिये इन्कार ही न हो।

बुद्ध ने वर्षों तक स्त्रियों को दीक्षा नहीं दी। इनकार करते रहे। वह मार्ग पुरूषों के लिये था। उसमें स्त्रियों की जगह नहीं है। स्त्रियों का थोड़ा सा भय भी है और जब मजबूरी में, बहुत आग्रह करने पर बुद्ध ने दीक्षा भी दी स्त्रियों को, तो यह कहकर दी कि मेरा धर्म पांच हजार साल चलता, अब केवल पांच सौ साल चलेगा, क्योंकि स्त्रियों की मौजूदगी मेरे धर्म को भ्रष्ट कर देगी।

बुद्ध के सूत्र मौलिक रूप से पुरूष के लिए काम के है, क्योंकि प्रेम की वहां कोई जगह नहीं है। प्रीति का वहां कोई उपाय नहीं है और स्त्रैण-चित्त तो प्रीति के बिना परमात्मा की तरफ जा ही नहीं सकता। तो खतरा है, बुद्ध गलत नहीं कह रहे है, बुद्ध ठीक ही कह रहे हैं। बुद्ध का भय साफ है कि मैंने स्त्रियों को ले लिया है, और मार्ग पुरूषों का है और स्त्रियां बिना प्रीति के रह नहीं सकती, तो आज नहीं कल स्त्रियां अपनी प्रीति को डालना शुरू कर देंगी इस मार्ग पर, और यह मार्ग शुद्ध ध्यान का है, प्रेम का और प्रार्थना का नहीं है और स्त्रियों ने प्रीति डाल दी, उन्होंने बुद्ध पर ही प्रीति डाल दी, उन्होंने बुद्ध की ही पूजा शुरू कर दी-स्त्री बिना पूजा के नहीं रह सकती। पुरूष को पूजा करना बड़ा कठिन मालूम पड़ता है, झुकना कठिन मालूम पड़ता है, उसका अहंकार आड़े आता है। विरला है वह पुरूष जो झुक जाए।

समर्पण अगर कभी पुरूष करता भी है तो बड़े बेमन से करता है। बहुत सोच-विचार करता है, करना कि नहीं करना। स्त्री के लिये समर्पण सुगम है, संकल्प कठिन है। दोनों का मनोविज्ञान अलग है। पुरूष का मनोविज्ञान है संकल्प का विज्ञान। लड़ना हो, जूझना हो, युद्ध पर जाना हो, सैनिक बनना हो, वह तैयार है। यह बात उससे मेल खाती है, तालमेल है। स्त्री को समर्पण करना हो, कहीं झुकना हो, तो स्त्री में लोच है, इसलिए स्त्रियों को हमने कहा है- वे लताओं की भांति है। पुरूष वृक्षों की भांति है। स्त्री में लोच है। लता को कहीं न कहीं झुकना ही है, कहीं न कहीं सहारा लेना ही है। बुद्ध के मार्ग पर परमात्मा की तो धारणा ही नहीं थी, इसलिए परमात्मा का तो सहारा नहीं था, तो स्त्रियों ने बुद्ध को ही परमात्मा में रूपांतरित कर दिया। बुद्ध भगवान हो गये।

एक नया रूप बुद्ध-धर्म का प्रकट हुआ स्त्रियों के प्रवेश से-महायान। वह कभी प्रकट न हुआ होता। हीनयान बुद्ध का मौलिक रूप है। महायान स्त्रियों की अनुकंपा है। लेकिन स्त्रियों के आने से बुद्ध के ध्यान की प्रक्रियाएं तो डांवाडोल हो गयी।

कृष्ण के मार्ग पर कोई अड़चन नहीं है। कृष्ण के मार्ग पर पुरूष को जाने में थोड़ी अड़चन है। पुरूष जाता है तो थोड़ा सा संकोच करता और झिझकता। स्त्री नाचने चली जाती है। तुम देखते हो न, कृष्ण के रास की इतनी कथाएं हैं, उनके भक्तों में पुरूष भी थे, गोपाल भी थे, मगर तुमने रास में देखा होगा स्त्रियों को ही नाचते। एकाध गोपाल भी दाढ़ी-मूंछधारी वहां दिखायी नहीं पड़ते। सब स्त्रियां हैं। ऐसा नहीं कि कुछ गोपाल न रहे होंगे। लेकिन उनको भी दाढ़ी-मूंछ की तरह चित्रित नहीं किया है, क्योंकि वे उतने ही स्त्रैण-चित्त रहे होंगे जितनी स्त्रियां।

पश्चिम बंगाल में एक छोटा-सा संप्रदाय अब भी जीवित है-राधा संप्रदाय। उसमें पुरूष भी अपने को स्त्री मानता है और जब कृष्ण की पूजा करना है तो स्त्री के वेश में करता है, स्त्री के कपड़े पहनकर करता है और राज जब सोता है तो कृष्ण की मूर्ति को अपनी छाती से लगाकर सोता है। कृष्ण के साथ तो गोपी बने बिना कोई उपाय नहीं है। कृष्ण के साथ तो स्त्रैण हुए बिना कोई उपाय नहीं है। वहां तो नाता प्रीति का और प्रार्थना का है। पुरूष कृष्ण के मार्ग पर जाएगा तो भ्रष्ट कर देगा वैसे ही, जैसे बुद्ध के मार्ग को स्त्रियों ने भ्रष्ट कर दिया।

गुरू का अर्थ होता है, जिसने एक दिशा दी है, एक सुनिश्चित दिशा दी है। उस सुनिश्चित दिशा में जितने लोग जा सकते हैं, वे जा सकते हैं जो नहीं जा सकते, वह उनके लिए मार्ग नहीं है, वे कहीं और तलाशें, सद्गुरू मैं उसे कहता हूं, जिसकी बाहें इतनी बड़ी है कि स्त्री हो कि पुरूष, कि कर्म में रस रखने वाले लोग हों कि अकर्म में, कि बुद्धि में जीनेवाले लोग हों कि हृदय में, जितने ढंग की जीवन प्रक्रियाएं हैं, शैलियां है, सबके लिये उपाय हों, सबका स्वीकार हो। गुरू तो बहुत होते हैं, सद्गुरू कभी-कभी होते हैं।

शांडिल्ड सद्गुरू हैं।

इसलिये शांडिल्ड कहते हैं- मेरे भक्ति के मार्ग में अगर तुम योग साधते हों, उसका उपयोग कर लेंगे। चित्त-शुद्धि के लिए उपयोग हो जाएगा। अगर तुम ज्ञान साधते हो, उसका उपयोग कर लेंगे। तुम्हारी जिज्ञासा को प्रगाढ़ करने में तुम्हारी प्यास को निखार करने में, तुम्हारी उत्कंठा को अभीप्सा बनाने में उसका उपयोग कर लेंगे। आओ, सब आओ, किसी के लिये निषेध नहीं है, वर्जना नहीं है। इसलिए शांडिल्ड कहते हैं कि बहुत प्रकार की बुद्धियां हैं और मैं सबके लिये बोल रहा हूं।

श्री कयवन्ना-चरित्रम्

*** आचार्य श्री जयानंदसूरीश्वरजी म.सा.**

त्रिशला के पुत्र, प्रपूज्य और पवित्र श्रीमान वर्धमान जिनवर को और सुविद्वानों में प्रवर निज गुरू के दोनों पादारविन्दों को बार-बार नमन कर, पृथ्वी-तल पर पूजित और बोधि-बीज देनेवाले, सद्-गद्यमय और अति-सुंदर भव्यात्म के ह्रदय की तुष्टि के लिये मैं यतीन्द्रमुनि इस सच्चरित्र का निर्माण कर रहा हूं।

इस भरत-क्षेत्र में पूर्व-दिग् विभाग में सकल-ऋद्धिशाली और समृद्धिशाली-जन और समस्त भोग्य-पदार्थों से परिपूर्ण राजगृही नामक प्रख्यात नगरी है। उस नगरी में रामचंद्र के समान न्याय-निष्ठ श्रेणिक नामक राजा हुआ था। इस राजा के पाँच सौ प्रधान व्यापारी निवास कर रहा था। इस श्रेष्ठी को तारूण्य में कोई सन्तति उत्पन्न नहीं हुई, किंतु भाग्य-योग से चरम वय में एक पुत्र उत्पन्न हुआ। तब श्रेष्ठी को पुत्र के जन्म से कोई असीम ही प्रीति उत्पन्न हुई। इसलिये ही पुत्र के जन्म में विविध महोत्सव करते हुए छह दिन बहुत दान को देते हुए प्रमोद से भरे श्रेष्ठी ने बारह दिन हो जाने पर जन्म को प्राप्त पुत्र का बड़े महोत्सव के साथ कयवन्ना नाम दिया। उस पुत्र के ललाट-पट्ट पर कोई अद्भूत ही भाग्य-रेखा दीप्यमान हो रही थी। यह बालक शुक्ल-पक्ष में चंद्र के समान बढ़ने लगा। पांच वर्ष के होने पर पिता के द्वारा लेखन-शाला में प्रवेश कराया गया। अति-अल्पकाल में ही उसने सर्व विद्याओं में निपुणता प्राप्त की। यह प्रति-दिन विद्या-विनोद से ही काल को व्यतीत करता हुआ और माता-पिता के मन को आल्हादित करता हुआ तथा निरंतर ही मन से शुभ भावना को करता हुआ वैराग्य-वासना के प्रवाह में निमग्न हुआ। लेश-मात्र भी उसका मन व्यावहारिक और लौकिक कृत्य में नहीं लग रहा था। केवल साहित्य-चर्चा और उसके अभ्यास में ही सुख मान रहा था जो कि कहा है कि- बुद्धिमंतों का काल काव्य-शास्त्र विनोद से व्यतीत होता है और मूर्खों का व्यसन से, निद्रा से अथवा कलह से व्यतीत होता है।

तत्पश्चात पिता ने बड़े महोत्सव के साथ इसका विवाह कुलीन रंभा जैसी और सकल कलाओं में कुशल ऐसी जयश्री से किया। परन्तु तारूण्य से पूर्ण होते हुए भी इस पर उसने लेश-मात्र भी मनो-वृत्ति नहीं दी। केवल अपने वैराग्य वासना की घातिनी ही मान रहा था। इसलिये कदापि उस जयश्री को प्रेम-भर से रहस्य में न ही आलिंगन किया, न ही देखा अथवा न ही कुछ बात की। काम की राजधानी जयश्री प्राण-नाथ को आत्म-सात् करने की इच्छा से हमेशा कटाक्ष से देखना तथा स्मितपूर्वक मधुर आलाप आदि हाव-भावों को करती थी, किंतु इसके समस्त उपाय ऊषर-भूमि में बीज-बोने के समान हुआ था। उससे वह जयश्री यह सर्व ही अपनी सासु से कहने की इच्छा करने लगी। जो कि लोक में कितनी सासु यह पर-पुत्री है इस प्रकार मानकर दिन-रात वधू को दुःखित करती है, दुष्कर भी दासी आदि कार्य को उससे ही कराती है और वैसी सासु सदा ही उस वधू के साथ कलह करती है। जगत में वैसी भाग्यशाली वधू अल्प ही है, जो वैसे कलह से उत्पन्न पीड़ा का अनुभव नहीं करती। यदि भर्त्ता की वैसी भाई अथवा बहन हो तो वधू वैसी उस पर कितने सद्-भाव को करें, यह विज्ञजन स्वयं ही विचार करें। इस जयश्री की सासु वैसी नहीं थी, वह सदा ही अपनी वधू को मधुर वचन से बुलाती थी, स्नेह से युक्त दृष्टि से ही देखती थी और अपनी पुत्री के समान ही लालन करती थी, अवसर आने पर सुख-दुःख की बात भी पूछती थी, उसे उत्तम भोजन देकर ही स्वयं भोजन करती थी, क्रोधित होती हुई भी उसने कभी-भी अपनी वधू को भौवें अथवा क्रूर दृष्टि नहीं दिखायी थी। उस पर लेश-मात्र भी पति का अनुराग नहीं है, इस प्रकार जानती हुई भी परन्तु इस बात से वधू को बहुत दुःख होगा, इस प्रकार की बुद्धि से वह उसके आगे कभी-भी उस बात को नहीं करती थी।

अब एक दिवस निःतेज मुखवाली और चिन्तातुर जयश्री को देखकर सासु ने पूछा कि-हे वत्से! आज तेरा यह मुख-चन्द्र शोक रूपी राहु से ग्रस्त प्रायः क्यों दिखायी दे रहा है? क्या तुझे माता-पिता स्मृति-पथ पर आये हैं? अथवा किसी अपूर्व वस्त्र या आभूषण को पहनने की इच्छा करती हुई उत्सुकता को वहन कर रही हो? अथवा किसी दास-दासी ने तेरी आज्ञा को तोड़ी है? अथवा मेरे पुत्र ने तेरी अवज्ञा की है? हे वत्से! मैंने सदा ही तेरे मुख को प्रसन्न देखा है, वह ही आज कैसे चिन्तातुर और निस्तेज दिखाई दे रहा है? तुम सत्य जानो कि मैं तेरे सुख और दुःख से ही सुखिनी और दुःखिनी हो रही हूं तथा मैं तुझे पुत्री से भी विशिष्ट जान रही हूं, इसलिये लज्जा को छोड़ तुम मुझसे शोक का कारण कहो, क्योंकि अज्ञात दुःख की कोई चिकित्सा नहीं होती है।

इस प्रकार सासु का कहा सुनकर जयश्री कहने लगी कि- हे सासु! आपकी कृपा से मुझे सकल सुख साधन की सामग्री है और माता-पिता का वियोग मुझे लेश-मात्र भी बाधित नहीं कर रहा है

तथा दासी आदि वर्ग भी हर्ष सहित मेरे आदेश को सिर से वहन कर रहा है और मुझे वस्त्र-आभरण आदि की भी इच्छा नहीं है। दुःख का कारण तो अन्य ही है जो आप जैसी गुरू-जन के आगे कहने के लिये भी लज्जित हो रही हूं और नहीं कहने से मन में खेद ही उछलता है, वह भी मुझे चिर समय से अति-पीड़ित कर रहा है। निरंतर मेरे मंगल को करने की इच्छावाली आप आज अति-आग्रह से पूछ रही हो, इसलिये चिर-दुःखिनी में आप से कह रही हूं कि वैसा अन्य कोई दुःख-हेतु नहीं है, किंतु स्वामीजी की अकृपा ही महान दुःख है! हे माता! मैं आप से अधिक क्या कहूं? आज पर्यंत उसके समीप में बार-बार गयी हुई भी मुझे एक बार भी नहीं बुलाते है। अहो! बोलना तो दूर रहो, स्नेह से कदापि देखा भी नहीं है, ज्ञान से अथवा अज्ञान से मैंने आज-तक उनका अविनय नहीं किया है, निरंतर प्रेम-सहित उनके अनुकूल ही आचरण कर रही हूं, फिर भी वज्र से भी अति-कठिन उनका हृदय मुझ निरपराधि अबला पर आज तक प्रसन्न नहीं हुआ है। आपके शिशु ने हंसकर भी एक बार मुझसे आज पर्यंत आपके गृह में आगमन के पश्चात बात नहीं की है। हे पूज्ये! जिस सुख की इच्छा करती हुई मैं अपने माता-पिता और सखी को छोड़कर आयी हुं, उस सुख के अलाभ में मैं किसके आगे पुत्कार करूं? क्या मुझे उसके बिना कोई अन्य सुख करनेवाला संभवित है? जिसमें वैसी सुख-आशा को करूं। यदि ऐसी ही दुःस्थिति चिर समय तक रहे तो बाल-विधवा से भी अधिक दुःख को अनुभव करूंगी। आप सिर के छत्र समान हो, इसलिये सहन करने में अशक्य मेरे दुःख को जानकर शीघ्र ही उसके निवारण उपाय को कर मुझे नया जीवन प्रदान करें, जिससे मैं आगे पुनः ऐसे दुःख से युक्त न बनूं। जब इससे आगे वह कहने की इच्छा करती है, तब अनुभव किये गये दुःख के अतिरेक से विदीर्ण हृदयवाली बनी वह जयश्री केवल अश्रु-धारा को ही छोड़ने लगी थी।

इस प्रकार रोती हुई पुत्र-वधु के शोक से शोकाकुलित बनी सासु भी क्षण-भर रोकर और वधू के आंसुओं को दूर कर उससे कहने लगी कि- हे वत्से! तुम शोक मत करो और तेरा यह दुःख सुननेवालों को भी दुःसह मैं मान रही हूं और जो तेरी विद्वेषिणी है, कभी-भी वह ऐसे दुःख का अनुभव न करें। ऐसे सर्व-ऋद्धिवाले घर में आकर भी तुम अंदर रहे दुःख रूपी अग्नि से जलायी जाती हो, उसे देखने के लिये मैं समर्थ नहीं हूं। इसलिए तुम धीर बनो और दुःख को छोड़ो। मैं आज से ही तेरे दुःख-विघात के लिये प्रयत्न करूंगी, इसे तुम सत्य जानो। जिससे शीघ्र ही मैं सर्व मनो-दुःख को दूर कर तुझे सुखिनी करूंगी, इसलिए अब तुम निश्चिंत बनो। जब तक तुझे दुःख है, तब तक मैं दुःख का ही अनुभव कर रही हूं, लेश-मात्र भी सुख प्राप्त करने के लिये योग्य नहीं हूं। इस प्रकार पुत्र-वधू को आश्वासित कर और तभी वह अपने पति के समीप आकर शोकातुर बनी स्थिति हुई।

अब म्लान-मुखवाली इसको देखकर धनदत्त श्रेष्ठी थोड़ा आशंक हुआ था। दुःख के अतिशय से स्तब्ध हुई वह भी कुछ-भी कहने में समर्थ नहीं हुई। उतने में धनदत्त ने कहा कि- हे प्रिये! आज तेरा यह मुख खेद-सहित कैसे दिखायी दे रहा है? क्या कोई उत्पात हुआ है? अथवा क्या अमंगल हुआ है? जिससे तू ऐसे म्लान-मुख को धारण कर रही हो। तुझे ऐसी देखकर मुझे बड़ा संशय उत्पन्न हो रहा है, इसलिए शीघ्र ही मन में रहे हुए दुःख का कारण कहो।

इस प्रकार पति का कहा सुनकर पुनः शोक से व्याकुलता को प्राप्त हुई अत्यंत रोती हुई धैर्य का आलंबन लेकर वह कहने लगी कि- हे प्रियतम! वधू सदा ही गृह में दुःख को भोग रही है, क्या आप उसे नहीं जानते? जो कि उसको जानते हुए आपको मैं जो उस विषय में कह रही हूं वह पिष्ट-पेषण ही है, परन्तु वह असह्य कष्ट ही कहने की प्रेरणा कर रहा है। जो कि मुझ समान बुद्धि से विकल और स्त्री-जातीय आप जैसे मतिमंत को कुछ भी उपदेश दे, इस प्रकार यह घटित नहीं होता है, तो भी अन्य गति नहीं मिलने से वह मेरे द्वारा कथनीय ही है, अन्यथा बड़ी हानि होने की संभावना है। हे स्वामी! तुम देखो, तुम देखो, इस चरम वय में हम दोनों का एक ही पुत्र उत्पन्न हुआ है और समृद्धि अत्यंत विद्यमान है परन्तु व्यवहार में अथवा विषय में लेश-मात्र भी पुत्र की कुशलता नहीं देखी जाती है और त्यागी के समान हमेशा वैराग्य शास्त्र ही भावित कर रहा है। यदि आप उसको ही योग्य मानते हो तो रंभा जैसी कन्या के साथ उसका विवाह क्यों किया है? और मेरे द्वारा वधू का ऐसा दुःख सहन करने के लिये समर्थ नहीं हुआ जाता है। व्यवहार में निपुण आपके द्वारा भी उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये, इसलिए मैं प्रार्थना कर रही हूं कि जैसे शीघ्र ही कयावन्ना सांसारिक व्यवहार में मन लगाये आप वैसा ही प्रयन्त करो। यहां आलस्य मत करो और जैसे तरूणी पत्नी ऊपर अनुरागी हो वैसे शीघ्र से करो। **(आगे और भी है...!)**

**** दूध में पानी मिलाया जाए तो घुल जाएगा, किंतु उसी से निकाला हुआ मक्खन ऊपर तैरता रहता है। आत्महीनताग्रस्त लोग मनुष्यों की भीड़ में वैसे ही बन जाते हैं, किंतु ज्ञानी पुरूष अपना व्यक्तित्व बुरों के बीच भी ऊंचा बनाए रखते हैं।***

अमृत पुत्र

मृत्यु-हमने आपने नहीं देखी। हम लोगों ने मृतकों के इक्के-दुक्के शव देखे हो सकते है। उनको श्मशान पहुंचाने में सम्मिलित रहे हों, यह भी संभव है, किंतु मृत्यु को ताण्डव करते देखा था उसने और उस महाताण्डव ने उसे लगभग पागल बना दिया था।

वह एक युवक ही था तब। युवक तो वह अब भी है, किंतु उस पर उसके तन से अधिक मन पर जो बीती है, उसके कारण उसके केश श्वेत हो गये हैं। अब वह एक प्रौढ़ व्यक्ति दिखलाई पड़ता है। यूरोप के द्वितीय महासमर का प्रारंभ से पूर्व वह विश्वविद्यालय में विज्ञान का छात्र था। युद्ध प्रारंभ हुआ और देश के कर्णधारों ने अनिवार्य सैनिक भर्ती का आदेश दिया। पुस्तकों से विदा लेकर उसे कंधे पर राइफल उठानी पड़ी। शीघ्र ही एक जहाज उसके जैसे ही अल्हड़ युवक को लेकर इंग्लैंड के बन्दरगाह से चला और उन सबको यूरोप की मुख्य भूमि पर उतार गया।

उत्तेजना प्राप्त करने का एक सहारा था-राष्ट्रीय गान। दिन-रात दौड़-धूप, राइफल, मशीनगन की तड़तड़ाहट, बारूद की दुर्गन्ध और ऊपर आकाश में उड़ने वाले वायुयानों की घरघराहट। इन्हीं सबमें जैसे-तैसे कुछ पेट में भी डालते रहना और रात्रि में कभी खाई में, कभी कैम्प में, कुछ समय नेत्र बन्द कर लेना। सैनिक के इस युद्ध कालीन जीवन को भी यदि जीवन मानना हो-किंतु वे सब इसके अभ्यस्त हो चले थे। उछलते-कूदते, हथियार साफ करते, बन्दूकें भरते या मार्च करते भी खुलकर हंसते, परस्पर हंसी-मजाक करते रहते। समय मिलने पर पत्र लिखते उनको जिन्हें उनके समाचार की स्वदेश में प्रतीक्षा रहती थी।

एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे शिविर में वह बदलता रहा। मोर्चे पर जाने को ही आया था, पहुंच गया। शत्रु कहां है, किधर है, कुछ पता नहीं। ऊँची-नीची झाड़ियों से भरी वनभूमि थी। गोले फटते थे, गोलियों की बौछार आती थी और इधर से भी तोपें, मशीनगनें तथा राइफ्लें लगातार आग उगल रही थी।

उसके एक साथी का बांया हाथ बम का एक विस्फोटक उड़ा ले गया। दूसरे समीप के सैनिक की कनपटी में गोली लगी वह ढेर हो गया। युद्धकाल में यह सब देखने का अवकाश नहीं होता। वे झाड़ियों की ओट लिये बढ़े जा रहे थे। कभी पेट के बल सरकते थे, कभी उठकर दौड़ पड़ते और कुछ दूर जाकर लेट जाते थे।

एक बार शत्रु को भागना पड़ा। कोई दिखा नहीं भागता किंतु जब सामने से गोले-गोली न आते हों। आगे बराबर बढ़ने को अवकाश मिले, शत्रु भाग ही रहा हो सकता है। शत्रु? जिन्हें कभी देखा नहीं, जिनसे कभी का कोई परिचय नहीं, जिनका हमने कुछ बिगाड़ा नहीं, वे अब घोर घृणा के पात्र शत्रु हो गए। कैसे हो गये? यह सोचना भी उसके लिये राष्ट्रद्रोह था।

सहसा शत्रु ने 'कुमक' झोंक दी। अपनी ओर के नायकों में कुछ मंत्रणा हुई। एक-दो ट्रक भरकर कुछ दूसरी प्रकार के सैनिक लाए गये। वे लोग दिन भर पता नहीं पूरे मैदान में क्या करते रहे। भूमि में पतली नालियां उन्होंने खोदी, कुछ तार बिछाए और भी कुछ करते रहे। किंतु उसे सब जानने-देखने की न आज्ञा थी, न सुविधा और न जिज्ञासा ही। उसे तो गरम राइफल भी एक ओर रखने की आज्ञा नहीं थी। गोलियों का निरन्तर कानों के पर्दे फाड़ता शब्द और बारूद की धुंआ।

रात्रि का अंधकार आया। खाईयों में घुटने-घुटने दल-दल में खड़ा रहना पड़ता था। मच्छरों ने दुर्गति कर रखी थी। एक बार निकल कर शत्रु पर टूट पड़ने का आदेश मिलता। वह प्रसन्न ही होता। जीवन की अपेक्षा मृत्यु अधिक वांछनीय लगने लगी थी उसे।

शत्रु संभवतः उसके लोगों का पता पा गया था। विपक्ष से आते गोले-गोलियों की बौछार बढ़ती गयी। शत्रु सैनिकों के शब्द आने लगे। संभवतः अगली खाई पर आक्रमण हो गया था। कुछ मिनट गए और शत्रु की एक टुकड़ी उसकी खाई के समीप आ गई। अंधाधुंध गोली चलाए जा रहा था वह।

'पानी! हैनरी, दो घूंट पानी।' एक क्षीण स्वर ने समीप से उसे पुकारा। उसने झुककर पानी की बोतल खोली और नीचे देखा। गोली लगने से उसका एक साथी खाई की कीचड़ में गिर पड़ा था और तड़प रहा था।

सहसा लगा कि पूरी पृथ्वी फट गयी। चीत्कार से दिशाएं गुंज उठी। खाई के बाहर से लोथड़ों की वर्षा उसके सिर पर हुई। पूरी वर्दी गरम चिपचिपे पदार्थ से गिली हो गई। जिसे वह पानी पिलाने झुका था, वह प्यास की सीमा के पार जा चुका था। खाई के दूसरे सैनिकों को उसे स्मरण नहीं। वह राइफल उठाए बाहर निकला और एक ओर दौड़ा।

अंधकार में लाशों की ठोकरें, रक्त का कीचड़, कटे-फ्टे शवों पर जब पैर पड़ता था.... लेकिन रात्रि से दारूण निकला दिन का प्रकाश। उस प्रकाश में उसने जो कुछ देखा-मांस का ढेर पड़ा था चारों ओर। जहां तक दृष्टि जाती थी, पृथ्वी पर रक्त जमा था और उसमें आतें, लोथें बिछी हुई थी। राइफलें, मशीनगनें जहां-तहां पड़ी

थी। कर्णभेदी क्रन्दन अब भी जहां-तहां से उठ रहा था।

वह पागल हो गया। जब तक उसके पास कारतूस रहे, वह उन क्रन्दन करते, छटपटाते, तड़पते लोगों को मृत्यु की निर्मम पीड़ा से शांति की निद्रा में सुलाता चला गया। पूरा मैदान पटा पड़ा था। अपने पराये का भेद कैसा, सबके शरीरों के चिथड़े थे वहां। लेकिन उसके कारतूस समाप्त हो गए थे। वह राइफल से ही कई की कपाल क्रिया कर देता किंतु ठोकर खाकर गिरा और मूर्छित हो गया।

यह लम्बी मूर्छा एक अस्पताल में टूटी। उसे युद्धभूमि से अस्पताल भेजा गया था और वहां से इंग्लैंड। अस्पताल वालों ने उसे पागल घोषित कर दिया था, सो उसे बन्दीगृह में रहना पड़ा। युद्धकाल में उस जैसे अर्धविक्षिप्त को देश में अटपटी बातें फैलाने के लिये स्वतंत्र नहीं छोड़ा जा सकता था। लेकिन महायुद्ध समाप्त होने के पश्चात उसे घर लौट जाने की स्वतंत्रता मिल गयी।

मैं मरना नहीं चाहता। वे सबको मार देंगे। मुझे बचाओ। मुझे मृत्यु से बचने का मार्ग बताओ। हैनरी का यही पागलपन है। उसे लगता है कि राष्ट्र के कर्णधार फिर युद्ध करेंगे और जो वीभत्स दृश्य उसने देखा है, वह नगरों में ही उपस्थित होगा। मृत्यु से वह अत्यन्त आतंकित हो गया है। अब अमरत्व उसे कौन दे दे।

मुझे मृत्यु से बचने का मार्ग बताओ। अनेक गिरजाघरों में वह जा चुका है। लार्ड विशप तक से रोकर पूछ चुका है। कोई उसकी बात नहीं सुनता। पागल की बात कौन सुने। सुनकर भी कोई क्या कर सकता है। मृत्यु से बचने का उपाय किसके पास धरा है।

मृत्यु से बचने का उपाय है। उस दिन उस भारतीय गैरिकधारी ने चौंका दिया सबको। वह साधु एक सभा में कुछ कहने खड़ा हुआ था। उसने जैसे ही संबोधन किया- अमर पुत्रों! पागल हैनरी दौड़ता मंच पर जा चढ़ा और उसने साधु के हाथ पकड़ लिए। कातर वाणी थी उसकी- मुझे मृत्यु से बचने का उपाय बताओ? तुम्हारे पास वह उपाय है? 'तुम्हें भारत चलना पड़ेगा।' साधु रामकृष्ण मिशन के थे। वे संभवतः उसे अपने गुरू स्वामी ब्रह्मानंद से मिलना चाहते थे।

'मैं कहीं चलूंगा। जो कहो, करूंगा।' हैनरी दृढ़ था और साधु के आदेश पर वह मंच से नीचे आकर चुपचाप बैठ गया, प्रवचन सुनने। प्रवचन समाप्ति पर हैनरी उस साधु के पीछे लग गया। अब वह इस साधु का पीछा छोड़ने को भला कैसे तैयार हो। निवास स्थान पर आकर साधु ने हैनरी से पूछा-तुम कौन हो?

'मैं हैनरी विल्सन' सीधा उत्तर था। लेकिन हैनरी विल्सन कौन? साधु समझाने के स्तर पर आ गए-तुम्हारी अंगुली मैं काट दूं तो कटी अंगुली हैनरी विल्सन रहेगी क्या?

वह केवल हैनरी विल्सन की अंगुली होगी। हैनरी विज्ञान का छात्र रह चुका था। उसे बहुत शीघ्र यह बात समझ में आ गयी कि शरीर हैनरी विल्सन नहीं है। वह तो हैनरी विल्सन का शरीर मात्र है। यह शरीर हैनरी विल्सन का नहीं है। साधु ने अब एक नयी बात उठायी। प्रतिभाशाली हैनरी चौंका, किंतु थोड़ी देर में उसने यह तथ्य भी समझ लिया। रोटी, चावल, मक्खन आदि से बना यह शरीर जो बचपन में कुछ था, अब कुछ है उसका कैसे हो सकता है। प्लेट में रखा मक्खन, मक्खन है और पेट में जाने पर वह हैनरी विल्सन? साधु ने पूछा- फिर तुम जो गंदगी शौचालय में पेट से निकाल आते हो, वह भी हैनरी विल्सन है या नहीं?

वाह! बड़ा मूर्ख निकला मैं! खुलकर हंसा हैनरी। वह अर्ध विक्षिप्त उठकर कूदने लगा। जो हैनरी नहीं है, जो हैनरी का नहीं है, उसके मरने-जीने की चिंता हैनरी को क्यों? साधु फिर मूल प्रश्न पर आ गए, वह तो मरेगा ही। उसे मृत्यु से बचाया नहीं जा सकता।

मरने दो उसे। हैनरी उसी प्रसन्नता में कह गया। लेकिन उसकी प्रसन्नता क्षणिक नहीं थी। सचमुच मृत्यु के भय से वह अपने को मुक्त पाने लगा था।

हैनरी विल्सन को मैंने मृत्यु से बचाने का वचन दिया है। साधु का स्वर स्थिर था- मैं अपने वचन पर दृढ़ हूं। आप हैनरी को ही मृत्यु से बचने का मार्ग बताएं। स्वस्थ स्वर था हैनरी का।

हैनरी की मरता नहीं! उसे कोई मार नहीं सकता। वह तो अमृत पुत्र है। साधु ने कहा। अमृत का पुत्र! हैनरी की समझ में बात नहीं आयी। इतनी सीधी सरल बात तो नहीं कि झटपट समझ ली जाय। हैनरी कौन? कुछ क्षण रूककर स्वयं हैनरी ने पूछा। वह अब गंभीर हो गया था। चिंतन करने लगा था। नहीं आज मुझे सोचने दीजिए! मैं फिर आऊंगा आपके समीप। साधु को उसने रोक दिया बोलने से। वह उठ खड़ा हुआ। विदा होते-होते उसने कहा- आप ठीक कहते हो मुझे भारत जाना पड़ेगा। अमरत्व का संदेश जिस भूमि से उठा, वहीं उसे प्राप्त किया जा सकता है।

हैनरी भारत आया, वह उस साधु से कदाचित मिला भी नहीं। हाँ, उत्तराखंड की ओर उसे एक बार साधारण भारतीय साधु के वेश में देखा गया था। सर्वथा प्रसन्न-उल्लसित, आखिर वह अमृत पुत्र जो था।

✲ जैसे नम्बरी ताला सही नम्बर से ही खुलता है वैसे ही ज्ञानियों के वचन भी तभी समझ में आते हैं जबकि हृदय शुद्ध हो।

क्या विश्वरत्न किसी से कम है ?

✱ डॉ. सुभाष जैन

समय व्यतीत होते देर नहीं लगती। पल से प्रहर, दिवस माह और कई वर्ष बीत जाते है। काल की इस यात्रा में ऐसा बहुत कम देखने सुनने में आता है कि कोई एक व्यक्ति उस उच्चता और भव्यता को प्राप्त कर सकता है जहां वह हजारों हजार लोगों की जीवन धारा को बदल कर रख देता है। साधनों का जीवनोल्लेख सभी जनों के लिये मन मस्तिष्क के लिये सुख का कारण होता है यह जब चर्चा वर्तमान के जैनाचार्यों में पू.गुरूदेव श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराजा की होती है तब नाम लब पर आते ही सिर श्रद्धा से झुक जाता है। आप जैसे हीरे चमकते व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं में से कौन सा अधिक चमकदार है कहना कठिन है। गुरूदेव का एक विशिष्ट पहलु यह है कि आपश्री के साधनाकाल की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि अगर कोई है तो वह है आपश्री सुशिष्य संतति परिवार जिसे पाकर कोई भी साधक गर्व गौरव का अनुभव कर सकता है।

पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरी जैसे गुरू पाकर सभी सुशिष्य परिवार गौरव और अभिमान करता है कि वे पूज्यश्री के सुशिष्य है मिलने वाले अन्य साधु-साध्वी भगवंतों को जब यह पता चलता है कि ये आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी के सुशिष्य है तो वे भी अहोभाव से प्रसन्नता अनुभव करते है। आपश्री के सभी आत्म साधक शिष्य भी इस गौरव से प्रसन्न है कि उन्होंने आप जैसे गुरूदेव से जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की है और जीवन में नये आयामों को प्राप्त किया है।

पूज्यश्री के ऐसे ही सुशिष्यों में से एक युवा जाग्रति के प्रणेता परम पूज्य आचार्य देवेश श्री विश्वरत्नसागरजी म.सा. है जिन्होंने अपना बालपन छोड़कर बाल्य अवस्था में ही गुरूदेव के सानिध्य में उनकी साधना यात्रा के सहयात्री बनकर गुरूदेव के साथ अपना जीवन भी सार्थक कर लिया है। मुझे यह लिखने में कोई संकोच या दुविधा नहीं है कि आज गुरूदेव अपने शिष्यों की आभा-साधना और प्रभावकता देखकर अतुलनीय आत्मीय आनंद की अनुभूति करते थे। यह शब्दों में अभिव्यक्त करने वाली बात नहीं है।

पूज्यश्री के प्रथम शिष्यवर जिन्हें गुरूदेवश्री ने अपना पद देकर बराबरी में बिठा लिया है वे है आचार्य देवेश श्री अपूर्वमंगलरत्नसागर सूरीजी महाराज वे गुरूदेव की अपूर्व विभूति है और गुरूदेव जैसे ही परम तपस्वी है। आपश्री की चर्चा बाद में अन्य लेख में करूंगा पर अभी मैं बात कर रहा हूं, ऐसे विरल व्यक्तित्व के धनी आचार्य देवेश श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.सा. पूज्य गुरूदेवश्री के द्वितीय शिष्य है जिन्होंने युवाओं में धर्म की नव चेतना को जाग्रत कर अपने को एक युवा क्रांतिकारी ऐसे संत के रूप में प्रस्तुत किया है जिसने युवाओं की जीवनधारा को बदल कर रख दिया है। ऐसे शिष्य पर कौन गुरू गर्व नहीं करेगा ? मैं यहां जिस घटना की चर्चा करना चाहता हूं उसके बारे में पूज्य आचार्य देवेश श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.सा.आज तक अनभिज्ञ है और न ही मैंने उन्हें बतलाया है यह लेख पढ़कर ही उन्हें यह बात ज्ञात होगी और उनका सीना गर्व से भर जायेगा कि मेरे गुरूदेव का मुझ पर कितना विश्वास है, कितना भरोसा है? शायद हम बाप होकर भी अपने बेटे पर इतना विश्वास व्यक्त नहीं कर सकते है जो गुरूदेव श्रीने अपने शिष्य पर व्यक्त किया है।

उन दिनों पूज्य गुरूदेवश्री उज्जैन प्रवास पर थे 31 दिसंबर 2009 को उज्जैन पहुंचे थे और 3 जनवरी 2010 को आपश्री कांच का मंदिर उज्जैन पहुंचे थे। पूज्यश्री का रात्री विश्राम यहीं था पूज्य आचार्य देवेश श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी म.सा.भी मांगल्या-सम्मेद शिखर की छःरि पालित यात्रा को आरंभ कर गुरूदेव से भेंट करने के लिये प्रातःकाल 13 कि.मी. का विहार कर सुबह आने वाले थे। पूज्य आचार्यश्री मंदिरजी में विराजमान थे मैं हमेशा यही प्रभुसेवा पूजा करता हूं, रात्री में चर्चा करते हुए मैंने पूज्य आचार्य गुरूदेव से कुछ चर्चा कांच के मंदिर के बारे में भी की और निवेदन किया कि साहेबजी इस मंदिरजी का भी जीर्णोद्धार करवा दीजिये सन् 1965 में मंदिरजी का निर्माण प्रतिष्ठा हुई थी उस समय की तकनीक और कुछ कमी से त्रुटियां है। अगर जीर्णोद्धार हो जायेगा तो मंदिरजी व्यवस्थित हो

जायेगा, यहां आने वाले भक्तों के साथ पूज्य साधु-साध्वीजी म.सा.के लिये छोटे उपाश्रय में ठहराने और गोचरी पानी की व्यवस्था करने में भी आसानी होगी। यह निवेदन मैंने पूज्यश्री को विनीत भाव से किया। पूज्यश्री को भी यह बात जंच रही थी ऐसा मुझे लगा। मैंने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा- साहेबजी ऐसी पार्टी है जो 50 लाख रूपये तक मंदिरजी के जीर्णोद्धार में खर्च कर सकती है उनकी कोई शर्त नहीं है, जैसा आप चाहेंगे वैसा करने को वे तैयार है। कोई दिक्कत नहीं है। पूज्यश्री ने मुझसे पूछा- कौन है? मैंने कहा- साहेबजी। नाम बाद में बतला दूंगा। इसके उपरांत खाराकुआ जैन मंदिरजी के जीर्णोद्धार की भी बात निकली तब मैंने कहा- साहेबजी यहां भी अनेक वास्तु दोष है और यहां के बारे में (एक जाना पहचाना नाम) बतलाया जो जीर्णोद्धार के लिये इच्छुक है तब पूज्यश्री ने जो उत्तर दिया वह उनके सुशिष्यों में व्यक्त विश्वास और उनकी कार्यक्षमता का स्पष्ट परिचय देता है। पूज्यश्री ने कहा- 'क्या विश्वरत्न किसी से कम है ?' यह है गुरू की अपने शिष्यों को पहचानने की क्षमता का परिचय। मैंने पूज्यश्री से कहा-साहेबजी उनका मैनेजमेंट और कार्य करने की स्टाईल ने तो शासन की ध्वजा को बहुत ऊंचाईयां प्रदान की है। चाहे अहमदाबाद हो इन्दौर हो या उज्जैन कहां नहीं पूज्य आचार्य देवेश श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी म.सा. ने अपने को सिद्ध किया है और फिर उसके साथ गुरू के प्रति जो ऊंच भाव है तथा हर कार्य को गुरू की नजर में रखकर करते है वहां उन्हें आदरणीय बना देता है।

गुरू आज्ञा का पालन निर्भीकता एवं निःशल्य होकर करते रहते है उन्हें यह ध्यान है कि गुरू आज्ञा का पालन करने से उन्नति होती है शिष्टता और वरिष्ठता प्राप्त करने का सीधा सरल और सुगम उपाय है यह। पूज्य पंन्यासजी के जीवन में अनुशासन की शालिनता है गुरू का अनुगमन करना, अनुशासन का पालन करना, पंचाचार का पालन करना, संघ और धर्म का संरक्षक करने के लिये जनसम्पर्क करना होता है और वे इस कार्य में निरंतर लगे रहते है और उसके परिणाम शासन प्रभावना बड़े-बड़े कार्यक्रमों के माध्यम से दिखते भी है। पूज्य पंन्यास म.सा. इस बात को अच्छी तरह से समझते है कि गुरुभक्ति से चारित्र की रक्षा होती है और गुरुभक्ति से कार्य आसान हो जाते हैं।

श्रमण संस्कृति को निरंतर वृद्धिगत कर रहे ऐसे शासन समर्पित पूज्य आचार्य देवेश श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी म.सा.को नवकार महामंत्र के तीसरे पद को प्रदान कर 36 गुण भंडारी बने है आप दीर्घायु और निरोगी बने, ऐसे संयम साधना और समता के आराधक को मेरा प्रणाम।

शासन सेवा को आप जो कार्य कर रहे है वह अद्भूत है संघ के इतने कामों को संभालना गरम दिमागवाले लोगों का काम नहीं है, शांत,सरल,सहज,संत ही ऐसे कार्य कर सकते है। पदार्थ से हटकर परमार्थ की यात्रा आप पूर्ण करें यही मंगल कामना।

***गुरूदेव को सूरज कहुं तो सूरज में आग है।
गुरूदेव को चन्दा कहूं तो चन्दा में दाग है।
गुरूदेव को सागर कहुं तो सागर में झाग है।
सच पूछो तो गुरूदेव में वैराग्य ही वैराग्य है।***

* * *

***माता तो तन जन्म देती है।
जिनवाणी माँ शिवपथ ही दिखा देती है।
पर बंधूओं गुरू की कृपा तो
मोक्ष जाने तक साथ देती है।***

* * *

***जो जल से भरा है, उसे सागर कहते है।
जो रत्नों से भरा है, उसे रत्नाकर कहते है।
जो तम को भगा दे, उसे दिवाकर कहते है।
जो गुणों से लबालब भरा है,
उसे नवरत्नसागर कहते है।***

* * *

***माता के उपकार चुका सकते है।
दाता के उपकार चुका सकते है।
पर करोड़ों जीवन में भी गुरुदेव के
उपकार को चुका नहीं सकते है।***

पाप की सजा भारी...!

गतांक से आगे....!

*** प.पू. आचार्यश्री अरुणविजयजी**

मान-अभिमान को पाप क्यों कहा? -

इतने विवेचन से तो आपके दिमाग में इसका उत्तर स्पष्ट हो ही जाना चाहिये। जो-जो दुःखदायी है-भावि में दुःख देने वाला है वह-वह पाप है। पापकर्म है। जिसके कारण जीव दुःखी होते है। वे पाप कर्म है। जिस तरह हिंसा-झूठ-चोरी, दुराचार व्याभिचारादि पाप प्रवृत्ति है, अशुभ पापकर्म है, परलोक में परभव में उस पापकर्म में फलस्वरूप दुःखी होते है, किये हुए पाप की सजा भोगते है उसी तरह मान भी कषाय है, आंतरिक भाव पाप है। इसके सेवन से भी जीव परलोक-परभव में दुःखी होते है। किये हुए अभिमान का फल विपरीत मिलता है। इसीलिये मान को भी पाप कहा गया है। यह अवश्यमेव वर्ज्य है। कभी भी किसी ने भी किसी भी विषय में अभिमान किया हो और फल अच्छा आया हो यह संभव ही नहीं है। चाहे वह अभिमान सामान्य मनुष्य ने किया हो या मैंने किया हो या तीर्थंकर के जीव ने पूर्व भवों में किया हो.... जिस किसी ने भी किया हो सबको फल अशुभ ही मिला है। सबकी दुर्दशा ही हुई है। कर्मसत्ता के घर में कोई छोटा-बड़ा.... नहीं है। चाहे मैं हूं या आप, या तीर्थंकर का जीव भी क्यों न हो, कर्मसत्ता के घर में सब सरीखे हैं, समान है। जैसा करोगे वैसा फल पाओगे सीधी बात है। इसीलिए 'कर्म (तणी) की गति न्यारी' है। कर्म की गति बड़ी गहन है, विचित्र है और पाप की सजा बड़ी भारी है। महावीर जैसे महावीर को कर्म सत्ता ने नहीं छोड़ा, श्रेणिक जैसे मगध के सम्राट भी तद्यपि तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन किया है फिर भी आज नरक में है। अनन्त भव चक्र के संसार में जब भी जिस किसी ने भी पाप कर्म किया है तब उसकी दशा खराब अवश्य हुई है। इसलिए कर्मसत्ता के घर में अन्याय भी नहीं है, देर भी नहीं है, अंधेर भी नहीं है। क्योंकि आपका कर्म आपके साथ है जैसा किया है, वैसा ही है। वही उदय में आएगा और आप दुःखी होंगे इसलिये ईश्वर या कोई फलदाता है ही नहीं। कर्म स्वयं अपने आप फलदाता है। अतः कर्म के फल को देने वाला दूसरा कोई फलदाता ईश्वरादि मानने की आवश्यकता ही नहीं है। फिर देर अंधेर या अन्याय का सवाल ही कहा खड़ा होता है। बांधे हुए कर्म अपने निश्चित समय पर उदय में आएगें.... और बांबे अनुसार फल मिलेगा तदनुसार जीव दुःखी होगा चाहे वह तीर्थंकर का जीव हो या हमारे जैसा सामान्य जीव हो सभी स्व-स्वकर्मानुवश फल पाते हैं।

8 प्रकार के मद (अभिमान)-

1- जाति 2- लाभ 3- कुल 4- ऐश्वर्य 5- बल 6- रूप 7- तप 8- श्रुत।

जाति-लाभ-कुलैश्वर्य-बल-रूप-तपः श्रुतैः।

इस तरह.... योगशास्त्र में उपरोक्त आठ प्रकार के मद स्थान बताये गये है। अभिमान को जातियां बताई गई है। अभिमानोत्पत्ति के मुख्य निमित्त कारण सहायक स्थान बताये गए हैं। प्रायः मुख्य 8 मदस्थान हैं। इन्हीं आठ स्थानों में, विषयों में प्रायः जीवों को अभिमान होता है। इन आठ से अतिरिक्त और भी अधिक मन स्थान होते तो जरूर गिनाते, जरूर बताते। ये आठ प्रकार बताने वाले अनन्तज्ञानी सर्वज्ञ महापुरूष थे। अतः सारा संसार देखकर बताया है। इसलिए इसमें कोई शंका को स्थान नहीं है। अपने को मिली हुई ऊंची जाति.... उच्च कुल, आदि पदार्थ अभिमान के कारण बनते हैं। उद्‌गम स्थान है। उत्पत्ति स्थान है।

दृष्टान्तों सहित आठ मदस्थान का स्वरूप और फल-

1- जाति मद- एक बात तो निश्चित है कि.... सभी जीव मात्र संसार में अच्छा-बुरा, सुखरूप या दुखरूप जो भी कुछ प्राप्त करते हैं वह सब अपने-अपने बांधे हुए शुभाशुभ पुण्य-पाप कर्म के अनुसार प्राप्त करते हैं। आठ कर्मों में गोत्र कर्म है। गोत्र कर्म के कारण ही जीवों को जाति-कुलादि प्राप्त होता है। नीच गोत्र कर्म और उच्च गोत्र कर्म ये गोत्र कर्म के दो मुख्य भेद है। नीच गोत्र कर्मानुसार जीवों को हल्की जाति-नीच-कुल प्राप्त होता है और उच्च गोत्र कर्मानुसार उच्च कुल, उच्च जाति प्राप्त होती है। वर्ण व्यवस्था बताते हुए वेदों ने ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य और शूद्र ये चार जातियां बताई गई है। ये ही चार कुल है। लोकपूज्य, लोकमान्य, लोकप्रसिद्ध सुंदर जाति उच्च जाति कहलाती है। ईश्वर स्वेच्छानुसार किसी को उच्च जाति में और किसी को नीच हल्की जाति में भेजता है ऐसी बात नहीं है। यह बिल्कुल गलत है। उच्च गोत्र कर्म यदि जीव ने बांधा है तो वह जीव उच्च जाति में उच्च कुल में उत्पन्न होगा। अन्यथा नीच गोत्र कर्म बांधने के कारणस्वरूप जीव नीच हल्की जाति, हल्के कुल में उत्पन्न होगा। अपने-अपने बांधे हुए उच्च-नीच गोत्रकर्म पर आधार है। स्पष्ट कहा है कि-**'आर्यदेश-सुजाति-कुलस्थान-सत्कारैश्व यद्युत्कर्ष सम्पादकत्व-मुच्चैर्गोत्रकर्मणो लक्षणम्'।** - अर्थात् आर्यदेश, अच्छी जाति,

अच्छा शुभ कुल, उच्च स्थान, उच्च पद-सत्ता मान-पान सत्कार तथा ऋद्धि-सिद्धि-संपत्ति-वैभव आदि ऐश्वर्य की प्राप्ति जीवों को ऊच्च गोत्र कर्मानुसार प्राप्त होते है और इससे ठीक विपरीत जीव ने यदि अशुभ पाप प्रवृत्ति से-जाति आदि का अभिमान करके नीचगोत्र कर्म उपार्जित किया होगा तो.... उसे जाति आदि हीन-नीच मिलेंगे! **''चाण्डाल मुष्टिकव्याधमत्स्य बन्धदास्यादि भाव-सम्पादकत्वं नीचैर्गोत्रस्य लक्षणम्''।**

चण्डाल कुल में उत्पन्न होना, मष्टिक, शिकारी-पारधि-पना, मच्छीमार, नोकर-चाकर-दास-गुलामपना इत्यादि नीचगोत्र कर्म के अनुसार प्राप्त होते हैं। अतः सभी जीवों को जाति कुलादि अपने-अपने उच्च नीच कर्मानुसार प्राप्त होते हैं। अतः किसी उच्च जाति कुल वाले को अपने से हल्की-नीच जाति कुलादि देखकर अभिमान कभी भी नहीं करना चाहिये। उसी तरह चण्डाल-शूद्र जाति या कुल में उत्पन्न जीवों को चाहिये कि वे अपने से उच्च जाति-कुलों में उत्पन्न जीवों के प्रति ईर्ष्याभाव या मत्सर वृत्ति या द्वेष कभी भी न रखें। नहीं तो दोनों ही पाप है। अभिमान और ईर्ष्या-द्वेष दोनों ही खराब है। अशुभ पाप है। उच्च जाति कुल वाला यदि अभिमान करेगा तो गिरकर दुःखी होगा और नीच-हल्की जाति-कुलवाला यदि ईर्ष्या-द्वेष करेगा तो वह भी दुःखी होगा। दोनों ही पाप कर्म है।

जन्म से चण्डाल और कर्म से चण्डाल-

संसार है। अनेक प्रकार के जीव संसार में है। कोई जन्म जात चण्डाल है। जो बिचारा नीच गोत्र कर्म को बांध कर आया है और जन्म ही नीच जाति या कुल में लिया है उसकी तो बात ही नहीं है परन्तु अन्य उच्च कुल उच्च जाति में जन्म लेने के बाद भी यदि न करके योग्य क्रोधादि कषाय करता है तो वह कर्म चण्डाल कहलाता है।

एक बार ऐसा प्रसंग बना कि काशी-बनारस में एक संन्यासीजी छुआछुत में बहुत ही ज्यादा मानते थे। रास्ते में भी यदि किसी शूद्र को दूर से आते देखते तो चिल्लाते थे.... अरे ऐ शूद्र! भाग वहीं से भाग जा। तेरे दर्शन से भी मुझे फिर गंगा स्नान करना पड़ेगा। लेकिन रास्ता तो किसी का घर नहीं है। चण्डाल सीधा सामने से आ रहा था। यद्यपि एक तरफ चल रहा था फिर भी महात्मा को बड़ा गुस्सा आया। दो-चार सुनाते ही रहे। मानसिक भाव से भी उन्हें शूद्र के प्रति ग्लानि दुर्गच्छा थी। भली-बूरी सुनाते ही रहे। लोग सुनकर इकट्ठे हो रहे थे कि इतने में चण्डाल शूद्र जो सामने आ रहा था वह दौड़ते हुए आकर संन्यासी को गले लग गया। सीने से मिलकर उनसे बाथ भीड़कर जोर जोर से चिल्लाने लगा अरे! मेरा भाई मिल गया, मेरा भाई मिल गया और तमाशा देखने रास्ते पर लोगों की भीड़ जम गई। संन्यासी आगबबूला होकर गालियां देते जा रहा था और चण्डाल ने कसकर उन्हें पकड़ा है और गले लगकर चिल्ला रहा है। मेरा भाई मिल गया, मेरा भाई मिल गया है, मुझे बड़ा आनन्द है। एक हसते हुए आनन्द से चिल्ला रहा है तो दूसरा गाली देते हुए चिल्ला रहा है अरे! भाग झूठा कहीं का, मैं कहां तेरा भाई लगता हूं। राहदारी लोगों ने छूड़वाया तब चण्डाल ने कहा सुनो.... मैं तो जन्म से चण्डाल हूं और ये अत्यन्त क्रोध करके, संन्यासी होते हुए भी गाली देकर के कर्म चण्डाल है। चण्ड का अर्थ है प्रचण्ड-भयंकर क्रोध ये भी चण्डाल और मैं भी चण्डाल इसलिए हम दोनों एक जाति के भाई हुए कि नहीं? कई समय बाद आज मैं भाई से मिला तो प्रेम उमड़ आया और मैं गले से लग गया। इस बात का तात्पर्य संन्यासी समझ गए कि मैं निरर्थक जाति अभिमान करता हूं। यह अच्छा नहीं है।

कुल और जाति का उच्च और नीच पना यह है तो उच्च और नीच गोत्र कर्म के आधीन है। हमने जैसा उपार्जित किया है तदनुसार ही मिलता है। अपने ही बांधे हुए नीच गोत्र कर्म के कारण जीव मात्तंग, ढेड़, भंगी-चमार, हरिजन आदि जाति, कुल में उत्पन्न होता है और वहां हीन कार्य उसे करना पड़ता है। माली, कोली, तेली, घांची, धोबी, मोची आदि जातियां नीचगोत्र कर्म कारण मिलती है। अरे जीव तिर्यंच गति में भी जाय तो वहां भी नीच जाति नीच कुल और उच्च जाति-उच्च कुल है। सूअर-शियाल आदि के जन्म लेकर विष्ठा खाना पड़ता है नीचगोत्र कर्म ऐसा है कि जो याचक, कृपण, दरिद्र, रंक आदि हल्के कुलों में जीव को फेंक देता है।

जबकि ऊच्च गोत्र कर्म यदि अच्छा उपार्जन किया है तो लोक प्रशस्य, लोक सन्माननीय, दातृकुल, राजकुल, क्षत्रीय जाति और उच्च कुल की प्राप्ति होती है। **(आगे और भी है....!)**

संसाररूपी इस जीवन-समर में, जो स्वयं को आनंदमय बनाए रखता है, दूसरों को भी हंसाता रहता है, वह ईश्वर का प्रकाश ही फैलाता है। यहां जो कुछ भी है, आनंदित होने तथा दूसरों को प्रसन्नता देने के लिए ही उपजाया गया है। जो कुछ भी बुरा व अशुभ है, वह मनुष्य को प्रखर बनाने के लिए मौजूद है। जो प्रतिकूलताओं से डरकर रो पड़ता है, कदम पीछे हटाने लगता है, उसकी आध्यात्मिकता पर कौन विश्वास करेगा। - नीति

नमस्कार महामंत्र

* सुधीर पटवा, एडवोकेट, कुकड़ेश्वर

सभी धर्मों में अपनी अपनी आराधना का कोई ना कोई प्रमुख मंत्र होता है, उसी तरह जैन धर्म में पंच परमेष्ठी को नमस्कार करने का नमस्कार मंत्र अथवा नवकार मंत्र है। इसे जैनी महामंत्र और सिद्ध मंत्र मानते हैं। सनातन धर्म में जिस तरह गायत्री मंत्र प्रमुख होकर उसकी असीम महिमा है, उसी तरह जैनियों में नमस्कार महामंत्र को सर्वोपरि माना गया है। इस मंत्र की आराधना करने पर कोई भी कार्य असंभव नहीं रह जाता है। चाहें वह सांसारिक कार्य हो अथवा आध्यात्मिक, यहां तक की मोक्ष की प्राप्ति भी इससे संभव है।

आखिर क्या है ऐसा इस मंत्र में जिससे सब कुछ संभव हो तो आइये देखते हैं-

णमों (नमों) अरिहंताणं - अरिहंतों को नमस्कार
णमों (नमों) सिद्धाणं - सिद्धों को नमस्कार
णमों (नमों) आयरिआणं - आचार्यों को नमस्कार
णमों (नमों) उवझायाणं - उपाध्यायों को नमस्कार
णमों (नमों)लोएसव्वसाहूणं- लोक के सभी साधुजनों को नमस्कार।
ऐसो पंच णमुक्कारो - ऐसे पांचों को नमस्कार
सव्व पाव प्पणा सणो - जो सभी पापों का नाश करने में समर्थ है।
मंगलाणंच सव्वेर्सि - सभी मंगलों को देने वाला हैं।
पढ्मं हवई मंगलं - यह प्रथम मंगल है।

इस प्रकार इस मंत्र में प्रथम पांच पदों में पंच परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है, और चूलिका के शेष चार पदों में उसके परिणामों का (फ्ल का) उल्लेख है। दुनिया में ऐसा कोई अन्य मंत्र नहीं है, जिससे नमस्कार महामंत्र जैसी उदारता और विशालता के दर्शन होते हो। हर धर्म के मंत्रों में उस धर्म के भगवान, गुरूजन या महापुरूषों की नामजद् प्रार्थना होती है, किंतु इस मंत्र में किसी भी धर्म विशेष के व्यक्ति विशेष का कहीं कोई उल्लेख नहीं है। यह मंत्र गुणानुपेक्षी मंत्र है, जिसमें अरिहंत वो चाहे किसी भी धर्म आराधना पद्दत्ति का हो सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और लोक मात्र के साधु को नमस्कार किया गया हैं, ना कि केवल जैनियों के उक्त व्यक्तियों को ही नमस्कार किया गया है, किन्तु ऐसे सभी के लिये निम्न पांच गुणों की धारणा आवश्यक हैं।

ये पांच गुण इस प्रकार है- अहिंसा, सत्य, अस्तेय (अचोर्य) ब्रम्हश्चर्य और अपरिग्रह। इन पांच वृतों का पालन कर जो अरिहंत सिद्ध आचार्य, उपाध्याय तथा साधु बनता है, इस प्रकार जैन धर्म गुणानुरागी धर्म है, जिसकी मान्यता उपरोक्त पंच व्रतों का पालन करने वाला ही आत्मा को महात्मा और परमात्मा बनाकर मोक्ष या मुक्ति का अधिकारी होता है। इसी कारण यह आराधना पद्धति निर्बध या मुक्त आराधना पद्धति हैं।

कुछ व्यक्तियों का मानना है कि यह मंत्र बहुत बड़ा है, छोटा होता तो स्मरण करने में, माला गिनने में आसान होता, किंतु इसके मर्म को समझना बहुत जरूरी है, इसी कारण इसमें पंच परमेष्ठियों को एक साथ नहीं अलग-अलग नमस्कार करने का विधान है।

हम चिंतन करें तो पाएंगे कि आदमी में अहम की भावना बहुत प्रबल होती है, इसलिये दुनिया में इतने झगड़े खड़े होते है। व्यक्ति का मन और उसमें बैठा मैं ही सारे झगड़ों की जड़ हैं और यही कर्म बंधन का और भव भ्रमण का मुख्य कारण है, इसके मूल में जो कषाय का भाव है, उसी का उच्छेद करने के लिये पंच परमेष्ठियों को नमस्कार किया जाता है।

नमस्कार महामंत्र में मनुष्य में जो पद् (प्रतिष्ठा), पैसा, बल, सुंदरता और ज्ञान (पाण्डित्य) का भारी अभिमान होता है और उसका मैं बहुत बड़ा हो जाता है, इसी बड़े मैं को घटाने के लिये बार-बार नमन् करने का (नमस्कार का) अभ्यास कराया जाता है। जब बार बार मंत्रोच्चार के साथ नमों नमों का उच्चारण नाभि से निस्त्रत होकर मस्तिष्क में स्थित आज्ञा चक्र से टकराता हैं, तब मनोरथ के उन्मत्त हाथी के मस्तक पर अंकुश जैसा कार्य करके मन में बैठे स्वेच्छाचारी मैं के तुरंग (घोड़े) को भी यह लगाम कसने का काम करता है और व्यक्ति का विवेक जाग्रत होकर उसे नम्र और विनय् वान बनाता है। जैसे जैसे नम्रता विनय और विवेक का जागरण होता है, वैसे वैसे व्यक्ति में संवेदनाएं जागृत होती है, तब व्यक्ति में जगत के सभी प्राणियों वस्तुओं और अन्यों के प्रति अपनत्व का भाव, प्रेम का भाव तथा मैत्री का भाव जन्म लेता है, तब मन में स्वीकार भाव, अनासक्त भाव, साक्षी भाव या प्रेक्षा भाव आ जाता है और मन कषाय से मुक्त होकर शने-शने उत्कृष्ट भावों में रमण करने लगता है, तब समता, का प्रादुर्भाव होता है, और जब समता का वट वृक्ष मन के आंगन में प्रगाढ़ रूप ले लेता है तो फ्रि वहां कलह, क्लेश विषाद और असहमति के सारे भाव तिरोहित हो जाते हैं, वहां केवल प्रेम करूणा और मैत्री का निर्झर बहने लगता हैं, जो परमानंद की गंगोत्री-जमनोत्री बनकर सुख और शांति का मलय पवन बहाती हैं, जो हमारे द्वारा जन्मों-जनम पंचेन्द्रियों के द्वारा संकलित सघन कर्मों के भारे को जलाकर निर्मूल कर व्यक्ति को भव भ्रमणा से मुक्ति दिलाती हैं। किसी को लग

सकता है कि नमस्कार मंत्र के जाप से आत्मा परमात्मा बन सकती है या मुक्ति पा सकती हैं, किंतु यह लौकिक जीवन दुःख युक्त या अभावों से भरा रहे तो फिर ऐसी मंत्र आराधना का क्या लाभ, क्योंकि परमात्मा या मोक्ष को किसने देखा हैं कि जबकि जीवन तो यथार्थ में हम जी रहे हैं। इसका जवाब है कि जिस प्रकार एक किसान पूरी तैयारी से अपने खेत में फसल बोता है तब फसल के साथ-साथ खरपतवार तो बिना प्रयास के ही अपने आप खेत में ऊग आते है उनके लिये अलग से कोई प्रयास नहीं करना पड़ते हैं। इसी प्रकार नमस्कार मंत्र की आराधना से आत्मिक लाभ के साथ-साथ भौतिक सुख-सुविधाओं का लाभ तो खरपतवार की तरह बिना प्रयासों की ही व्यक्ति को अपने आप मिल जाता है। है न एक पंथ दो काज वाली बात।

इस प्रकार पंच परमेष्ठी को नमस्कार कर उनका ध्यान और आराधना करने से हमारी पंचेन्द्रियों की वासनाओं, कामनाओं का शमन होता है, और तब व्यक्ति ऐसे अवर्णनीय परमानंद के मार्ग पर अग्रसर हो जाता हैं जो इस मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य होता हैं। तो आईये, क्षमा पर्व पर हम सब मिलकर अपने संपूर्ण वैर भावों को तिलांजली देकर सबके प्रति मैत्री भाव की स्थापना करके अपने मैं को मिटाकर बिन्दु को सिन्धु में मिलाकर आत्मा को परमात्मा का स्पर्श करवाकर जीवन को सफल करें।

इंदु-मुक्तक

✻ रामेश्वरप्रसाद गुप्त 'इंदु' बड़गांव-झांसी

ध्यान रखकर विकास नित करना।
मान देकर प्रयास सत् करना।।
कर्म करना, न धर्म से हटकर,
नीचता का निवास मत करना।।
न बोयें शूल उपवन खिल सकेगा।
तभी पथ फूल वाला मिल सकेगा।।
तुम्हारे साथ ही है ज्ञान दीपक,
जगाओ तो उजाला मिल सकेगा।।
बोल मीठे जुवान में रखना।
प्रेम अपने वयान में रखना।।
सत्य, सेवा, सदा चरण संयम,
ये सजावट मकान में रखना।
किसे बढ़ता जमाना देखता है।
कहां वह मुस्कुराना देखता है।।
बुरी आदत कपट, छल, द्वेषता से,
सदा जलना, जलाना देखता है।।

श्रेणिक राजा के जीवन की अनहोनी बातें....

✻ श्रीमती मनोरमा खाब्या, इन्दौर

✻ समकित प्राप्ति के पहले चित्रशाला के निर्माण के लिये अमरकुमार की बलि चढ़ाने वाले थे।

✻ समकित प्राप्ति से पहले गर्भवती हिरणी का शिकार करके उसकी अनुमोदना करके नरक का आयुष्य बांधा।

✻ फिर अनाथी मुनि के सत्संग से समकित प्राप्त किया।

✻ पुत्र कोणिक ने पिता श्रेणिक को कारागृह में रखा एवं रोज 100 कोड़े (हंटर) लगाता उसे समभाव से सहन किया।

✻ कोणिक को जब अपनी भूल का एहसास हुआ तब पुत्र को पितृ-हत्या के पाप से बचाने के लिये हिरामणि (अंगूठी) चूस कर आयुष्य पूर्ण किया।

✻ प्रभु महावीर के परम भक्त क्षायिक समकिती प्रभु जिस दिशा में विचरण कर रहे होते उस दिशा में सोने के 108 स्वस्तिक से प्रभु की गहूंली करते थे।

✻ अविरति का उदय होने से नवकारसी का पच्चक्खाण भी भूल से बोर खाकर तोड़ा।

✻ वनपालक ने जब प्रभु के पधारने की खबर दी तब वनपालक को करोड़ प्रमाण धन एवं स्वर्ण जीभ दान में दी।

✻ श्रेणिक राजा की चिता में से भी वीर-वीर की आवाज निकली।

✻ श्रेणिक महाराजा आगामी चौवीशी के तीसरे आरे के 89 पूरे होने के बाद शतद्वार नगर में समुचि राजा की भद्रारानी की कुक्षी से आषाढ़ सुदि-छट्ठ को पहली नरक से च्यव कर चैत्र सुदी-तेरस को जन्म लेंगे।

✻ आगामी चौवीशी में प्रथम तीर्थंकर पद्मनाथ स्वामी बनेंगे उनका निर्वाण दीवाली के दिन होगा। महावीर स्वामी और पद्मनाभ स्वामी के बीच में 84 हजार सात साल एवं पांच मास का अंतरकाल रहेगा।

सफलता का अमोघ मंत्र : समय प्रबंधन

संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जिसकी प्राप्ति मनुष्य के लिये असंभव हो। प्रयत्न एवं पुरूषार्थ से सभी कुछ पाया जा सकता है, लेकिन एक ऐसी भी चीज है जिसे एक बार गंवाने के बाद कभी नहीं पाया जा सकता और वह है समय। एक बार हाथ से निकला हुआ समय फिर कभी नहीं मिलता। कहावत है-'बीता हुआ समय और कहे हुए शब्द कभी वापस नहीं बुलाए जा सकते।' साधना द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार कई बार किया जा सकता है, लेकिन गुजरा हुआ समय पुनः नहीं मिलता। समय की मर्यादा में सभी बंधे हुए हैं और भगवान भी समय की मर्यादा का सम्मान करते हैं।

समय ही जीवन की परिभाषा है, क्योंकि समय से ही जीवन बनता है। समय का सदुपयोग करना जीवन का उपयोग करना है। समय का दुरूपयोग करना जीवन को नष्ट करना है। समय किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता। वह प्रतिक्षण, मिनट, घंटे, दिन, महिने, वर्षों के रूप में निरंतर अज्ञात दिशा को जाकर विलीन होता रहता है। समय की अजस्त्र धारा निरंतर प्रवाहित होती रहती है और फिर शून्य में विलीन हो जाती है। फ्रैंकलिन ने कहा है-'समय बरबाद मत करो, क्योंकि समय से ही जीवन बना है।' निस्संदेह वक्त और सागर की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करती। हमारा कर्त्तव्य है कि हम समय का पूरा-पूरा सदुपयोग करें।

शेक्सपीयर ने कहा है- 'मैंने समय को नष्ट किया है, अब समय मुझे नष्ट कर रहा है। सचमुच जो व्यक्ति अपना तनिक सा भी समय व्यर्थ नष्ट करते हैं उन्हें समय अनेकों सफ्लताओं से वंचित कर देता है। संसार में जितने भी महापुरूष हुए हैं, उनकी महानता का एक ही आधार स्तंभ है कि उन्होंने अपने समय का पूरा-पूरा उपयोग किया, एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाने दिया। जिस समय लोग मनोरंजन में मशगूल रहते है, व्यर्थ आलस्य-प्रमाद में पड़े रहते हैं, उस समय महान व्यक्ति महत्वपूर्ण कार्यों का सृजन करते रहते हैं। ऐसा एक भी महापुरूष नहीं, जिसने अपने समय को व्यर्थ नष्ट करते हैं। उन्हें समय अनेकों सफ्लताओं से वंचित कर देता है। संसार में जितने भी महापुरूष हुए हैं, उनकी महानता का एक ही आधार स्तंभ है कि उन्होंने अपने समय का पूरा-पूरा उपयोग किया, एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाने दिया। जिस समय लोग मनोरंजन में मशगूल रहते हैं, व्यर्थ आलस्य-प्रमाद में पड़े रहते हैं, उस समय महान व्यक्ति महत्वपूर्ण कार्यों का सृजन करते रहते हैं। ऐसा एक भी महापुरूष नहीं, जिसने अपने समय को व्यर्थ नष्ट किया हो और वह महान बन गया हो। समय बहुत बड़ा धन है, भौतिक धन से भी अधिक मूल्यवान। जो इसे भली प्रकार उपयोग में लाता है, वह सभी तरह के लाभ प्राप्त कर लेता है। छोटे-से जीवन में भी बहुत बड़ी सफलताएं प्राप्त कर लेता है। वह छोटी-सी उम्र में ही दूसरों से बहुत आगे बढ़ जाता है।

समय सतत अजस्त्र अनुदानों से भरा-पूरा रहता है। होश में जीने वाले सचेत व्यक्ति उसका सदुपयोग कर लेते हैं, इसलिए उन्हें बुद्धिमान कहा जाता है, परन्तु सामान्यतः हमें बेहोश रहते हैं और सब कुछ गंवाते रहते हैं। कुछ भी हाथ नहीं लगता है, बल्कि जो कुछ रहता है वह भी बिखर जाता है। इसके कारण में जाने पर, इसके रहस्य को खोजने पर पता चलता है कि अचेतनताजनित आलस्य ही इसका मुख्य जिम्मेदार हैं। आलस्य और वह भी बेहोशी भरा, समय को फूलझड़ी के समान जलाता रहता है। बेहोश मानसिकता हमें किसी भी चीज का मूल्य आँकने-परखने नहीं देती है और यदि प्रयास पूर्वक कुछ ख्याल आता भी है तो कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि उस पल तक अवसर हाथ से फिसल गया होता है।

अस्त-व्यस्त जीवनशैली और नकारात्मक आदतें भी बहुमूल्य अवसरों को होली के समान जलाती रहती है। ये साधनों को, जिनके द्वारा सफ्लता पाई जा सकती है, उन्हें या तो नष्ट कर देती हैं या उन्हें अत्यंत जटिल बना देती है। फ्लतः जो काम आसानी और सरलता से हो जाता, वही उलझकर रह जाता है और अंत में सब कुछ समाप्त हो जाता है। आज की व्यस्ततम और आधुनिक जीवनशैली की गहराई में झांकें, तो यही तथ्य नजर आता है। इस संदर्भ में विख्यात समय प्रबंधनकर्त्ता रॉबर्ट रोसेक का कहना है कि समय अपनी गति के अनुरूप चल रहा है। इसकी गति न तो अधिक है और न कम। 24 घंटे की इसकी अवधि भी निश्चित है। सभी के लिये यही समय है और इसी समय को साधन के रूप में प्रयुक्त करना होता है। रॉबर्ट के अनुसार-'आधुनिक तकनीकी को समयानुकूल, सहज-सरल बनाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही अपनी अस्त-व्यस्त जीवनशैली को सुव्यवस्थित तथा सोच को कार्य के अनुरूप ढालना चाहिये तभी समय का सार्थक सदुपयोग हो सकता है।'

समय का परिस्थिति के अनुरूप उचित एवं सार्थक ढंग से उपयोग समय-प्रबंधन कहलाता है। किसी भी कार्य में सफ्लता पाने का अमोघ मंत्र है-कार्यों की पूर्व योजना बनाने की आदत।

इससे कार्यकुशलता के साथ-साथ ठीक समय पर कार्य को निबटाने की दक्षता आती है। एक साथ कई चीजों को याद रखने या करने की आवश्यकता नहीं पड़ती और सब कुछ बहुत आसान हो जाता है। यदि आसान न भी होता हो तो आसान लगने लगता है। सामान्य तौर पर कार्य करते समय अनेक कार्य मस्तिष्क में घूमने लगते हैं, इन सभी में ऐसे कार्य का चुनाव करना चाहिये, जिसकी आवश्यकता सर्वोपरि हो। प्राथमिकता उसी कार्य को देनी चाहिये, जो हमारे वर्तमान समय की सबसे बड़ी मांग हो, इस प्रकार कार्यों का वरीयता क्रम करना चाहिये। तत्पश्चात समय-सारणी बनानी चाहिये कि इस कार्य को कितने समय में और कब तक पूरा करना है। हम प्रोडक्टिव ऑवर्स यानी मुख्य कार्यकाल की समय-सारणी भी बना सकते हैं। समय-सारणी के मुख्य घटक हैं-

✲ प्रातः उठने का समय।

✲ दैनंदित क्रियाकलापों का समय।

✲ स्कूल-कॉलेज या कार्यालय जाने का समय।

✲ बीच का अंतराल।

✲ कार्यालय आदि के बाद का समय।

✲ घरेलू सदस्यों के साथ।

✲ मनोरंजन काल।

✲ शयन काल।

समय-सारणी बनाने के पश्चात अपनी पूरी जिम्मेदारी समझकर कार्य का शुभारंभ करना चाहिये। इस प्रकार चरणबद्ध ढंग से नियत समय में किया गया कार्य अवश्य सफ्ल होता है। आधुनिक भाषा में इसे ही समय प्रबंधन कहा जाता है। समय प्रबंधन में कतिपय तथ्यों का ध्यान रखना चाहिये-

1- एक समय में सदा एक ही काम करो।

2- आवश्यक कार्यों को तुरन्त कर डालो, उन्हें दूसरे समय के लिये टालकर न रखो। जो लोग कार्यों को टालते जाते हैं, उनके बहुत से कार्य सदा बिना किये ही पड़े रह जाते हैं और जिससे कभी-कभी बहुत नुकसान हो जाता है।

3- जो काम स्वयं तुम्हारे करने का हो, उसे दूसरे पर कभी मत छोड़ो।

4- बहुत अधिक शीघ्रता कार्य को नष्ट कर देती है, इसलिए कार्य को अत्यधिक शीघ्रतापूर्वक न करो और साथ ही आरामतलबी से भी न करो।

5- समय की बचत के लिए तकनीकी वैज्ञानिक साधना-संसाधन प्रयुक्त किये जाने चाहिये।

6- किसी कार्य को आरंभ करने के उपरांत उसे पूरा करके ही विश्राम लो। यदि इस दौरान शारीरिक या मानसिक थकान महसूस होती है, तो आवश्यकतानुसार विश्राम किया जा सकता है।

काल का नियम ही है-अनवरत निरंतर बहना। इस सच्चाई को समझा जाए कि हम भी इस धारा में बह रहे हैं। अतः हम अपने समय-दिन, महिने, वर्षों का सदुपयोग करना सीख जाएँ। ऐसी कार्य-योजना बनाई जाए, जिसमें प्रत्येक वर्ष के साथ प्रत्येक दिन और हर पल के उद्देश्यपूर्ण उपयोग का सुअवसर हो। कोई भी पल एवं क्षण व्यर्थ न जाने पाए, क्योंकि जीवन का नन्हा क्षण भी बहुमूल्य एवं बेशकीमती होता है। ध्यान रहे, कार्य-योजना एकांगी न हो, बहुआयामी हो। इसमें हमारे चिंतन, चरित्र, व्यवहार से लेकर परिवार, समाज, कार्यालय सभी संपूर्ण रूप से समय के सामंजस्य के साथ प्रतिपादित-परिभाषित हों।

समय के सदुपयोग में ही जीवन की सार्थकता सिद्ध हो सकती है। समय के महत्व को पहचानकर ही जीवन में आने वाले उचित अवसरों का सदुपयोग किया जा सकता है। इसके लिए हमें प्रत्येक पल, प्रत्येक दिन को संपूर्ण एवं समग्र रूप से जीना सीखना चाहिए। समय का सदुपयोग करके ही जीवन जीने की कला सीखी जा सकती है और एक परिष्कृत आकर्षक व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है।

जिन्दगी और मौत की हकीकत

जिन्दा था तो मेरे पास कोई नहीं बैठा?
अब सब चारों तरफ बैठे हैं।
फटे कपड़े में जिन्दगी गुजार दी?
अब नई शॉल व कपड़े ओढ़ा रहे हैं।
पहले किसी ने मेरे आँसु नहीं पोंछे?
अब नकली आँसु बहा रहे हैं।
जब मुझे रूपयों की जरूरत थी किसी ने नहीं दिए?
अब अर्थी पर रूपये, पैसे लुटा रहे हैं।
अपाहिज था तो किसी ने कभी सहारा नहीं दिया?
अब कन्धों पर उठाकर ले जा रहे हैं।
जिन्दा था तो लूँखी रोटी खाई?
अब घी पूरे शरीर पर डाल रहे हैं।
जैसे-तैसे जिंदगी गुजार दी पर बच्चों
ने भोजन तक नहीं कराया?
अब पूरे समाज को भोजन करा रहे हैं।
अन्न खाया दिया अंग लगेगा?
दिया धन संग चलेगा
बाकी बचे धन में जंग लगेगा।

स्वप्न के झरोखे से परोक्ष की झाँकी

स्वप्न अदृश्य का झरोखा है। इस झरोखे से भविष्य की अनेक आवृत घटनाएं पहले ही प्रकट हो जाती हैं। स्वप्न भविष्य के गर्भ में पलने वाली तमाम बड़ी घटनाओं का साक्षी होता है। ऐसा क्यों होता है इस संदर्भ में मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक दोनों ही मौन हैं। वह अभी तक नहीं जान पाए हैं कि आखिर स्वप्न के माध्यम से कैसे भविष्य का दर्शन संभव एवं सुलभ हो पाता है। योग मनोविज्ञानी इसका जवाब देते हुए कहते हैं कि मनुष्य का मन जितना निर्बोझ, हलका एवं शांत होने लगता है, स्वप्न उतने ही साकार होने लगते हैं। स्वप्न भूत की दस्तक है तो भविष्य के लिए दिव्य संकेत भी। स्वप्न अपना अलग ही अनोखा संसार रचता है।

सपनों की दुनिया मायावी है। कहीं कुछ एहसास ख्वाब बनते हैं, तो कहीं सपनों के संकेत जीवन को ही बदल कर रख देते हैं। भारत के महान गणितज्ञ श्री निवास रामानुजन को स्वप्न के माध्यम से गणित के अनेक अनसुलझे सवाल सुलझाने का अवसर मिला था। एक बार वे पाई के सूत्र हल करते हुए उलझ गए। ज्ञात हो कि गणित में पाई वृत्त की परिधि आदि का क्षेत्रफल निकलने में सहायक होता है परन्तु रामानुजन को यह समझ में नहीं आ रहा था कि इस समीकरण को हल कैसे किया जाए। इस उधेड़बुन में उन्हें रात में नींद आ गई, तभी उन्हें स्वप्न में देवी नामक्कल के दर्शन हुए। इसके साथ ही उनके बहते रक्त का लाल रंग का परदा दिखा, फिर एक हाथ उभरा और उस हाथ ने उस परदे पर एक समीकरण को लिखना प्रारंभ किया। देखते ही देखते हाथ ने यह जवाब भी लिख दिया, जिसमें वे बुरी तरह से उलझे हुए थे। रामानुजन स्वप्न में भी उसे समझते जा रहे थे, वे तुरन्त उठे और उसे कागज पर उतार दिया। इस तरह उन्होंने स्वप्न के द्वारा गणित को एक नई प्रमेय प्रदान की।

पापलुर हिस्ट्री ऑफअमेरिकन इन्वेशन (भाग-2) में सिलाई मशीन की खोज इलियास हॉव ने 1845 में स्वप्न के माध्यम से की थी। उन्होंने एक मशीन की खोज तो कर ली थी जिसमें एक सुई होती है परन्तु यह कपड़े की सिलाई कैसे करेगी, इसका पता नहीं चल पा रहा था। एक रात इलियास ने स्वप्न देखा कि एक समूह के द्वारा उसे कैद कर लिया गया है और वे भाले लेकर उसके चारों ओर नृत्य कर रहे हैं। सभी के हाथों में जो भाले थे, उनके शीर्ष में छेद था। इलियास प्रातः जब जगे तो उन्हें अपनी समस्या का समाधान मिल चुका था। उन्होंने मशीन की सुई के ऊपरी भाग में छेद कर दिया और उसमें धागा लगाकर सिलाई मशीन का आविष्कार किया।

ओटो लोवोई (1873-1961) एक जर्मन वैज्ञानिक थे। उन्हें मेडिसिन में तंत्रिका आवेगों के रासायनिक संचरण से संबंधित खोज पर 1936 में बहुप्रतिष्ठित नोबल पुरस्कार मिला था। उन्होंने अपना अभिमत दिया था कि तंत्रिका तंत्र में विद्युत आवेग के स्थान पर रासायानिक आवेग (केमिकल ट्रांसमिशन) का संचरण होता है परन्तु यह कैसे होता है, इसकी व्याख्या वे नहीं कर पा रहे थे। बहुत कोशिश की, लेकिन कुछ सफल कार्य वे नहीं कर सके। निराश होकर मैंने इसे छोड़ ही दिया, लेकिन सत्रह साल बाद मुझे सपने में इसका समाधान दिखा और फिर सपने में बताये गये तरीके से न केवल मैंने इसका सफल प्रयोग किया, बल्कि चिकित्सा जगत में भी इससे क्रांति आई। इस प्रयोग प्रयोग के परिणाम स्वरूप 1936 में उन्हें नोबल पुरस्कार मिला था जिसका पूरा श्रेय उनके स्वप्न को जाता है।

स्वप्न एक रहस्यावृत्त चीज है, जिसे अभी तक पूरी तरह से अनावृत्त नहीं किया जा सका है। इसका संबंध किसी पारलौकिक दुनिया से भी होता है। अमेरिका में रहने वाली मिस डोरोथी को एक ही सपना बार-बार दिखाई देता था। वह एक ही सपने को कई बार देखती थी परन्तु उन्हें इस बारे में कुछ समझ में नहीं आया। वह अपने सपने में स्वयं को गेरूआ कपड़ों में देखती थी और उस कपड़े को पहनकर वह हिमालय की बरफीली चोटियों पर भ्रमण कर रही हुई देखती थी। वह एक संन्यासी के साथ स्वयं को देखती थी, जिसकी असंख्य नर-नारियां जय-जयकार कर रहे होते थे।

डोरोथी के पिता अतिशय धनाढ्य व्यक्ति थे। इस कारण डोरोथी का जीवन विलासितापूर्ण था। सपनों का यह तथ्य उसकी कल्पना से परे था, क्योंकि उसे घटने के लिए उसे भारत में होना पड़ेगा और इसका संबंध भारत से दूर-दूर तक नहीं था, परन्तु 1983 में ऐसी परिस्थिति बनी कि वह भारत आई और हिमाचल प्रदेश में भ्रमण करने लगी। हिमाचल प्रदेश में उसे सपने में होने वाला सारा परिदृश्य यथावत चरितार्थ हुआ। उसे कभी लगा नहीं कि वह हिमाचल प्रदेश की बरफानी चोटियों में पहली बार घूम रही है। इस सपने ने उसकी जिंदगी को एक नया मोड़ दिया। वर्तमान में वह समाज सेवा के क्षेत्र में योगदान दे रही है। उन्हें दीन-दुःखियों की सेवा करने के बदले मैग्सेसे पुरूस्कार भी मिल चुका है। 1988 में नोबल सम्मान के लिये भी उनका नाम प्रस्तावित हुआ।

प्रसिद्ध संगीतकार पॉल मैक कार्टनी का एक गीत 'यस्टरडे'

इतना लोकविख्यात हुआ कि 1965 में उसे गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड में स्थान मिला था। इस संदर्भ में पॉल का कहना है कि 1965 में वे अपने परिवार के साथ लंदन के विम्पोल स्ट्रीट रहते थे। रात में सपना देखा कि मैंने एक बेहद खूबसूरत धुन को कंपोज किया। यह कंपोज कुछ अजीबोंगरीब ढंग से था, जिसे तर्कसंगत नहीं कहा जा सकता था। फिर क्या था प्रातःकाल उठते ही मैंने पियानो पर उस धुन को छेड़ना शुरू कर दिया और संगीत का जादूगर बन गया, परन्तु यह जादू मुझे स्वप्न से प्राप्त हुआ था।

स्वप्न कविताओं, कलाओं एवं आविष्कारों के लिए पथ-प्रदर्शक का काम करता है। अधिकतर कवि-साहित्यकारों ने स्वप्न के माध्यम से अपनी कृतियों की रचना की थी, परन्तु दांते की माँ ने एक विचित्र स्वप्न देखा था। कवि दांते विश्व के महानतम कवियों में यूरोपीय पुनर्जागरण काल में अप्रतिम हैं। उनका महाकाव्य 'डिवाईन कामेडी' संसार के उत्कृष्टतम् काव्यों में से एक है। उनके जन्म के पूर्व उनकी माँ ने एक अद्भूत स्वप्न देखा था। दांते के जीवनीकार बोकासियों के अनुसार-जब दांते माँ के गर्भ में थे, उन्होंने स्वयं को एक निर्मल जल के सोते के किनारे, एक ऊँचे लारेल दरख्त के नीचे, जिससे बेरियां टपक रही थी, एक बच्चे को जन्म देते देखा। बच्चे ने बोरियां खाकर सोते का पानी पिया और बोरियां तोड़ने के लिए उछाला, जमीन पर गिरा और पहले एक जवान गड़रिए और फिर एक सुंदर मोर में बदल गया।

ऊँचा लारेल वृक्ष जिसके नीचे माँ ने बच्चे को जन्म दिया इसका संकेत है कि संसार में एक महाकवि का अवतरण होने को है। लारेल फोगस देवता का वृक्ष है, जिसकी पत्तियों के मुकुट से कवियों को सम्मानित किया जाता है। इसके दो प्रकार के संकेत हैं। बच्चे ने लारेल की बेरियां खाई, इसे शिशु पर पड़ने वाला ईश्वरीय प्रभाव समझा जा सकता है। लारेल के फल, उन किताबों और विचारों के रूपक हैं, जिन्हें दांते आजीवन आत्मसात करते रहे। सोते का निर्मल जल, जिसे बच्चा पीता है, नैतिक और प्राकृतिक दर्शन है। जिस प्रकार पानी बिना भोजन नहीं पचता, उसी तरह दर्शन के बिना ज्ञान को नहीं समझा जा सकता। अतः कहा जा सकता है कि दांते ने सोते के निर्मल जल की मदद से अपने अंदर कविताओं को आत्मसात् किया। सद्यःजात शिशु का सहसा युवा गड़रिए में बदलना, उसकी महान प्रतिभा का प्रतीक है। गड़रिए का एक सुंदर मोर में परिवर्तित होना, दांते के परवर्ती काल की कृतियों के संकेत के रूप में ले सकते हैं। इनमें से एक विख्यात कृति 'डिवाइन कामेडी' भी है। इसकी संरचना एक आकर्षक एवं मनोहारी मोर की तरह है। इस प्रकार दांते की माँ ने स्वप्न में दांते के संपूर्ण जीवन को ही सपने में उतार लिया था।

स्वप्न एक पहेली है और इसे सुलझा पाना आसान नहीं है परन्तु स्वप्न विज्ञान के विशेषज्ञों का कहना है कि हमारी इच्छा, आकांक्षा एवं महत्वाकांक्षाएं ही प्रकारांतर में स्वप्न बनकर उभरती है। यदि इनको कम करके विधेयात्मक दिशा की ओर मोड़ दिया जाए तो स्वप्न का स्वरूप भी परिवर्तित होने लगता है। चूंकि इच्छाओं एवं आकांक्षाओं का स्रोत हमारा मन होता है, इसलिए यदि मन को स्वच्छ, साफ एवं निर्भार कर दिया जाए तो स्वप्न हमारे भविष्य की घटनाओं को दिखा-बता पाने में सक्षम-समर्थ हो जाते हैं। पवित्र एवं पावन मनः स्थिति में देखा गया स्वप्न भूत, भविष्य एवं वर्तमान के कालक्रम में घटित होनेवाली या घट चुकी घटनाओं को साकार करने लगता है। इसलिए कहा जाता है कि चेतनात्मक स्तर में जितना विकास होता है, स्वप्न उतना ही सार्थक होने लगता है।

स्वप्न एक माध्यम है मन का। प्रतिभासंपन्न वैज्ञानिक कलाकार, चित्रकार, संगीतकार आदि जब अपने आविष्कार, कृतियों की खोज एवं रचना में कहीं रूकने, अटकने लगते हैं तो स्वप्न के माध्यम से उसका समाधान भी मिल जाता है। हालांकि यह कोई नियम या सिद्धांत नहीं है कि ऐसा होगा ही, परन्तु ऐसा हो भी सकता है और हो भी चुका है, जिसके बारे में आंकड़े बताते हैं। सपनों का सिद्धांत कहता है कि हमारा दिमाग बिलकुल कम्प्यूटर की तरह है। जिस तरह कम्प्यूटर में वायरस स्कैनिंग होती है, उसी तरह नींद में आने के बाद मस्तिष्क के कचरे की सफाई भी शुरू हो जाती है, इसे ऑपरेशन क्लीनअप की तरह देख सकते हैं। इसी के तहत हम स्वप्न देखते है। इस स्वप्न से संबंधित एक और भी रोचक बात है कि क्या किसी माध्यम से दुःस्वप्न को बंद किया जा सकता है और दुःस्वप्न के भोग को काटा जा सकता है? इसके संदर्भ में कहा जा सकता है? इसके संदर्भ में कहा जा सकता है कि हाँ, ऐसा हो सकता है और यह भी सच है कुछ ऐसे मांत्रिक प्रयोग हैं, जिनका प्रयोग करने से स्वप्न के माध्यम से भविष्य में घटने वाली घटनाओं का पूर्वाभास किया जा सकता है। इस सबके लिए हमारा मन, भाव की शुद्धि, मन में सकारात्मक सोच के होने की आवश्यकता है, जिसके द्वारा स्वप्नरूपी झरोखे से अनेक चीजों का दिग्दर्शन किया जा सकता है।

**** आग से तापना ठीक है मगर उसमें हाथ नहीं डालना चाहिये इसी तरह संसार में तुम अपना फर्ज समझ सब कुछ करो परन्तु उसमें रूची मत रखो।***

आ रहा है निश्चित ही स्वर्णिम युग

इक्कीसवीं सदी महान परिवर्तनों की धुरी है। इस महान परिवर्तन का सबसे बड़ा पक्ष यह है कि एक ओर जहां सृजनात्मक शक्तियाँ जोर-जोर से उज्जवल भविष्य के सरंजाम खड़ी कर रही होगी, वहां दूसरी ओर ध्वंसात्मक शक्तियां मरते-मरते भी इतना कुछ कर गुजरेंगी जिन्हें आने वाली पीढ़ियाँ सैकड़ों वर्षों तक याद रखेगी। यह एक तथ्य भी है और वास्तविकता भी, जिसे एक चेतावनी के रूप में लिया और तदनुरूप अपने चिंतन, चेतन एवं क्रिया-कलापों में परिवर्तन करके उज्जवल भविष्य की सुनिश्चित संभावना को साकार करने में सहायक भी बना जा सकता है।

अगला समय संकटों से भरापूरा है, इस बात को विभिन्न मूर्धन्यों ने अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार विभिन्न प्रकार के जोरदार शब्दों में कहा है। पाश्चात्य देशों में जिन भविष्य वक्ताओं की भविष्य-वाणियाँ निन्यानवें प्रतिशत सही निकलती रही है, उनमें जीन डिक्सन, रूथमैटेगोमेरी आदि के साथ डॉ. एलेक्स टेनस का नाम भी जोड़ा जा सकता है। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'बियोन्ड कोइन्सिडेन्स' में उन्होंने लिखा है कि पूर्वानुमान और भविष्य कथन तो मैंने हजार बार सही किये हैं लेकिन भविष्य वाणी एक ही की है। भविष्यवाणी की विशेषता बताते हुए लिखते हैं कि पूर्वकथन व्यक्ति विशेष या कुछ सौ व्यक्तियों के बारे में हुआ करता है, जबकि भविष्यवाणी का संबंध समूचे राष्ट्रों से, महाद्वीपों से, समस्त मानव जाति या समग्र धरती से होता है। मेरी यह भविष्यवाणी समूचे मानव जीवन से संबंधित है।

सन् 1967 के अक्टूबर माह में जब वे वाशिंगटन के कैथोलिक विश्वविद्यालय में थे, तब एक दिन आराम कुर्सी पर बैठे अपने साथियों से बातचीत कर रहे थे। अचानक उनकी आँखें किसी दुरवर्ती दृश्य को देखते हुए स्थिर हो गयी और बरबश यह शब्द मुंह से निकल पड़े- 'मानव जाति, आज जो पथभ्रष्ट हो गयी है, उसे चेतावनी देने के लिये अगले दिनों एक ऐसी घटना घटेगी जिसे समुचा विश्व दिखेगा।' इस घटना ने डॉ. टेनस को अन्दर से झकझोर कर रख दिया है। वे यह सोचने लगे कि क्या यह संकेत वास्तविक है या केवल मन की कल्पना मात्र। सन् 1972 में वे जब पेरिस के चेपल ऑफ एपिरियन्स चर्च में गये तब उन्हें उक्त भविष्यवाणी का समाधान मिल गया। उन्हें अन्तर्बोध हुआ कि सन् 2000 से पूर्व के कुछ वर्ष समूची मानव जाति के लिए जीवन-मरण के दिन है। इन दिनों मनुष्य जाति को सर्वनाशी विभीषिकाओं का सामना करना पड़ेगा, इतने पर भी भौतिक घटनाओं की अपेक्षा विश्व की मानव जाति और धर्मतंत्र के लिये यह एक भव्य मोड़ का समय होगा। विश्व के विभिन्न धर्मों-संस्कृतियों के मिलन की दिशा में यह एक अनूठा कदम होगा। इसके लिये जो कुछ करना आवश्यक है, वह मार्ग भी सुझाई देगा और विचारशील लोगों द्वारा पराक्रम पूर्वक किया भी जायेगा। यह समय अब निकट है। जाति, लिंग, वर्ण, धन, भाषायें, धार्मिक मान्यताओं आदि के कारण बरती जाने वाली विषमता का अन्त समय अब निकट आ गया है। शस्त्र बल और धन बल की अपेक्षा इस नये युग में बुद्धि बल एवं संगठन का प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव होगा।

अमेरिका की हरवर्ड यूनिवर्सिटी के सुप्रसिद्ध खगोल विज्ञानी ऐरिक जे. चैसन ने इस नये युग को 'ए होल न्यू ऐरा' के नाम से संबोधित किया है। अपनी पुस्तक 'कौस्मिक डॉन' में उन्होंने लिखा है कि ब्रह्माण्डीय योजना के अंतर्गत बीसवीं शताब्दी के अंत तक विशिष्ट प्रकार के अंतरिक्षीय परिवर्तन होंगे। सूक्ष्म खगोल भौतिकी एवं जैव रासायनिक प्रक्रिया को देखकर यही कहा जा सकता है कि विश्व-ब्रह्माण्ड में एक नये प्रकार का परिवर्तन होगा जिसके अनुरूप मनुष्य को अपनी गतिविधियों का निर्धारण करना होगा। पदार्थ सत्ता के स्थान पर चेतन सत्ता की महत्ता को सर्वोपरि मानना होगा। चैसन ने इस नयी सभ्यता के शुभारंभ को 'टेक्नोलॉजीकली इन्टेलीजेन्ट लाइफ' नाम दिया है। उनके अनुसार इस नयी सभ्यता का आरंभ अपनी इसी पृथ्वी पर होगा जो अन्य ग्रह गोलकों की अपेक्षा कहीं अधिक व्यवस्थित एवं सुन्दर है। इस युग को उन्होंने 'लाइफ ऐरा' कहा है जबकि आज के युग को 'मैटर ऐरा' की संज्ञा दी है। ब्रह्माण्डीय परिवर्तन का वह चक्र बिलकुल समीप आ चुका है जिसमें पदार्थ की अपेक्षा चेतन तत्व को ही जीवन का मूल भूत आधार मानकर मनुष्य अपनी जीवनचर्या का निर्धारण करेगा। ब्रह्माण्ड की इस विशिष्ट परिवर्तन प्रक्रिया को उन्होंने 'कोस्मिक रिइनकार्नेशन' के नाम से संबोधित किया है। इक्कीसवीं सदी का शुभारंभ यहीं से होने वाला है। ऐसी स्थिति में लोगों में नयी सूझबूझ और जागृति आयेगी और परस्पर स्नेह सहयोग और सद्भाव के साथ जीवन जी सकेंगे। 'दि वन्डरफूल टुमारो' नामक अपनी कृति में हरबर्ट डब्ल्यू ओमर्स स्ट्रांग ने भी इसी तरह बाइबिल के ईसाम (2:10-12-17) का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि 'तब लोगों में घृणा, ईर्ष्या और विद्वेष की वृत्तियां समाप्त होकर स्नेह-सद्भाव जागेगा। इक्कीसवीं शताब्दी में धरती पर जिस स्वर्ग की कल्पना की गयी है, वह मनुष्य में दैवीय गुणों के विकास से ही संभव हो सकेगा।

अमेरिका की श्रीमती जीन डिक्सन की गणना विश्व के ख्यातिलब्ध भविष्य वेत्ताओं में प्रमुख रूप से की जाती है। उनके द्वारा महत्वपूर्ण घटनाओं के भविष्य कथन की सार्थकता को देखते हुए सन् 1970 में अमेरिका तथा विश्व के 300 से अधिक दैनिक समाचार पत्रों ने उनकी भविष्यवाणियों को प्रकाशित किया था। अमेरिका की ही सुप्रसिद्ध भविष्यवक्ता रूथ मोंटगोमेरी ने अपनी पुस्तक 'ए गिफ्ट ऑफ प्रोफेसी' में श्रीमती जीन डिक्सन की कई भविष्यवाणियों का उल्लेख किया है जो सच्चाई की कसौटी पर खरी सिद्ध हुई है। चीन में साम्यवाद की स्थापना, अफ्रीकी समस्या, भारत का विभाजन और गांधीजी की हत्या के संबंध में उन्होंने जो पूर्व कथन किये थे, समयानुसार लोगों को ठीक वैसा ही देखने को मिला। अपनी एक अन्य कृति 'द कॉल टू ग्लोरी' में उन्होंने बताया है कि निकट भविष्य में एक ऐसा समय भी आयेगा जिसमें संसार का हर प्राणी अपने को मुक्त मानेगा। संसार के इस स्वरूप को उन्होंने 'यूनीफाइड वर्ल्ड' के नाम से पुकारा है और कहा है कि शीघ्र ही धार्मिक एकता-यूनिटी आफ रिलीजन का युग निश्चित ही आयेगा।

रूथ मौंटगोमेरी को अतीन्द्रिय क्षमता-सम्पन्न महिला माना जाता है। उनका कहना है कि भविष्य के अंदर झांकने और उसके स्वरूप को समझ सकने की क्षमता उन्हें आशरीरी दिव्य आत्माओं से प्राप्त होती है। इस अलौकिक चेतना को उन्होंने 'वाकइन्स' के नाम से संबोधित किया है। प्रागैतिहासिक ही नहीं, वरन् ऐतिहासिक दिव्य आत्माएं भी उक्त प्रयोजन की आपूर्ति में सहयोगी होती हैं। सन् 1981 में मिश्र के राष्ट्राध्यक्ष अनवर सादात की हत्या, अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन के शासनकाल में 'वाटरगेट काण्ड' ईरान के बादशाह के अपदस्थ होने की उनकी भविष्यवाणियां अक्षरशः सत्य निकली थी। मौटगोमेरी ने दिव्य जीवन एवं इक्कीसवी सदी-उज्जवल भविष्य के संबंध में कई पुस्तकें लिखी हैं जिनमें से प्रमुख हैं 1- हियर एण्ड हियर आफ्टर 2- ए सर्च फार द ट्रथ 3- स्ट्रेन्जर्स एमांग अस, 4- द वर्ल्ड बिफोर 5- द वर्ल्ड बियोन्ड, 6- थ्रैस होल्ड टू टूमारो आदि।

अपनी कृति 'थ्रैस होल्ड टू टूमारो' के अंतिम अध्याय में विस्तारपूर्वक उज्जवल भविष्य के सम्बन्ध में उन्होंने प्रकाश डाला है। इस नये युग को उन्होंने 'ऐक्वेरियन एज' के नाम से संबोधित किया है। उनके अनुसार बीसवी सदी के अंतिम कुछ वर्षों में एक ओर जहां विध्वंसकारी गतिविधियां अपनी चरम सीमा पर होंगी, वहीं दूसरी ओर सृजनात्मक शक्तियां भी अपनी पूरी शक्ति लगाकर न केवल उन पर काबू पा लेंगी, वरन नयी सृष्टि की रचना में भी समर्थ होंगी। इन्हीं दिनों भौतिकवाद की प्रधानता वाली मान्यता भी अपनी अंतिम सांसें गिन रही होंगी और इक्कीसवीं सदी आते-आते लोग आदर्शवादी एवं अध्यात्मवादी विचारधारा के अनुरूप अपने क्रियाकलापों का निर्धारण करने लगेंगे। यद्यपि बीसवीं सदी के अंतिम दिनों तक एक और बर्बर विश्व युद्ध के छिड़ने की संभावना है, पर संसार में कुछ प्राणवान लोगों के प्रयत्न और पुरूषार्थ के फलस्वरूप उसे विफल कर दिया जायेगा। इस सत्यप्रयत्न को उन्होंने 'हरक्यूलियन ऐफर्ट्स' की संज्ञा दी है। नये युग का सूत्रपात जो इसी सदी में आरंभ हो चुका है, अब पल्लवित पुष्पित होता नजर आयेगा। ऐसी स्थिति को 'गॉड्स किंगड्म' यानी 'धरती पर स्वर्ग' कहा जायेगा।

इक्कीसवीं शताब्दी में ब्रह्माण्ड में 'क्रियोटिव फोर्स' अर्थात् सृजनात्मक शक्तियों की सक्रियता बढ़ जायेगी जिससे समस्त मानव जाति के हित साधन का प्रयोजन पूरा होता हुआ दृष्टिगोचर होगा। उनके अनुसार इस तरह की अलौकिक-शक्ति-सामर्थ्य का स्रोत सामूहिक रूप से अपनाई जा रही ध्यान-साधना ही होगी। हर व्यक्ति वैचारिक दृष्टि से अपने को स्वतंत्र अनुभव करेगा। लोगों की आक्रामक एवं अपराधी प्रवृत्तियों को देखते हुए तृतीय विश्व तो इस सदी के अंतिम वर्षों में हो जाना चाहिए, पर दूसरी ओर परमार्थ-परायण शक्तियों की सक्रियता के कारण वैसा नहीं हो पायेगा। इसी संक्रमण काल में रचनात्मक योजनाएं क्रियान्वित होने लगेगी, साथ ही लोगों की अभिरूचियों में विशिष्ट प्रकार का परिवर्तन भी आयेगा। वे शहरों के आकर्षक एवं अप्राकृतिक जीवन की ओर भागने की अपेक्षा गांव के सादगी भरे जीवन को ही अधिक पसंद करेंगे, फलस्वरूप नगरों की ओर मच रही अनावश्यक भगदड़ समाप्त होगी। खान-पान के तौर तरीकों में आमूल-चूल परिवर्तन होगा। सहयोग-सहकार की प्रवृत्तियां पनपेंगी और लोगों में आध्यात्मिक अभिरूचि जगेगी। यू.एस.नेवल औब्जरवेटरी के विशेषज्ञ डॉ. गैर्नोट विंकलर का भी कहना है कि इन दिनों पृथ्वी की परिभ्रमण गति के समय में बड़ा भारी अंतर आया है, जिसे देखकर यह कहा जा सकता है इस सदी के अंत तक कुछ विशिष्ट प्रकार का परिवर्तन होना सुनिश्चित है।

भविष्य-वेत्ता रूथ मौंटगोमेरी ने अपनी एक अन्य पुस्तक 'द वर्ल्ड बिफोर' में बताया है कि बीसवीं शताब्दी में जो समस्यायें अभी दिख रही है उनका समापन होना सुनिश्चित है, क्योंकि मानव शरीर में किसी दिव्यआत्मा ने जन्म ले लिया है और वह अपनी प्रचंड तप एवं आध्यात्मिक शक्ति से उन्हें उलट कर रख देगा। नये युग अर्थात् इक्कीसवीं शताब्दी को उज्जवल एवं प्रकाशपूर्ण बनाने में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी। उन्होंने उस दिव्यात्मा को 'लैम्यूरियन्स' के नाम से पुकारा है। उसकी प्रेरणा

फलस्वरूप अच्छे लोगों का इस धरती पर बाहुल्य होगा। लोग बुद्धि के साथ-साथ हृदय की भाव-संवेदनाओं को भी महत्व देंगे जिससे दोनों का समन्वय होकर निरंकुश बुद्धिवाद की समाप्ति और आदर्शवादी भावनाशील वृत्तियों का विकास-विस्तार होगा। आध्यात्मिक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिलेगा और प्राकृतिक नियम व्यवस्था के अनुरूप लोग अपनी जीवनचर्या का निर्धारण करेंगे। स्वजाति भक्षण के स्थान पर लोगों में परस्पर स्नेह-सहयोग की प्रवृत्तियां जगेंगी और वैर-वैमनस्य का समापन होगा। उन्होंने इस युग को 'वन्डर्स ऐरा' नाम दिया है और कहा है कि इस स्वर्णिम युग में किसी व्यक्ति विशेष का हस्तक्षेप न होकर प्रकृति की स्वसंचालित प्रक्रिया के अनुरूप ही प्राणियों की जीवनचर्या संचालित होगी। अपनी पुस्तक 'स्ट्रेन्जर्स ऐमोंगअस' में तो उन्होंने यहां तक कहा है कि इक्कीसवीं शताब्दी में ईसा जैसी महान आत्मा दूसरी बार इस पृथ्वी पर अवतरित हुई हैं। वह अपनी कार्यप्रणाली से समूची मानव जाति को प्रभावित-प्रेरित करेगी और उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगी। गिरों को उठाना, प्रसुप्तों को जाग्रत करना तथा जाग्रत आत्माओं को प्राणवान बनाकर उन्हें लोक सेवा में नियोजित करना ही उसका मूलभूत उद्देश्य है। इन दिनों यही हो भी रहा है। इक्कीसवीं सदी की गंगोत्री शांतिकुंज से जो प्रेरणा प्रवाह चल रहा है उसकी परिणति अगले ही दिनों मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण की चिर-प्रतीक्षित आवश्यकता की पूर्ति के रूप में दृष्टिगोचर होने लगेगी। यह सुनिश्चित संभावना ही नहीं, वरन एक तथ्य भी है।

**** कोई गृहस्थ अकस्मात् आर्थिक विपत्ति में पड़ गया। उसको पेट भरने की चिंता होने लगी। उसके एक साथी ने कहा- भगवान की पूजा करो, उनसे कुछ मांगो। गृहस्थ का मन हुआ, क्यों न भगवान से याचना की जाए, पर तुरन्त ही उसकी अंतरात्मा ने आवाज लगाई- विश्वासी आदमी को याचना नहीं करनी चाहिये, भगवान से भोजन की नहीं, धैर्यशक्ति की याचना करो। इस पर उस गृहस्थ को अपने अंदर भगवान की दिव्यवाणी सुनाई दी-मैं धैर्य का समुद्र तुम्हारे साथ हूं, तुम अधीर होकर अपना विश्वास क्यों खोते हो, क्या मैं बिना प्रार्थना के नहीं देता? मुझ पर अटल विश्वास रखने वाले भक्त का योगक्षेम वहन करते रहने की तो मैंने शपथ ले रखी है। गृहस्थ ने मन ही मन भगवान से कहा- सत्य है प्रभो, मैं भटक गया था। तुमने मुझे संभाल लिया।***

लालच बुरी बला है

महापुरूषों का अनुभव कहता है कि लालच जीवन में बुरी बला है, स्वस्थिति पर संतोष करना जीने की कला है, लालसा उस खुजली की तरह है जो खुजलाते-खुजलाते बढ़ती ही जाती है जिसका अंत कभी सुखद नहीं होता, इसी प्रकार लालच भी बढ़ता ही जाता है जिसका निदान संतोष की प्रवृत्ति में ही निहित है। पूर्व की एक कथा आती है, एक राजा प्रतिदिन प्रातः जो भी ब्राह्मण पहले आकर आर्शीवाद देता उसे दो माशा (दो ग्राम) सोना बख्शिस में देता था, यह सुनकर एक ब्राह्मण जो बहुत गरीब था वह कई दिन इसके लिये चक्कर लगाता रहा परन्तु जब भी जाता उसके पहले ही दूसरा पहुंचकर बख्शीस प्राप्त कर लेता, अतः निराश होकर एक बार वह ब्राह्मण रात भर वहीं राजा के द्वार पर ही सो गया, रात में जब राजा ने ब्राह्मण को देखा व इस प्रकार सोने का कारण पूछा तब उसने अपनी गरीबी का हाल बताते हुए कई दिनों तक चक्कर लगाने के बावजूद बख्शीस प्राप्त नहीं कर सका अतः इस उम्मीद से कि आज तो मैं ही सर्व प्रथम आर्शीवाद देकर दो माशा सोना प्राप्त कर ही लूंगा, इस पर राजा ने उसकी गरीबी पर तरस खाते हुए उसे पूछा कि तुम्हें क्या चाहिये मांग लो, मैं देने के लिये तैयार हूं- यह सुनकर वह ब्राह्मण सोचने लगा कि क्या मांगू एक तोला, दस तोला या सौ तोला अथवा क्यों नहीं आधा खजाना ही मांग लूं इस उधेड़ बुन में सोचते-सोचते लालच की गहरी खाई में फंसते गया व कहीं भी तृप्ति नहीं होते देख जब पुनः उसका अपना विवेक जाग उठा और सोचने लगा कि रात यूं ही बीत जायेगी, लोभ व लालच का कोई अंत आने वाला नहीं, आखिर में यही निर्णय किया कि, जो दो माशा सोना लेने आया था उसी में संतोष कर लेना चाहिये, इस प्रकार जब राजा से इतना ही देने के लिये कहा तब राजा असमंजस में पड़ गया व पूछा कि इससे अधिक क्यों नहीं मांगा तब उसने अपने मन की स्थिति व उठने वाले विचारों को यथावत बयान किया तो राजा भी अपने मन को टटोलने लगा व गंभीरतापूर्वक विचार करने पर यह समझ में आया कि इच्छाओं व आकांक्षाओं पर अंकुश लगाना ही वास्तव में सच्चा पुरूषार्थ है, ब्राह्मण से प्राप्त इस शिक्षा की बदौलत उसको अपने यहां खजांची नियुक्त कर दिया परिणाम स्वरूप उसकी गरीबी का अन्त हो गया व राजा भी तब से अपनी स्वस्थिति पर संतोष कर सुख का अनुभव करने लगा जिसका इसके पूर्व जीवन में अभाव था। यह उल्लेखनीय है कि समय से पहले व भाग्य से अधिक कभी किसी को कुछ मिलनेवाला नहीं है- यही विधि का विधान है, इसलिये कहा जाता है कि 'संतोष सदा सुखी' सुखी इन्सान वह है जो हर हाल में खुश है, मिल गया माल तो उस माल में खुश है, खो गया माल तो उस हाल में खुश है, कभी हो गये बेहाल तो उस हाल में भी खुश है, राम से करे ममता, संसार में राखे समता, यही जीने की सच्ची कला है।

मजहब राह है संस्कृति जमीन

मेवाड़ से दूत! इन शब्दों के साथ अब तक के विचार विमर्श की सारी कड़ियां टूट-टट कर बिखरने लगी। मन कहीं और जा अटका, मेवाड़-जौहर का देश! जहां की विरांगनाएं हंसते-हंसते लपटों को चूनर ओढ़ लेती हैं जिनके प्रत्येक कर्म से साहस स्पंदित होता है। जितना प्रचण्ड पौरूष उतना ही उत्कट प्रेम और निष्कलुष पवित्रता का तो जैसे निर्झर बहता है। इन्हीं अग्नि बालाओं की प्रेरणा राजपूतों का धधकता शौर्य बनती हैं। भस्म हो जाने पर भी रही बची चिनगारियाँ अंगारों को जन्म देती है अंगारे लपटों को और लपटें दावानल को। क्या सोचने लगे जहांपनाह! शहंशाह की इतनी लंबी चुप्पी देखकर हिन्दू बेग से रहा न गया। वह और तातारखां दोनों युद्ध विषयक वार्तालाप क्रम को आगे बढ़ाना चाहते थे। शेरखां ने समूची मुगल सल्तनत को नाकों चने चबवा रखे थे। उसी से निपटने के लिए पूरी मुगल फौज यहां गंगा किनारे जमा थी। कौन सा व्यूह बनाया जाय? छल-बल दाँव पेच किस उपाय से इसे वश में करें। इधर काफी देर से मुगलिया सल्तनत के सिरमौर अपने दोनों सेनापतियों से गुफ्तगू करने में मशगूल थे।

शाही तम्बू से बाहर कुछ दूर पर उन्मत्त गज झूम रहे थे। वे लोहे की जंजीरों से बंधे थे और जब अपने एक पैर पर बल देते पाँव बदलते तब जंजीरों की झनझनाहटें गूंज जाती और बढ़ी हुई दाढ़ी वाले मुगल अपने घोड़ों की पीठ को थपथपाते और मस्त अट्टहासों के साथ-साथ हिनहिनाहट के स्वर वातावरण में भर जाते। पूरी सेना में उत्साह की लहर थी पता नहीं कब युद्ध छिड़ जाय। इसी के संचालन व्यवस्था की बातें शाही तम्बू में चल रही थी। हिन्दूबेग और तातारखां दोनों जवाब के इन्तजार में शहंशाह के चेहरे की ओर देखे जा रहे थे।

इस तरह क्या देखे जा रहे हो तुम दोनों। मेवाड़ शब्द में ही कुछ जादू है। बयान और सीकरी की लड़ाई में, मैं भी अब्बाजान के साथ था। राजपूतों से हमारी फौज भय खाती थी। राणा सांगा! उन्हें तो खुदा ने फौलाद से बनाया था। मेवाड़ पर आजकल गुजरात के बहादुरशाह ने चढ़ाई कर रखी है। थोड़ी देर चुप रहने के बाद उन्होंने संकेत दिया ''दूत को यहीं आने दो।''

कुछ ही पलों के अन्तर में केसरिया बाना पहने एक मेवाड़ी उपस्थित हो गया। जिसे देखकर बादशाह प्रसन्नता में भरकर बोले ''आओ-आओ मेवाड़ के बहादुर।''

दूत ने तनिक झुककर उसे अभिवादन करने के साथ एक लिफाफा थमाते हुए कहा- स्वर्गीय महाराणा संग्रामसिंहजी की महारानी कर्मवती ने आपको यह सौगात भेजी है।

मेवाड़ की महारानी की सौगात! पत्र खोलकर पढ़ते-पढ़ते चेहरे पर एक-एक भाव उभरने लगे। थोड़ी देर में पूरा मुखमण्डल प्रसन्नता की आभा से भर आया।

कारूं का खजाना आया है क्या-इस जादू के पिटारे में? हिन्दूवेग हंसते हुए बोल पड़ा।

उससे भी कहीं अधिक। इसमें मुझे राखी आई है। मेवाड़ की वीरांगना ने मुझे भाई होने का गौरव दिया है। कुछ रूककर दूत को संबोधित कर वह कहने लगे मेवाड़ के वीर! बहिन कर्मवती से कहना हुमायूं तुम्हारी माँ के पेट से न पैदा हुआ तो क्या वह तुम्हारे सगे भाई से बढ़कर है। कह देना मेवाड़ की इज्जत मेरी इज्जत है। जाओ। दूत के जाते ही दोनों सेनापति अवाक् होकर बादशाह की ओर देखने लगे। कुछ क्षणों की चुप्पी के साथ उनमें से एक बोल पड़ा 'एक काफिर की औरत...?' वाक्य पूरा होता इसके पहले हुमायूं की गर्जना सुनाई दी, चुप रहो। किसे काफिर कहते हो उस देश की संतानों को जहां की धरती अपनी छाती फोड़ कर हमें और तुम्हें पानी पिलाती है। जिसकी धूलि के कणों से हमारा और तुम्हारा शरीर बना है। क्या उसी धरती का हम सब पर ऋण नहीं है।

हुमायूं के तेज स्वर तम्बू के सन्नाटे को चीरते जा रहे थे। ''काफिर नृशंसता बर्बरता का पर्याय है कि अपनी देश की माटी के प्रति अनुरक्ति और भक्ति का। स्वर को थोड़ा मृदुल बनाते हुए वह कहने लगे- समझने की कोशिश करो तातार खाँ मजहब राह और संस्कृति जमीन। मजहब के जुदा होने का मतलब संस्कृति का अलग होना नहीं है। हम सभी भारत पुत्र है यहां की संस्कृति हमारी सम्पदा है। फिर राखी का तो अनोखा रहस्य है। समान उम्र के स्त्री-पुरूष वासना के कीचड़ में सनने की जगह निष्कलुष प्रेम के धागों में बंधे कहीं और भी सुना है। इस देश की अनोखी संस्कृति में जीवन का प्रत्येक दिन पर्वों के उल्लास से भरा है। यहां की हर श्वास में मंगल विधान स्पन्दित होता है।

ठीक कह रहे है जहांपनाह! दोनों एक साथ बोल पड़े।

तब चलो फौज सजाओ। हमें राखी को अपनाना और उसका मूल्य चुकाना है। अभी रात में ही।

हाँ बिना एक पलकी देर किए। इन शब्दों के साथ प्रस्थान का बिगुल बज गया। हजारों मशाले चमक उठी और लाखों पाँव राखी का मूल्य चुकाने के लिए बढ़ चले।

पर्व सिखाते हैं कि जीवन एक उत्सव है

व्रत, पर्व-त्यौहार व उत्सव भारतीय संस्कृति के आवश्यक अंग-उपांग हैं। ये तत्व मनुष्य के जीवन-व्यवहार के केंद्रबिंदु में रहते हैं। इन्हीं केन्द्र केंद्रबिंदुओं के चारों ओर भावनाओं, विश्वासों विचारों एवं धार्मिक आचार-व्यवहार का विस्तार होता है और मनुष्य समूह रूप में स्वतः ही मन एवं आत्मा की एकता के सूत्र में बंधने लगता है।

आध्यात्मिक ऊर्जा हमारे देश के कण-कण में समाविष्ट है। यहां के व्रत-नियमों का संबंध अध्यात्मदर्शन, देवदर्शन और निरामयता से जुड़ा हुआ है। इसलिए हमारे यहां व्रत, पर्व-त्यौहारों की सुदीर्घ परंपरा सदियों से चली आ रही है। धार्मिक परंपरा में हमारे व्रत एवं त्यौहार गुंथे हुए हैं। हिमाचल से लेकर दक्षिण प्रदेश तक और बंगाल से लेकर गुजरात तक व्रतों एवं त्योहारों की एक अविच्छिन्न परंपरा आज भी देश में विद्यमान है, जो पूरे वर्ष चलती रहती है। देवी-देवताओं में अटूट विश्वास, चाहे वे वैदिक देवता हों अथवा लौकिक, भारतीय लोक जीवन की विशेषता रही हैं। व्यक्ति चाहे भारत के किसी भी प्रदेश में चले जाएँ, वहां प्रतिवर्ष समय-समय पर किसी न किसी देवी-देवता के मेले लगते रहते हैं और उत्सव होता रहता है।

अष्टमी, धनतेरस, दीपावली, कार्तिक पूर्णिमा, पंचमी भारतीय व्रतों एवं त्यौहारों का सिलसिला फैला हुआ है। ये सब तो बड़े-बड़े व्रत-त्यौहार है, जिन्हें गांव-गांव एवं नगर-नगर में सामूहिक रूप से मनाया जाता है। इनके अतिरिक्त एकादशी, पूर्णिमा, अष्टमी आदि के व्रत होते हैं जो किसी न किसी धार्मिक आस्था से जुड़े रहते हैं। इसी प्रकार सोम, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र शनि, रवि आदि वारों से जुड़े व्रत एवं उपवास होते हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि भारतीय पंचांग का कोई ऐसा सप्ताह, पखवाड़ा अथवा महीना नहीं है, जिसमें कोई व्रत या त्यौहार नहीं होता।

'व्रियते इति व्रतम्' जिसका वरण, ग्रहण, अनुपालन, आचरण, अनुष्ठान किया जाए, उसे व्रत कहते हैं। व्रत के पुण्यजनक उपवास, नियम, निष्ठा, अनुष्ठान, नियमन, संकल्प, संयम, नियामक, कर्त्तव्य-कर्म आदि अनेक अर्थ होते हैं। अमरकोश में व्रत एवं नियम को पर्यायवाचक माना गया है। अमरकोश में व्रत एवं नियम को पर्यायवाचक माना गया है तथा उपवास, पुण्यक आदि को व्रत का प्रकार कहा गया है। पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी के अनुसार किसी लक्ष्य को सामने रखकर विशेष संकल्प के साथ लक्ष्य सिद्धि हेतु की जाने वाली क्रिया विशेष का नाम व्रत है। व्रत में संकल्प लिया जाता है। मानव जीवन की बेहतरी के लिये संकल्प लिया जाता है। मानव जीवन की बेहतरी के लिये संकल्प लेने के परिणामस्वरूप पुण्य की प्राप्ति होती हैं। व्रत एक तरह का तप भी है, क्योंकि संकल्प पूरा करना सहज नहीं होता, इसके लिये शारीरिक कष्ट भी वहन करना पड़ता है।

शुक्ल पक्ष की विभिन्न तिथियों को चंद्रमा की विभिन्न कलाओं का प्रभाव पृथ्वी एवं जीवों पर चंद्रमंडल द्वारा और कृष्ण पक्ष की विभिन्न तिथियों को सूर्यमंडल द्वारा पड़ता है। इसके अतिरिक्त नक्षत्र-लोक आदि का भी प्रभाव पड़ता है। इसी कारण उपवास द्वारा शरीर को संभालना और इष्ट-पूजन द्वारा मन को संभालना इन व्रत-विधानों का मुख्य रहस्य, उद्देश्य एवं वैज्ञानिक आधार है।

व्रत करने के अनेक लाभ हैं। सभी प्रकार के व्रतों में ज्ञानेंद्रिय, कर्मोद्रिय व मन के संयम के विविध विधान हैं। व्रत करने से मनुष्य का सर्वप्रथम आहार संयम होता है जिससे विषय निवृत्त होते हैं, फ्लतः विचारों एवं भावों का परिष्कार होता है। व्रत एक प्रकार का संकल्प होता है। व्रत के रूप में छोटे-छोटे संकल्प लेने से व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है। व्रत पालन से बुद्धि, विचार, ज्ञान तंतु विकसित होते हैं। व्रत करने से व्यक्ति की सात्त्विकता में अभिवृद्धि होती है। पुराणों में व्रत के दिन क्षमा, दान, सत्य, संतोष व अचौर्य जैसे भावों का पालन करने हेतु कहा गया है। ये भाव मानव जीवन को उन्नत बनाते हैं।

पर्व रजोगुण प्रधान और सत्त्व-तम मिश्रित होते हैं। इसका अर्थ होता है- पूर्ण, भरा हुआ, जुड़ा हुआ तथा गाँठयुक्त। पर्व संधिकाल होने के कारण उनमें दो प्रभावों का संक्रमण रहता है।

भारतीय पर्वों के मूल में आनंद और उल्लास का विशेष महत्व है, क्योंकि कुछ दार्शनिकों की मान्यता है कि सृष्टि आनंद से उद्भूत है, आनंद में स्थित है और आनंद में प्रवेश करती है। पर्वों का उद्देश्य प्रत्येक क्षण को आनंद से परिपूर्ण कर देना और आनंद की पल-पल अनुभूति का एहसास कराना भी है। अज्ञान, दुःख, भय, शोक और मोह की निवृत्ति होने पर जिस आनंद की प्राप्ति होती है, वही पर्व है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति जीवन के आशायुक्त एवं आनंदमय पक्ष को महत्व देती है। हमारे वैदिक ऋषियों एवं जीवनदर्शन का निष्णात मनीषियों ने एक ऐसी मानव संस्कृति हमें दी, एक ऐसा जीवनदर्शन हमें दिया, जो जीवन के आस्थामय एवं आनंदमय पक्ष को ही महत्व देती है। हमारे जीवन में रंग भरनेवाली हमारी उत्सवधर्मिता की सोच मन में उमंग एवं उत्साह को जन्म देती है। त्यौहारों की दस्तक होते ही हमारा जीवन ही जैसे बदलने

लगता है। पर्व ही है जो हमें सिखाते हैं कि जीवन स्वयं एक उत्सव है।

पर्वों का उद्‌देश्य मानव को सामाजिक बनाना भी है। हमारी संस्कृति में जीवन के प्रत्येक क्षण को उत्सव की तरह जीने का ध्येय रहा है। आनंद के क्षण तभी सार्थक होते हैं, जब उन्हें सभी के साथ मिल-बांटकर उठाया जाए। आज मानव का समय ज्यादा से ज्यादा कीमती हो गया है, उसके पास समाज तो क्या परिवार के लिये समय नहीं है। पर्व हमें परिवार में मेल-जोल बढ़ाने व समाज से जोड़ने का काम करते हैं। ये हमें अधिक से अधिक सामाजिक सरोकारों की ओर प्रवृत्त करते हैं। हमारी संस्कृति में मिठास की तरह घुली हुई पर्व-परंपरा केवल उत्सव भावना का ही निर्वाह नहीं करती, बल्कि इसमें हमारी विचारधारा के बीज भी हैं। आज के युग में तो पर्व-परंपरा और भी ज्यादा प्रासंगिक हो जाती है, क्योंकि इन्सान एक दूसरे से कट रहा है, दूर-दूर हो रहा है और वर्तमान समय की कठिनाईयों से घिरता जा रहा है। तनाव, चिंता, निराशा, अवसाद अब जीवन का हिस्सा बनते जा रहे हैं। इन समस्याओं के समाधान में पर्व मुख्य भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं। पर्व विशेष में वातावरण में विशेष प्रकार की ऊर्जा-तरंगों का बाहुल्य रहता है। इन ऊर्जा-तरंगों को ग्रहण करके व्यक्ति के जीवन की विविध समस्याओं का समाधान होता है। इनमें मुख्यतः शारीरिक, मानसिक समस्याओं का निवारण होता है। व्यक्ति के मन में जो ग्रंथियां पड़ जाती हैं, पर्वों पर वे खुल जाती हैं, उनका विरेचन हो जाता है। पर्व मानव की भावनात्मक आवश्यकता की पूर्ति करके मम को असीम शांति और सकून देते हैं।

इन व्रतों एवं पर्वों में भारतीय संस्कृति की एकता के दर्शन होते हैं। इन पर्वों के अवसरों पर मंदिर, तीर्थस्थलों एवं धार्मिक प्रतिष्ठानों में अपनी-अपनी भाषा, वेशभूषा, खान-पान, रंग एवं प्रदेश की विविधताओं को विस्मृत कर जनसमूह एकत्र होते हैं और अपनी आस्थामय भक्तिभावना अत्यंत उत्साह एवं उमंग के साथ अपने आराध्य के प्रति निवेदित करते हैं। हम संगठित होकर सहभागिता एवं आपसी समन्वय के साथ जीवन जीना सीखते हैं।

इस प्रकार व्रत एवं पर्व हमारे शारीरिक व मानसिक संताप को दूर करने के साथ-साथ हमारे जीवन को अनुप्राणित करके न केवल हमें पारिवारिक व सामाजिक दायित्वों के लिये प्रेरित करते हैं, बल्कि अपने जीवन के हर क्षण को आनंदमय तरीके से जीने का अभ्यास भी कराते हैं। हमें इन व्रतों एवं पर्वों का भरपूर लाभ लेना चाहिये।

पाप और पुण्य

कुछ युवकों ने मुझसे पूछा- 'पाप क्या है?' मैंने कहा- 'मूर्च्छा' वस्तुतः होशपूर्वक कोई भी पाप करना असंभव है। इसलिए, मैं कहता हूं कि जो परिपूर्ण होश में हो सके, वही पुण्य है और जो मूर्च्छा, बेहोशी के बिना न हो सके वहीं पाप है।

एक अंधकारपूर्ण रात्रि में किसी युवक ने एक साधु के झोपड़े में प्रवेश किया। उसने जाकर कहा- 'मैं आपका शिष्य होना चाहता हूं। साधु ने कहा- स्वागत है। कुछ हैरान हुआ और बोला- लेकिन बहुत त्रुटियां हैं, मुझमें- मैं बहुत पापी हूं? यह सुन साधु हंसने लगा और बोला- 'परमात्मा तुम्हें स्वीकार करता है, तो मैं अस्वीकार करने वाला कौन हूं? मैं भी सब पापों के साथ तुम्हें स्वीकार करता हूं। उसने कहा- लेकिन मैं जुआ खेलता हूं, मैं शराब पीता हूं, मैं व्यभिचारी हूं। वह साधु बोला- इन सबसे कोई भेद नहीं पड़ता। लेकिन देखो! मैंने तुम्हें स्वीकार किया, क्या तुम भी मुझे स्वीकार करोगे? क्या तुम जिन्हें पाप कह रहे हो, उन्हें करते समय कम से कम इतना ध्यान रखोगे कि मेरी उपस्थिति में उन्हें न करो। मैं इतनी तो आशा कर ही सकता हूं? उस युवक ने आश्वासन दिया। गुरू का इतना आदर तो स्वाभाविक ही था। लेकिन कुछ दिनों बाद जब वह लौटा और उसके गुरू ने पूछा कि तुम्हारे उन पापों का क्या हाल है, तो वह हंसने लगा और बोला- मैं जैसे ही उनकी मूर्च्छा में पड़ता हूं कि आपकी आँखें सामने आ जाती है और मैं जाग जाता हूं। आपकी उपस्थिति मुझे जगा देती है। और जागते हुए तो गड्ढों में गिरना असंभव है!

मेरे देखे पाप और पुण्य मात्र कृत्य ही नहीं हैं वस्तुतः तो वे हमारे अंतःकरण के सोये होने या जागे होने की सूचनाएं है जो सीधे पापों से लड़ता है, या पुण्य करना चाहता है, वह भूल में है। सवाल कुछ 'करने' या 'न-करने' का नहीं है। सवाल तो भीतर कुछ 'होने' या 'न होने'का है और यदि भीतर जागरण है-होश है- स्व-बोध है, तो ही तुम हो, अन्यथा घर के मालिक के सोये होने पर जैसे चोरों को सुविधा होती है, वैसी ही सुविधा पापों को भी है।

सम्प्रदाय, क्षेत्र, वर्ग, जाति या भाषा के सीमा बंधनों में अपने को मत बांधो। सर्वत्र अपनी ही आत्मा का विस्तार देखो। विश्व नागरिक बनो और मात्र औचित्य का समर्थन करो।

पापा सुधर गए..* रजनी जैन

आलोक कक्षा आठ का छात्र था। वह पढ़ने में होशियार था। अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम आता। गोल-मटोल व बड़ी-बड़ी आंखों वाला आलोक परिवार में सबका चहेता था।

एक दिन आलोक अपने कमरे में बैठकर पढ़ रहा था। तभी दरवाजे की घंटी बजी। उसकी मम्मी ने रसोईघर से ही आवाज लगाई- आलोक, देखना, दरवाजे पर कौन है? आलोक ने उठकर दरवाजा खोला। देखा, शर्माजी खड़े थे। बेटे तुम्हारे पिताजी कहां है? शर्माजी ने पूछा। जी, वो अन्दर है। आलोक ने अन्दर की तरफ इशारा किया। शर्माजी उनके नए पड़ोसी थे। आलोक के पापा की उनसे दोस्ती हो गई थी। मगर आलोक को उनका घर पर आना अच्छा नहीं लगता था क्योंकि शर्माजी की आदतें अच्छी नहीं थी। शर्माजी अन्दर चले गये। आलोक कमरे में आकर पढ़ने लगा। कुछ देर बाद उसे पापा की आवाज सुनाई पड़ी, आलोक, यहां आना। जी पापा, क्या बात है? आलोक अन्दर आते हुए बोला। बेटे, जरा पास की दुकान से एक सिगरेट का पैकेट ला देना। शर्माजी, रूपए उसकी ओर बढ़ाते हुए बोले। अंकल मैं पढ़ रहा हूं। आलोक झुंझला उठा। आलोक, अंकल जैसा कह रहे हैं, वैसा करो। आलोक के पापा थोड़ा तेज आवाज में बोले। आलोक पापा की आवाज सुनकर सहम गया। उसने चुपचाप रूपये लिये और बाहर निकल गया। कुछ देर बाद उसने सिगरेट का पैकेट लाकर अंकल को थमा दिया। अब तुम बाहर जाओ। पापा उससे बोले। वह दरवाजे से बाहर आ गया। उसने चुपचाप खिड़की से अन्दर देखा। देखा, पापा भी शर्माजी के साथ सिगरेट पी रहे थे। पापा को सिगरेट पीता देखकर उसे बहुत बुरा लगा। वह मम्मी के पास गया और बोला, मम्मी, पापा सिगरेट पी रहे हैं। आप उन्हें समझाती क्यों नहीं? मैं उन्हें कितनी बार कह चुकी हूं, मगर वे मेरी सुनते ही कब हैं। आलोक की मम्मी दुखी स्वर में बोली। अब तो यह रोज का क्रम बन गया। शर्माजी रोज ही घर पर आ धमकते, आलोक से सिगरेट मंगाते और फिर दोनों दोस्त कमरे में बैठकर सिगरेट पीते हुए बातें करते रहते।

एक दिन तो हद हो गई जब शर्माजी अपने साथ शराब की बोतल ले आए। वे आलोक के पापा पर शराब पीने के लिए जोर डालने लगे। पहले तो पापा ने ना-नुकुर की, फिर मान गए। धीरे-धीरे आलोक के पापा को शराब व सिगरेट की इतनी लत पड़ गई कि उनके बिना रहना उन्हें असंभव-सा लगने लगा। पापा की आधी तनख्वाह तो शराब व सिगरेट पीने और दोस्तों को खिलाने-पिलाने में ही खर्च होने लगी। घर का बजट गड़बड़ाने लगा। इस बात को लेकर उसके मम्मी-पापा में काफी झगड़े होने लगे। आलोक अपने घर की हालत को देख-देखकर काफी दुःखी होता। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करें? एक दिन आलोक कमरे में बैठा कुछ सोच रहा था तभी उसे अपने दोस्त बंटी की याद आ गई। उसके पापा गुटका खाने व शराब पीने के आदी थे जिसके कारण उन्हें कैंसर हो गया था और एक दिन पूरे परिवार को रोता-बिलखता छोड़कर वे मौत के मुंह चले गए थे। परिणाम स्वरूप बंटी को अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी। तो क्या उसके पापा भी...? सोते-सोचते आलोक कांप उठा। मुझे कुछ करना ही पड़ेगा। कहते हुए आलोक कमरे से बाहर निकल गया।

एक दिन पापा ने आलोक से सिगरेट का पैकेट लाने को कहा। आलोक बाजार चल दिया। रास्ते में उसने सिगरेट का पैकेट खोलकर दो सिगरेट निकाल ली और पैकेट को वैसे ही चिपका दिया। घर लाकर उसने पैकेट पापा को थमा दिया। जब पापा ने पैकेट खोला तो देखा दो सिगरेट कम थी। सिगरेट कम कैसे है? पापा सोचने लगे। अब तो हमेशा यही होने लगा। पापा जब भी आलोक से सिगरेट मंगाते, आलोक पैकेट में से एक या दो सिगरेट निकाल लेता और पापा सोचते ही रह जाते कि सिगरेट कम कैसे हैं? धीरे-धीरे पापा को आलोक पर शक होने लगा। उन्होंने आलोक पर निगाह रखनी शुरू कर दी। एक रात आलोक अपने कमरे में बैठकर पढ़ रहा था। तभी पापा उसके कमरे में दाखिल हो गये। पापा को सामने देखकर आलोक एकदम हड़बड़ा गया। उसके हाथ में सिगरेट लगी थी। नालायक, शर्म नहीं आती सिगरेट पीते हुए। पापा क्रोध से दहाड़े । बता, कहां से सीखा सिगरेट पीना। जी, अपने दोस्तों से, आलोक बोला। क्या कहा, दोस्तों ने कहा और तुमने सिगरेट पीना शुरू कर दिया। जानते हो तुम, सिगरेट कितनी गंदी चीज है। अरे, ऐसे दोस्तों का साथ क्यों नहीं छोड़ दिया जो गन्दी आदतों के शिकार हैं। पापा क्रोध में कहे जा रहे थे। तो क्या हुआ, आपने भी तो अपने दोस्तों के कहने पर ही इन आदतों को अपनाया है। तभी मम्मी कमरे में घुसते हुए बोली। पापा सकपका गए। वे आलोक की मम्मी की तरफ देखने लगे। जब घर में हमेशा शराब, सिगरेट व अशांति का माहौल रहेगा, पढ़ते हुए बच्चे को उठा-उठाकर सिगरेट मंगाई जाएगी तो बच्चे उससे कैसे अछूते रह सकते हैं? वे भी कभी न कभी इन बुरी आदतों की चपेट में आएंगे ही। मम्मी बोली। पापा चुप हो गए। वे सोचने लगे तभी आलोक बोल पड़ा- क्या सोच रहे हैं पापा?

मैं सचमुच बहुत बड़ी गलती कर रहा था। मैं वादा करता हूं कि अब कभी भी शराब व सिगरेट को हाथ नहीं लगाऊंगा। उन्हें हमेशा के लिये छोड़ दूंगा तथा शर्मा जैसे लोगों का साथ भी छोड़ दूंगा। पापा प्रायश्चित भरे स्वर में बोले। सच पापा, आलोक खुशी से पापा से लिपट गया। लेकिन तुम भी वादा करो कि अब सिगरेट को हमेशा के लिये छोड़ दोगे। पापा आलोक से बोले। पापा, मैंने सिगरेट पीना शुरू ही कहां किया था, जो उसे छोड़ना पड़े। आलोक हंस पड़ा। क्या मतलब? पापा ने चौंक कर पूछा। मतलब ये कि मैंने और मम्मी ने मिलकर यह योजना बनाई थी ताकि आपकी गंदी आदतें छूट सकें। आलोक बोला। ओह, मेरे बच्चे। कहते हुए पापा ने आलोक को गले से लगा लिया।

माया

*आचार्य श्रीमद् जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.

माया के चार स्तर

चार कषाय में तीसरा कषाय है माया। कपट, दंभ, पाखण्ड आदि अनेक नाम और अनेक रूप है माया के। चार कषाय में क्रोध, मान, द्वेषप्रधान है तो माया और लोभ, राग या मोहप्रधान हैं। माया के विषय में कहा गया है-

माया करंडी नरकस्य हण्डी,
तपोविखण्डी सुकृतस्य भण्डी।

माया नरक की पिटारी है। तप को खंडित करने वाली है और तप, दान, धर्म आदि को बदनाम करनेवाली है। ज्ञातासूत्र में भगवान ने फरमाया है- **सुहमा वि माया होइ अणत्थाय**- सूक्ष्म अर्थात् अल्प मात्र माया भी अनेक अनर्थों की कारण होती है।

क्रोध, मान की तरह माया के भी चार स्तर है। आगम में माया को 'केतन' अर्थात् वक्र कहकर बताया है कि माया का सबसे विकट व गहन स्वरूप है।

1- माया का पहला रूप है- वंसीमूल केतण समाणा - बाँस की जड़ के समान अत्यन्त कुटिल, वक्र व गाँठ-गठीला स्वभाव जिसका है, वह **अनन्तानुबंधी माया** वाला होता है जिसके ह्रदय के भीतर मारवाड़ी पगड़ी के पेच व मूंज की रस्सी की तरह अनेकानेक गाँठें व कुटिलता भरी हो, उसकी आत्मा में 'सम्यक्तव' नहीं ठहर सकता। वह चाहे कितनी ही धर्म क्रियाएं करें, सब दिखावा मात्र होती है, क्योंकि **सोही उज्जूभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई-** जिसका ह्रदय सरल होता है, उसी की आत्मा शुद्ध रहती है और शुद्ध स्थान में ही धर्म स्थिर रहता है। अनन्तानुबंधी माया वाला जीव चाहे जितना उपदेश सुने, चाहे जितना उसे समझाओ परन्तु जीवन पर्यन्त वह अपनी कुटिल वृत्ति का त्याग नहीं कर पाता। ऐसा जीव मरकर नरक गति में जाता हैं।

2- माया का दूसरा रूप है, अप्रत्याख्यानी माया- मेंढ विसाण केतण समाणा- मेंढ के सींग की तरह अनेक घुमाव व वक्रता लिये जिसका ह्रदय होता है, वह जीव जब तक इस माया कपट का त्याग नहीं करता, श्रावक धर्म व पात्र नहीं बन सकता। भले ही वह श्रावक कुल में जन्मा हो, साधु-संतों का भक्त बना हो, परन्तु कुटिलता को त्यागे बिना श्रावकधर्म उसके जीवन को स्पर्श नहीं कर पाता। ऐसी माया की उत्कृष्ट स्थिति एक वर्ष की होती है और इसी प्रकार की भाव दशा में काल करने पर वह तिर्यंचगति में जाता है।

3- तीसरे प्रकार की माया जिसे प्रत्याख्यानी माया कहा जाता है, उसकी वक्रता को बताने के लिये चलते हुए बैल के मूत्र की धारा की उपमा दी है। मार्ग चलते बैल की मूत्र की धार जमीन पर टेढ़ी-मेढ़ी, आंटेदार दिखती है, परन्तु वह कुछ ही समय बाद मिट भी जाती है। इसी प्रकार प्रत्याख्यानी माया वाले का ह्रदय बहुत अधिक कुटिल व धूर्त नहीं होता। गुरूओं के उपदेश से, शास्त्र श्रवण से वह शीघ्र ही समझ जाता है और माया कपट का त्याग कर ह्रदय को सरल बना लेता है।

भगवान ने फरमाया है कि ऐसा व्यक्ति जब तक माया का त्यागकर ह्रदय को सीधा सरल नहीं बना लेता, तब तक वह श्रावक धर्म की भूमिका से ऊपर नहीं उठ सकता। मायावी साधु धर्म ग्रहण नहीं कर सकता। यदि साधु वेष धारण कर भी ले तो भी वह अपने मायाचरण के कारण धर्म का विराधक ही होता है। इस तीसरे स्तर की माया की उत्कृष्ट काल अवधि एक मास की होती है अर्थात एक मास के भीतर ही वह व्यक्ति अपने माया सेवन के प्रति ग्लानि लाकर गुरूजनों के समक्ष उसकी आलोचना निंदा कर लेता है। ह्रदय को शुद्ध सरल बनाकर इस दोष से मुक्त हो जाता है। यदि माया दोष का त्याग नहीं किया जाये, उसी बीच काल कर जाये तो वह मनुष्य गति से ऊपर नहीं जा सकता।

4- माया का चौथा रूप है, संज्वलन माया- अवलेहणिय केतण समाणा- बढ़ई जब बाँस आदि लकड़ी को छीलता है तो लकड़ी के ऊपर गोल-गोल छल्लेनुमा छिलके उतरते हैं। दिखने में वे लच्छेदार घुमाव वाले होते है, परन्तु बड़ी सरलता से उनको सीधा कर लिया जाता है। उनमें वक्रता अधिक नहीं होती। इसी प्रकार इस माया संज्वलन कषायी होता है तथा वह साधु धर्म की भी आराधना कर लेता है। परन्तु जब तक इसका अंश आत्मा में रहता है, वीतराग अवस्था प्राप्त नहीं कर सकता। ऐसा व्यक्ति सरल भद्रपरिणामी ही माना जाता है और बड़ी सहजता से अपनी माया का समूल नाश भी कर सकता है। इस माया सहित आत्माकाल करके देवलोक तक जाता है, किंतु मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता।

विवेचन का सार यह है कि माया का दुष्परिणाम सुन-समझकर ह्रदय को अत्यन्त सरल व सहज बनाये रखना चाहिये। सरलता ही धर्म की पृष्ठ भूमि है। सरल व्यक्ति सर्वत्र विश्वास प्राप्त करता है जबकि मायावी-कपटी का कोई विश्वास नहीं करता। **- स्थानांग सूत्र स्थान 4**

अजब है तेरी खुदाई!

अखबारों में छपी एक रिपोर्ट ने समूचे अमेरिकावासियों को चौंका दिया कि चालीस वर्षीय श्री मूरे की मृत्यु रात में सोते समय हो गई। समाचार सुनते ही उनके बँगले के चारों ओर श्रद्धांजलि प्रकट करने वालों का तांता लग गया। शयनकक्ष में श्री मूरे का शव पड़ा था और आस-पास प्रशंसकों, सलाहकारों, मित्रों एवं व्यापारियों की भीड़ लगी थी। इस बीच एक चमत्कारी घटना घटित हुई। शोकाकुल भीड़ में श्री मूरे अचानक उठ बैठे, जैसे गहन निद्रा से जागे हों। लोग आश्चर्य में पड़ गए, भीड़ में खलबची मच गई, क्योंकि डॉक्टरों ने उनकी मृत्यु निद्रावस्था में लगभग चौदह घंटे पूर्व बताई थी। मूरे गहन निद्रा से उठकर ज्यों ही बैठे, अपनी कलाई में बंधी घड़ी में समय देखकर चौंक उठे और कहने लगे कि दोपहर को मित्र के यहां व्यापार संबंधी कार्य से जाना था। इस देरी से मुझे लाखों का नुकसान हो गया।

उठते ही उन्होंने अपने पुत्र से कहा कि मुझे कमजोरी सी लग रही है। हाथ-पैर काँप रहे है और मुझे भय लग रहा है, क्योंकि मैं अपने आप को वास्तविकता से हटकर पा रहा हूं। उन्होंने अपने विचित्र स्वप्न के बारे में बताया कि मैं प्रतिदिन तीन बजे उठकर नित्य कर्म करता हूं, लेकिन आज जब उठा तो अपने को कमरे में नहीं, वरन हवा में तैरते हुए पाया। हवा का तीव्र झोंका मुझे उड़ाए जा रहा था। मेरे पैर जमीन पर नहीं लग रहे थे। मुझे अपने व्यापार की चिंता थी, किंतु तीव्र हवा के झोंकों के आगे मेरी एक भी न चली। अंत में एक सुनसान जगह पर मैं स्थिर हुआ। काफी समय पश्चात मुझे किसी भारी व्यक्ति का स्वर सुनाई पड़ा- 'हमें व्यापारी मूरे नहीं, वरन डॉक्टर मूरे चाहिए। उसे लाओ!' मैं पुनः हवा के तीव्र प्रवाह में बहता हुआ यात्रा करने लगा। जब आँखें खुली तो अपने आपको शयनकक्ष में पलंग पर पाया। तुम सभी आस-पास थे।

उन्होंने आगे बताया कि यहां जो घटना घटित हो रही थी, उसे मैं स्वप्न की भांति देख रहा था कि मेरे चारों ओर उदास चेहरे में मेरे मित्रगण बैठे हुए हैं। अपने ऊपर मैं बोझ सा महसूस कर रहा था। ऐसा लग रहा था मानो कोई मेरे ऊपर बैठा है। बेटा मुझसे लिपटकर रो रहा था। आखिर यह सब क्या है? घर में सब कुशल से तो हैं? कोई दुर्घटना तो नहीं हुई? बेटे! तुम बोलते क्यों नहीं?

बेटे ने उत्तर दिया- 'पिताजी! डॉक्टर द्वारा आपको मृत घोषित किये चौदह घंटे व्यतीत हो गए हैं। अभी आपकी अंतिम यात्रा की तैयारी चल रही थी कि आप जी उठे।' इसी बीच उनके सचिव ने सामने चार-पांच समाचार पत्रों को रखा, जिनमें सचित्र श्री मूरे के मरने की खबरें छपी थी।

श्री मूरे के पुनर्जीवित होते ही डॉक्टरों, विशेषज्ञों का एक विशेष मंडल उनके स्वास्थ्य परिक्षण में जुट गया और उन्होंने उनको पूर्णतः स्वस्थ पाया। ठीक उसी समय एक वृद्ध डॉक्टर मूरे का शव अस्पताल में पोस्टमार्टम के लिये लाया गया। डॉक्टर मूरे की मृत्यु ठीक उसी समय हुई थी, जिस समय व्यापारी श्री मूरे पुनर्जीवित हुए थे। यह उदाहरण बताता है कि स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि आत्मा का प्रवाह अनंत है। यह सिद्धांत किसी ठोस वैज्ञानिक आधार पर आधारित है, जिसे भारतीय संस्कृति का केन्द्र बिंदु भी कहा जा सकता है।

संन्यास का सच्चा मार्ग

✻ डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि

उन दिनों गौतम बुद्ध श्रावस्ती के जेतवन विहार में धार्मिक उपदेश दे रहे थे। नगर के धनी सेठ का पुत्र भी एकाग्रचित होकर सुन रहा था। उपदेश समाप्त होने पर उसने बुद्ध को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया और उनसे संन्यास में दीक्षित करने की प्रार्थना की। बुद्ध ने स्नेहपूर्वक कहा, संन्यास ग्रहण करने के लिये माता-पिता की आज्ञा अनिवार्य है। नगर-सेठ का युवा पुत्र विदा लेकर अपने घर लौट आया। सात दिन तक निराहार रह उसने माता-पिता से प्रार्थना की। उन्होंने पुत्र को संन्यास ग्रहण करने की आज्ञा दे दी। बुद्ध के निर्देशानुसार वरिष्ठ आचार्य ने उसे दीक्षित कर दिया। वह कई वर्षों तक साधना करता रहा। एक दिन उसका एक पड़ोसी घूमता हुआ वहां आ पहुंचा। वणिक-पुत्र ने उससे अपने माता-पिता की कुशल पूछी। उसने बताया-वृद्धावस्था में थे अस्वस्थ रहने लगे हैं। कठिनाई में जीवन-यापन कर रहे हैं। यह सुनकर पुत्र की आंखों से आंसू बहने लगे। उसने कमंडल उठाया और भिक्षा लेकर माता-पिता से मिलने के लिये चल दिया। वहां पहुंच उसने दीन-हीन माता-पिता के चरण स्पर्श किये। एक भिक्षु को नमन करते देख वे चकित रह गए और पूछने लगे, तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? भिक्षु मांग अपना व माता-पिता का पालन-पोषण भी करता। दूसरे भिक्षुओं ने उसकी शिकायत गौतम बुद्ध से की, वणिक-पुत्र भिक्षा में मिली वस्तुएं गृहस्थों में बांट देता है। उसने संघ का नियम तोड़ा है। तथागत ने वणिक-पुत्र को बुलाकर पूछा, क्या तुमने भिक्षा में ग्रहण की गई चीजों से गृहस्थों का पालन-पोषण किया? उसने उत्तर दिया, हां भंते, मैंने अपने बेसहारा बुजुर्ग माता-पिता का पोषण किया। गौतम बुद्ध ने घोषणा की, भिक्षुओं, वणिक पुत्र संन्यास के सच्चे मार्ग पर अग्रसर है।

✻ अनु दीपक जैन, जयपुर मो.न. 9782499999

आगमोध्दारक भविष्यफल अक्टूबर-2016

मेष :- आपके लिये यह समय सामान्य रहेगा, व्यापार में लाभ हेतु परिश्रम की अधिकता रहेगी, इस समय प्रत्येक निर्णय सोच विचार कर करें, परिवार में कुछ तनाव की स्थिति रहेगी, परन्तु माह का उत्तरार्द्ध शुभ रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए बेहतर समय है।

महत्वपूर्ण तिथि- 1,6,9,15,22,28 ।

वृषभ :- आपके लिये यह समय मिश्रित फ्लदायक रहेगा, अधिकारी वर्ग का सहयोग लाभकारी रहेगा, परन्तु मन में परिणामों के प्रति अस्थिरता रहेगी, परिवारिक वातावरण बेहतर रहेगा, विद्यार्थी वर्ग को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण तिथि-2,7,10,16,20,25 ।

मिथुनः-आपके लिये यह समय सामान्य रहेगा, कार्य क्षेत्र में किसी प्रकार का परिवर्तन संभावित है, नई योजना को अभी टालना बेहतर रहेगा, भूमि संबंधी विवाद उभर सकता है, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि-3,10,12,18,24 ।

कर्कः- आपके लिये यह समय मिश्रित फ्लदायक रहेगा, व्यापार वृद्धि हेतु यात्रा का योग बेहतर रहेगा, स्थान परिवर्तन बेहतर लाभ देगा, किसी विवाद में उलझना इस समय सही नहीं है, विद्यार्थी वर्ग को लक्ष्य की तरफ ध्यान देना होगा।

महत्वपूर्ण तिथि-1,5,16,19,22,28 ।

सिंहः-आपके लिये यह माह शुभ रहेगा, आर्थिक रूप से बेहतर लाभ की प्राप्ति होगी, व्यापार में लाभ प्राप्ति के नये अवसर प्राप्त होंगे, किसी प्रकार का परिवारिक महोत्सव संभावित है, विद्यार्थी वर्ग के लिये सफ्लता का समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि-2,6,10,18,21,27 ।

कन्याः-आपके लिये यह माह मिश्रित फ्लदायक रहेगा, कार्य प्रणाली में परिवर्तन बेहतर लाभ देगा, शत्रु हानि देने का विफ्ल प्रयास करेंगे, इस समय किसी भी व्यक्ति पर आवश्यकता से ज्यादा विश्वास न करें, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय है।

महत्वपूर्ण तिथि-4,8,11,14,19,24 ।

तुलाः-आपके लिये यह समय शुभ रहेगा, व्यापार में अनुकूल परिस्थितियों मनोबल में वृद्धि करेंगी, वाद-विवाद में विजय प्राप्त होगी, पारिवारिक उत्साहजनक रहेगा, विद्यार्थी वर्ग को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण तिथि-2,3,9,13,18,27 ।

वृश्चिकः- आपके लिये समय शुभ रहेगा, व्यापार से बेहतर लाभ की प्राप्ति होगी, विलासिता संबंधी वस्तुओं पर व्यय होगा, किसी प्रकार का साकारात्मक परिवर्तन होगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये सफ्लता का समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि-5,8,12,17,25,31 ।

धनुः-आपके लिये यह माह मिश्रित फ्लदायक रहेगा, व्यापार में सफ्लता मिलेगी, दूर स्थानों से शुभ समाचार प्राप्त होगा, परिवार में किसी प्रकार का उत्सव का वातावरण रहेगा, विद्यार्थी वर्ग में उत्साह रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि-6,7,11,14,19,22,30 ।

मकरः-आपके लिये माह मिश्रित फ्लदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में नये प्रोजेक्ट लाभकारी सिद्ध होंगे, सामाजिक व धार्मिक कार्यों में रूचि, यात्रादि का योग भी बन सकता है, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि-5,8,10,11,18,27 ।

कुम्भ :- आपके लिये माह सामान्य रहेगा, व्यापार में बनते हुए कार्य बिगड़ सकते है, क्रोध की अधिकता मान सम्मान में हानि पहुंचाने वाली रहेगी, जल्दबाजी में कोई भी निर्णय या कार्य न करें, विद्यार्थी वर्ग में तनाव की स्थिति रहेगी।

महत्वपूर्ण तिथि- 1,8,12,15,23 ।

मीनः-आपके लिये यह समय शुभ रहेगा, व्यापार में आशानुसार लाभ प्राप्ति मन में उत्साह रखेगी, भूमि भवन का लाभ होगा, पारिवारिक वातावरण बेहतर रहेगा, विद्यार्थी वर्ग को शुभ परिणाम मिलेंगे।

महत्वपूर्ण तिथि-1,2,7,13,19,24,29 ।

वर्ग पहेली क्रमांक-263

						र्श	र्श						
					*	व	व	*					
				*	र	वी	ती	ष	*				
			*	स	ज्ञा	चे	शे	म	न	*			
		*	व	वि	ज्ञा	य	दे	सु	न	व	*		
	*	दि	द	य	ना	ज	शो	क	व	पा	प्रि	*	
*	ना	द	सु	लि	ह	र्श	मा	नं	दि	र्ध	दा	व	*

भगवान श्री महावीर स्वामीजी के परिवार के नाम ढूंढिये-

मेरू पर्वत के इस शिखर में चरम तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामीजी के परिवार के दस सदस्यों के नाम छिपे हुए है। आपको नाम ढूंढ निकालना है। एक अक्षर का एक बार ही उपयोग करना है।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रूपये 31/-, 21/-, 11/-एम.ओ.भेजें जावेंगे। सही उत्तर वाले नाम हम छांपेगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

वर्ग पहेली क्रमांक-262 परिणाम

सं	व	त्स	री		वि	ना	श	
य				धा		म		मा
म	न		बा	र	ह		दा	न
न		वि		ण		शा		व
	त	रा	जू		वा	स	ना	
अ		म		सं		न		ना
ध	र्म		का	य	र			गे
र्म		ध		म				श्व
	म	न	न		म	हा	वी	र

महर्षि दयानंद फर्रूखाबाद में रूके हुए थे। एक व्यक्ति दाल-चावल बनाकर लाया। गृहस्थ था एवं मजदूरी करके परिवार का पेट भरता था। स्वामीजी ने उसके हाथ का अन्न, जो श्रद्धा से लाया गया था, ग्रहण किया। ब्राह्मणों को बुरा लगा। वे बोले- आप संन्यस्त है। इस हीन कुल के व्यक्ति का भोजन लेकर आप भ्रष्ट हो गए। स्वामीजी बोले- कैसे, क्या अन्न दूषित था? वे बोले- हां, आपको लेना नहीं चाहिए था। स्वामीजी बोले- अन्न दो प्रकार से दूषित होता है। एक तो वह, जो दूसरों को कष्ट देकर शोषण द्वारा प्राप्त किया जाता है। दूसरा वह, जहां कोई अभक्ष्य पदार्थ पड़ जाता है। इस व्यक्ति का अन्न तो दोनों ही श्रेणी में नहीं आता। इसका अन्न परिश्रम की कमाई का है। तब दूषित कैसे हुआ, मैं कैसे भ्रष्ट हो गया? आप सबका मन मलिन है। इसी से आप दूसरों की चीजें मलिन मानते हैं। मैं जाति जन्म से नहीं, कर्म से मानता हूं। भेदभाव त्यागकर आप सभी, सबके लिए जीना सीखिए।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-263

** पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.*

हमें पहचानो तो हम जाने...!

1- मैं मंदिर जाते समय रास्ते में प्रतिदिन सवासेर सोने का दान देती थी।

2- मैं धराद का रहनेवाला था, मैंने 360 साधार्मिकों को अपने जैसा श्रीमंत बनाया था।

3- मैं प्रतिदिन 5 नये श्लोकों की रचना करने के बाद ही आहार-पानी ग्रहण करता था।

4- मैं प्रतिदिन वीतराग स्रोत एवं योगशास्त्र का स्वाध्याय करके ही मुंह में पानी डालता था।

5- परमात्मा के विचरण की दिशा में मैं 7 कदम आगे जाकर 108 स्वर्ण जैसे स्वस्तिक बनाता था।

6- मैंने विक्रमादित्य राजा को शत्रुंजय का पैदल संघ निकालने की प्रेरणा दी थी।

7- मैंने अष्टपद तीर्थ पर 24 तीर्थंकरों के रत्नमय बिंब भरवाये थे।

8- मैंने कहा- भगवान गलत है, सच तो है कड़े-कड़े।

9- मैंने 60 वर्ष की उम्र में संस्कृत भाषा सीखी।

10-मैं कर्मों का राजा हूं। यदि मुझे जीत लिया तो समझो कि सबको जीत लिया।

पुष्यमित्र का अश्वमेध सफलतापूर्वक पूरा हो गया। दूसरे दिन अतिथियों के मनोरंजन हेतु एक रंग-बिरंगा सांस्कृतिक महोत्सव आयोजित हुआ। महर्षि पतंजलि भी इसमें आमंत्रित थे वे आए और विराजमान हुए। उनके शिष्य चैत्र को बुरा लगा, किंतु वह चुप रहा। लेकिन कुछ दिन बाद जब महर्षि योगदर्शन पढ़ा रहे थे तो उसने उलाहना देते हुए कहा- ''भगवन्! क्या नृत्यगीत के रासरंग से चित्तवृत्तियों के निरोध में मदद मिलती है?'' महर्षि समझ गए कि शिष्य क्या कहना चाह रहा है। उन्होंने कहा-''सौम्य! आत्मा रसो वै सः है। रस में उसे आनंद भी मिलता है, तृप्ति भी। वह रस विकृत न होने पाए, शुद्ध बना रहे, इसी सावधानी का नाम संयम है। विकार की आशंका से रस का परित्याग उचित नहीं है। यह संयम नहीं, पलायन है, जैसे जल को तरलता से वंचित कर देना। भद्र! भ्रम न रखो। रस को नहीं, रस की विकृति को देखो, उससे दूर रहो! शिष्य ने चरण पकड़ लिए।

वर्ग पहेली -क्रमांक-262 परिणाम

विजेता-

1-सुधा धारीवाल, देवास (म.प्र.) - प्रथम
2-प्रियांशी जैन, नरवर (म.प्र.) - द्वितीय
3-विद्या संघवी, बदनावर (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे-

प्रिती हिंगड़, नरवर, जवाहरलाल जैन, उज्जैन, चंदनबाला जैन, प्रभा जैन, देवास, प्रीति जैन, कला मेहता, रतलाम, चंदनबाला जैन, शान्ता पोरवाल, उज्जैन।

ज्ञान गंगोत्री-262 परिणाम

सही उत्तर-

1-श्री विनयप्रभ उपाध्याय, 2-श्री हेमचन्द्राचार्य 3-श्री देवेन्द्रसूरीजी, 4-श्री सोमप्रभाचार्य, 5-श्री शांति सूरीजी, 6- श्री गजसार मुनि, 7-श्री भद्रबाहु स्वामी 8-श्रीमानदेव सूरीजी, 9-अभयदेव सूरीजी, 10- उपाध्याय श्री समयसुन्दर सूरीजी।

विजेता-

1-जवाहरलाल जैन, उज्जैन (म.प्र.) - प्रथम
2-कुसुम जैन, आगर (म.प्र.) - द्वितीय
3-प्रीति जैन, रतलाम (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे-

कला मेहता, रतलाम, शांतिबाई गोलेछा, बागबाहरा, चंदनबाला जैन, शान्ता पोरवाल,उज्जैन।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डाले।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-10-2016 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-,31/-,21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

श्री जैन श्वेतांबर मालवा महासंघ का सम्मेलन श्री शंखेश्वर महातीर्थ में सम्पन्न

✲ मालवा के जिले की जैन पाठशाला का सर्वे होगा।
✲ संघ प्रतिनिधि कैसा हो, पर चर्चा की गई।
✲ युवा जैनाचार्यश्री को मालवा महासंघ पुर्नगठन के अधिकार दिये।
✲ श्री वेलजीभाई मणियार परिवार का पूर्ण सहयोग मिला।
✲ प्रतिनिधि मालवा के उत्थान के लिये तैयार।
✲ आचार्यश्री ने भी मालवा में सक्रिय होने का भाव दर्शाया।

शंखेश्वर- श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में स्थित पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी महाराज द्वारा स्थापित आगम मंदिर परिसर में चार्तुमास हेतु विराजित पूज्यपाद मालवा महासंघ आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि की पावन निश्रा में जैन श्वेतांबर मालवा महासंघ का सम्मेलन 17 एवं 18 सितंबर को सम्पन्न हुआ। प्रतिनिधियों की संख्या अपेक्षा से कम होने के बाद भी जो उत्साह और काम करने की ललक भी वह स्पष्ट दिखाई दी। मालवा की जैन पाठशाला का सर्वे कर उनको सशक्त करने पर कार्य निती बनी तथा जिलेभर सर्वे का निर्णय लिया गया। डॉ. सुभाष जैन (महासचिव) ने पूज्य आचार्यश्री से मालवा महासंघ का पुर्नगठन का अनुरोध किया। पूज्य मुनिश्री अक्षतरत्नसागरजी ने ''संघ का प्रतिनिधि कैसा हो'' इस विषय पर अपने व्याख्यान में व्यापक प्रभाव डाला। पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि -गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीजी ने मालवा के छोटे-छोटे संघ के श्रावक की चिंता की ओर मालवा से वागड़ तक विस्तार से विचरण किया। 40 वर्ष तक मालवा से धर्म जागरण किया। गुरूदेव की कल्पना के अनुरूप मालवा महासंघ का गठन हुआ। हम इसे आगे बढ़ाकर विशेष रूप से सक्रियता प्रदान करेंगे। विगत तीन चार्तुमास मालवा के बाहर हुए अब अगला चार्तुमास मालवा में होगा। आप सब यहां मालवा की चिंता का चिंतन करने आये है, यह एक चिंतन शिविर है। संघ को एक जुट करने का मालवा महासंघ जैसा कोई भी संगठन जैन जगत में नहीं है। श्री वेलजी मणियार परिवार ने महासंघ के सम्मेलन में सभी सुविधा प्रदान कर लाभ लिया। मालवा महासंघ के द्वारा मणियार परिवार का सम्मान किया गया।

श्री नागेश्वर तीर्थ में ओली आराधना

नागेश्वर- श्री नागेश्वर महातीर्थ में चार्तुमास हेतु विराजित साध्वी श्री मुक्तिरेखा श्रीजी एवं साध्वीश्री अस्मिताश्रीजी म.सा. की निश्रा में आसोज वद की नवपद ओली आराधना का आयोजन होगा। ओली आराधना 8 अक्टूबर से आरंभ होगी। 17 अक्टूबर को तपस्वियों का पारणा होगा। आसोज सुद-5, गुरूवार, 6 अक्टूबर को श्री मणिभद्रवीर का हवन भी होगा।

श्री मणिभद्र महापूजन का आयोजन

केनपुरा चौराहा- श्री विश्व विघ्नहरा पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक महातीर्थ में विराजित पूज्य आचार्य देवेश श्री भाग्यशेखर सूरीश्वरजी एवं पूज्य आचार्य श्री भाग्यपूर्णा सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में यहां तपागच्छ नायक श्री मणिभद्रवीर के संकल्प दिवस आसोज सुदी-5 दिनांक 6 अक्टूबर का महापूजन एवं हवन का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही।

सायन में धर्माराधना की धूम

मुंबई- यहां के उपनगर सायन वेस्ट के श्री अभिनंदन स्वामी जैन देरासर सोसायटी में चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य आचार्य देवेश श्री नयचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में यहां चार्तुमास की धूम रही। आगे के कार्यक्रम में श्री हरिभद्र सूरीश्वरजी के ग्रंथों पर सेमीनार सरस्वती साधना ओली में श्री पाल राजा पर चिंतनात्मक प्रवचन श्री शांतिस्नात्र महापूजन आगम वाचना पर आगम वाचना सप्ताह आदि कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

आगम मंदिर परिसर में महापर्व की आराधना और माणियर परिवार के सम्मान से जिन शासन का मान बढ़ा

✻ युवा जैनाचार्य की शासन समर्पण की भावना से गुरू का मान बढ़ा।
✻ युवा मुनियों को साथ में लेकर चलने और योग्य कार्य सौंप आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी ने प्रौढ़ता का परिचय दिया।
✻ युवा मुनियों की प्रवचन शैली ने भविष्य के अच्छे संकेत दिये।
✻ मालव भूषणश्री की भावना को साकार कर रही है युवा मुनियों की टोली।
✻ आज्ञापालन और कार्यदक्षता का अद्भूत समागम।
✻ युवा जैनाचार्य अपने उत्तरदायित्व का अच्छा निर्वाह कर रहे है।
✻ यह दक्षता-समता उन्हें बहुत आगे ले जायेगी।

शंखेश्वर- पूज्यपाद मालवभूषण गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के वियोग के आंसु अभी सुखे भी नहीं है। पूज्यश्री के गमन के दुःख से हम अभी उभरे भी नहीं है। पूज्यश्री के जाने के बाद पूज्यश्री के गुरूकुल शिष्य-प्रशिष्यों का दायित्व का बोझ आया है वह तथा गुरूदेव के भक्तों पर भी जो भार आया है उसने सबको अपने कर्त्तव्य का एहसास करवा दिया है। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे एक पिता के चले जाने के बाद एक मात्र पुत्र पर सब भार आ जाता है और पगड़ी हो जाने के बाद सभी दायित्व उसके कंधों पर आ जाते है। पूज्य गुरूदेवश्री के चले जाने के बाद युवा जैनाचार्यश्री ने इस स्थिति को बहुत अच्छी तरह से समझ कर युवावस्था में वह प्रौढ़ता दिखाई है जो वदिल के चले जाने के बाद एक शिष्य पर आ जाती है। समदय, सरलता, सबको साथ में लेकर चलने की अहम भूमिका के साथ युवा जैनाचार्य अपने उत्तरदायित्व के ज्ञान को समझकर जिस कार्यदक्षता का परिचय दे रहे है वह गुरूदेव के स्वप्न को साकार करेगी। सबका साथ सबका विकास के सूत्र पर चलते हुए युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी उस दक्षता का परिचय दे रहे है जो आपसे अपेक्षा थी। पूज्यश्री की कार्यशैली को देखकर हर कोई आश्चर्य चकित और भौंचका है कि युवा जैनाचार्यश्री का अद्भूत बदलाव आया है। सभी शिष्य-प्रशिष्य भी उनके साथ कंधे से कंधा मिलकर जिनशासन की प्रभावना का एक नया इतिहास रचने के लिये तत्पर है। आगमोद्धारक परिवार पूज्यपाद मालव भूषण गुरूदेव से यही आर्शीवाद चाहता है कि वे आपश्री के बताये मार्ग का अनुसरण कर आपश्री के कार्यों को पूर्णता प्रदान करें तथा पूज्यश्री के जाने के बाद जो स्थान रिक्त हुआ है उसको पूर्ण करने से सहायक बनें। यहीं मनोकामना।

बैंगलोर में पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी एवं वैराग्यरत्न सागरजी की निश्रा में उपधान तप

बैंगलोर- यहां के श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर श्री संघ चित्रपेठ तथा श्री संभवनाथ जैन श्री संघ वी.वी.पुरम् जयनगर में चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्न सागरजी म.सा. तथा पंन्यास श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा.,साध्वी श्री हेमेन्द्रश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की महत्वपूर्ण तपाराधना उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है।

उपधान तप का प्रथम प्रवेश मुहूर्त 11 अक्टूबर को दूसरा 13 अक्टूबर को होगा। 27 नवंबर को उपधान तप निमित्त भव्य वरघोड़ा आयोजित होगा तथा उपधान मालरोपण 28 नवंबर को होगा। उपधान तप की सफलता हेतु तैयारियां चल रही है।

पूज्यपाद जैनाचार्य श्री अपूर्वमंगलरत्न सागर सूरीजी की निश्रा में उपधान तप होगा

*** पूज्य आचार्यश्री का स्वास्थ्य अभी ठीक है।**

*** पूज्यश्री बैंगलौर में विराजित है।**

मैसूर- यहां के श्री सुमतिनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ के तत्वावधान में उपधान तप की विशिष्ट तपाराधना अनुष्ठान का आयोजन परम पूज्यपाद गुरूदेव मालव भूषण जैनाचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के पट्टधर सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगलरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा, साध्वी श्री सुरेखा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में होने जा रहा है।

प्रथम मुहूर्त 17 अक्टूबर को रखा गया है। मालारोपण 4 दिसंबर को होगा। उपधान तप महावीर भवन में होगा। उपधान तप के लाभार्थी परिवार मातुश्री मतराबाई नेनमलजी लुकड़ है। पूज्यपाद आचार्यश्री का स्वास्थ्य अब ठीक है। बैंगलोर में ईलाज के बाद आपश्री मैसूर पहुंच गये है तथा स्वास्थ्य लाभ ले रहे है, व्याधि के उपरांत भी आपश्री ने अपनी धर्माराधना साधना, जप में अंकुश नहीं लगाया है। आप निरंतर ही साधनारत रहते हुए आत्म कल्याण के मार्ग पर आगे चल रहे है।

बाबू अमीचंद्र पन्नालाल आदिश्वर जिनालय में सिद्धि तथा सकल तीर्थ तप का पारणा

मुंबई- बालकेश्वर स्थित बाबु अमीचंद पन्नालाल आदिश्वर जिनालय श्री संघ में चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य आचार्य देवेश श्री सागरचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की पावन निश्रा में यहां संघ में सिद्धि तथा सकल तीर्थ तपाराधना का आयोजन किया गया। 9 सितंबर को सकल तीर्थ तथा अट्ठम तप से अधिक सभी तपस्वियों के पारणे हुए तथा 7 सितंबर को सिद्धि तप के तपस्वियों के पारण हुए। 11 सितंबर को भव्य रथयात्रा आयोजित की गई। 12 से 20 सितंबर तक नवकार महामंत्र के साथ 68 तीर्थों की भावयात्रा का भव्य आयोजन हुआ। इसके पूर्व भी श्री संघ में अनेक धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न हुए।

परेल में पंचान्हिका महोत्सव मनाया गया

मुंबई- यहां के उपनगर परेल के श्री आदिश्वर जैन श्री संघ में पूज्य गणिवर्य श्री गुणचंद्रसागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीवृंद के पावन सानिध्य में 8 से 12 सितंबर तक पंचान्हिका महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर विविध पूजन तथा 12 सितंबर को पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री दर्शनसागर सूरीजी म.सा. की 23 वीं पुण्यतिथि पर गुणानुवाद सभा भी हुई। श्री अष्टपद महापूजन भी पढ़ाई गई।

फोर्ट संघ-मुंबई में पर्वाराधना अच्छी हुई

मुंबई- फोर्ट तपागच्छ श्री संघ, मुंबई में पर्वाधिराज की आराधना यहां विराजित मुनिश्री विरक्तसागरजी म.सा., साध्वी धर्मरत्नाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में हुई। 11 सितंबर को रथयात्रा निकाली गई। आयंबिल ओली, दीपावली की आराधना भी होगी।

सबसे बड़ी भूल

सबसे बड़ी भूल 'मैं' का होना है। मैं से बड़ी भूल और कोई भी नहीं। परमात्मा के मार्ग में यही सबसे बड़ी बाधा है। साधना पथ का यही महा अवरोध है। जो इस अवरोध को पार नहीं करते, सत्य के मार्ग पर उनकी कोई गति नहीं होती।

सूफी फकीर बायजीद एक गांव से होकर गुजर रहे थे। उनके एक साधु मित्र भी उन दिनों उसी गांव में रह रहे थे। उन्होंने सोचा-जब यहां से गुजर रहा हूं तो अपने मित्र से भी मुलाकात करता चलूं। चलते-चलते पथ की थकान भी हो आई थी। रात भी आधी हो चली थी। थकान भी मिटेगी, रात्रि विश्राम भी जो जायेगा और साथ ही मित्र से मुलाकात भी।

इसी चाहत में उन्होंने एक बंद खिड़की से प्रकाश आते देख द्वार खटखटाया। भीतर से आवाज आई, कौन है? उन्होंने सोचा कि उन्हें तो आवाज से ही पहचान लिया जाएगा। कहा- मैं। लेकिन भीतर से कोई भी उत्तर नहीं आया। फकीर बायजीद ने बार-बार द्वार पर दस्तक दी, पर कोई उत्तर न आया। अब तो ऐसा लगने लगा जैसे यह घर बिलकुल निर्जन है। उन्होंने जोर से कहा- मित्र, तुम मेरे लिए द्वार क्यों नहीं खोल रहे हो और चुप क्यों हो गए? भीतर से कहा गया- भला यह कौन नासमझ है, जो स्वयं को 'मैं' कहता है, क्योंकि 'मैं' कहने का अधिकार सिवाय परमात्मा के और किसी को भी नहीं है।

सूफी फकीर बायजीद को अपनी भूल का अहसास हो गया। उन्होंने तत्क्षण यह सत्य अंतरतम की गहराईयों में अनुभव कर लिया कि जीवन की सबसे बड़ी भूल 'मैं' के सिवा और कुछ भी नहीं। प्रभु के द्वार पर हमारे 'मैं' का ही ताला है। जो उसे तोड़ देता है, वे पाते है, द्वार तो सदा से ही खुले थे। 'मैं' मिटा कि प्रभु प्रकट हुए। 'मैं' की क्षुद्रता विलीन हुई कि परमात्मा की महानता आप ही अपना संपदा बन गई। इस सबसे बड़ी 'मैं' पन की भूल को जो सुधार लेता है, वह जीवन के सत्य को पा पाता है।

आगम मंदिर पालीताना में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्यपाद गच्छाधिपति की निश्रा में 6 फरवरी को होगा

*** अनेक आचार्य साधु-साध्वी की उपस्थिति रहेगी।**
*** गणधर मंदिर की प्रतिष्ठा का शुभ संयोग।**

पालीताना- श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर संस्थान में नवनिर्मित श्री गणधर मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा का भव्य आयोजन पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा के साथ सिद्धाचल महातीर्थ में उपस्थिति सभी समुदाय के साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में होने जा रहा है। सागर समुदाय के आचार्यश्री अशोकसागर सूरीश्वरजी, आचार्य श्री नंदिवर्धनसागर सूरीजी, आचार्य श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. के साथ शतक से अधिक साधु-साध्वी भगवंतों की मंगल उपस्थिति रहेगी।

प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ 25 जनवरी को होगा। प्रतिष्ठा 6 फरवरी 2017 को होगी। इसी के साथ आगम मंदिर के मूलनायक प्रभु की 75 ध्वजारोहण भी महावद-5 को होगी। महोत्सव की तैयारियां आरंभ हो गई है।

जैनाचार्य श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी महाराजा का स्वास्थ्य तेजी से ठीक हो रहा है

*** जम्बुद्वीप में विराजित है।**
*** आचार्यश्री अक्षयचंद्रसागरसूरीजी तथा उपाध्याय श्री सौम्यचंद्र सागरजी के साथ साधु-साध्वी की अनुमोदनीय सेवा।**

पालीताना-सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य देवेश श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी म.सा. का स्वास्थ्य अब तेजी से अच्छा हो रहा है। स्वास्थ्य की अनेक बाधाओं और बायपास सर्जरी के बाद आपश्री अब जंबुद्वीप में आराधनारत है। सागर समुदाय के गुरू भगवंत और साध्वी भगवंत निरंतर आपश्री के स्वास्थ्य पर ध्यान रखे हुए है। चार्तुमास में पूज्य आचार्यश्री अक्षयचंद्रसागरसूरीजी द्वारा शत्रुंजय के महात्मय पर व्याख्यान में 800 धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही। मुनिश्री विवेकचंद्रसागर और मुनिश्री धैर्यचंद्रसागरजी ने भूरीबा धर्मशाला में व्याख्यान दिये।

सर्वोदयनगर मुलुंड में गुरूतिथि मेला जैनाचार्य श्री चन्द्राननसागर सूरीजी की निश्रा में हुआ

मुंबई- श्री सर्वोदयनगर-मुलुंड में श्री पार्श्वनाथ परमात्मा के जिनालय उपाश्रय में चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य आचार्य देवेश श्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री दर्शनसागर सूरीश्वरजी म.सा. की 23 वीं पुण्य तिथि पर गुरूतिथि मेला आयोजित किया गया। 9 सितंबर को गुरू गुणानुवाद तथा श्रावकरत्नों का सम्मान किया गया। इसके साथ ही पूज्यश्री की महामांगलिक भी हुई। इस अवसर पर अनेक विशिष्ट अतिथियों का आगमन हुआ।

अनुसंधान

अनुसंधान रोज नए होते है, फिर भी कुछ ऐसा अनिवार्य सत्य है, जिसकी खोज अभी बाकी है जिसका अनुसंधान न हो पाने की वजह से जीवन का संताप बढ़ता जा रहा है। दुनियाभर के विश्वविद्यालय हर वर्ष अपने विद्यार्थियों को बड़ी संख्या में शोध उपाधियां दिए जा रहे हैं, फिर भी जीवन का गहन शोध अभी बाकी रह गया है। विश्व में फैले अनगिनत शोध संस्थान चित्र-विचित्र अनुसंधान की होड़ में आपा-धापी कर रहे हैं, लेकिन विश्व की व्यथा में कोई कमी नहीं आ पा रही। नरक कहां है? कैसा है? इसके लिये अब किन्हीं कल्पनाओं की जरूरत नहीं है। जीवन और जगत की वर्तमान स्थिति को देखकर उसकी सहज अनुभूति की जा सकती है। इस नारकीय स्थिति के निर्माण में बहुत कुछ योगदान आधुनिक अनुसंधान-प्रक्रिया के परिणामों का भी है साथ ही सच यह भी है कि मनुष्य अपने जीवन के सत्य के अनुसंधान से वंचित है। अपने लिए अंतरिक्ष के द्वार खोलने वाले मनुष्य ने स्वयं के अंतस् के द्वार बंद कर लिए हैं। उस अंतर्यात्रा का ख्याल ही वह भूल गया है, जो कि वह अपने ही भीतर कर सकता है। इस स्थिति को क्या कहेंगे- पाना या खोना? स्वयं को खोकर यदि शेष सब कुछ पा भी लिया गया तो उसका क्या अर्थ व मूल्य है। संपूर्ण ब्रह्मांड की सभी शक्तियों व समस्त सत्यों के अनुसंधान मिलकर भी उस छोटे ये बिन्दू से अनजान रह जाने के दर्द को नहीं मिटा सकते, जो कि मनुष्य स्वयं है, जो उनकी निज सत्ता केन्द्र है, उसका अनुसंधान अधूरे व अपूर्ण है। स्वयं के भीतर प्रकाश की छोटी सी टिमटिमाती ज्योति हो तो सारे ब्रह्मांड का सारा अंधेरा पराजित हो जाता है, लेकिन यदि स्वयं के केन्द्र पर अंधियारा हो तो ब्राह्माकाश के कोटि-कोटि सूर्य भी उसे मिटा नहीं सकते।

विश्वरक्षा चेरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा गणिवर्य श्री विरागसागरजी की निश्रा में अहिंसा मुक्त सिद्धाचल के लिये बढ़ा अभियान

11 अक्टूबर से उपधान तप एवं 6 दिसंबर से नवटुंक यात्रा होगी

पालीताना- सागर समुदाय की शान अहिंसाप्रेमी गणिवर्य श्री विरागसागरजी म.सा. के द्वारा श्री सिद्धाचल महातीर्थ को हिंसा मुक्त बनाने के लिये बढ़ा अभियान चलाया जा रहा है। आपके इस कार्य को सम्पूर्ण जैन समाज के साधु-साध्वी एवं जैन समाज का व्यापक समर्थन मिल रहा है। इस वर्ष आपका चार्तुमास भी पालीताना ही हो रहा है। आपकी निश्रा में 11 अक्टूबर से उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप का वरघोड़ा 29 नवंबर को निकलेगा तथा मालारोपण 30 नवंबर को होगा। इसी प्रकार आपश्री की निश्रा में 6 दिसंबर से नवटुंक नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ होगा तथा 9 दिसंबर से नवटुंक सेवा रक्षा अभियान आरंभ किया जावेगा। नव्वांणु यात्रा की पूर्णाहुति 31 जनवरी 2017 को होगी। उपधान तथा नव्वांणु यात्रा के दौरान 10 हजार गुरू भगवंतो को सुपात्र दान तथा 50 हजार साधार्मिक आराधकों की भक्ति की जावेगी।

पू.सूरिमंत्राराधक आचार्य श्री पुण्यानंद सू.म. आ.महासेन सू.म. की निश्रा में अनुमोदनीय शासन प्रभावना हुई

मुलुंड- सर्वोदयनगर में ध्वजारोहण निमित्त श्री संघ में 3251 मांगलिक आयंबिल तथा 18 भाविकों ने वर्धमान तप प्रारंभ किया, सभी का विशिष्ट बहुमान हुआ।

✻ मुलुंड-वर्धमान नगर में पूज्य आत्मारामजी म.एवं आ.भुवनतिलक सू.म. की पुण्यतिथि निमित्त गुणानुवाद विशिष्ट संघ पूजा हुआ, बालक-बालिकाओं के नव्वाणु यात्रा-उपधान तप पूर्णाहुति निमित्त महापूजन तथा श्री संघ जमण हुए।

✻ मुलुंड सर्वोदय नगर में श्री पार्श्वलब्धि नव्वाणु आराधक ग्रुप की ओर से श्री शत्रुंजय 21 नाम से युक्त विशिष्ट अनुष्ठान, 150 आयंबिल, साकर पेकेट की प्रभावना अंत में हुई, प्रथम बार ही हुआ, भाविकों को आनंद हुआ।

✻ अषाढ़ी-1 को महामांगलिक सुनाकर मंगल आशिष दिये।

✻ अ.सु.4 को मुलुंड में विहार कर घाटकों पर संघाणी संघ में पधारे पू.आ. राजेन्द्र सूरीजी म., आ.धर्मयश सू.म.आदि का मिलन हुआ, प्रवचन हुए।

✻ मुलुड-सर्वोदय नगर में संघ में पं. तत्वदर्शन वि., आ.तीर्थभद्रसूरि म.,आ. यशोवर्म सू. पद्मयशसू-वीरयश सू., अजित यश सू.आदि का मिलन हुआ।

✻ घाटकोपर-नवरोजी श्री तपा गच्छ संघ में अषाढ़ सु.6 के पावन दिन पूज्यश्री एवं साध्वीजी म. का विशाल साजनभाजन के साथ शुभ मूरत में मंगल प्रवेश किया, श्री मुनिसुव्रत स्वामी का दर्शन करके मेन गेट के ऊपर शुकन की 24 चीज विशिष्ट गहुली-मंगल कलश आदि से श्री संघ ने गुरूदेवश्री का स्वागत करके चावलों से बधाया। गुरू म. प्रवचन पीठ पधारे, तब जयनादों से गुंज उठा, समूह गुरूवंदन करके मांगलिक दिया, सोहुल संगीतकार ने स्वागत गीत लिया। श्री संघ के अध्यक्ष श्री कीर्तिभाई ने सकल संघों का अभिवादन किया।

पू.आ.श्री का तथा मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुए। मांगलिक आयंबिल अच्छी संख्या में हुए, 50 रूपये की प्रभावना दी गई। प्रवचन के अंत में 70 रूपये संघ पूजन हुआ, बाहर-गांव से भाविकगण अच्छी संख्या में पधारे थे, तीन चढ़ावे सराहनीय हुए।

✻ गुरू पूज्य लाभार्थी-संघवी मणीलाल लक्ष्मीचंद परिवार मुंबई।

✻ कामली लाभार्थी संघवी महेन्द्र भाई पी. मेहता-अहमदाबाद।

✻ वासक्षेप व्हरोना-सहुलभाई परिवार-घाटकोपर। सामैया तथा श्री संघ स्वामी वात्सल्य लाभार्थी- रसीला बेन चिमनलाल दीयोरा, कल्याणणी वनमालीदास पारेख, कांताबेन शांतिलाल पारेख, नटवरलाल माणेकलाल शाह परिवार।

✻ श्री संघ स्वामी वात्सलय का लाभ 3200 भाविकों ने दिया, अनुमोदना।

142 सिद्धि तपाराधकों सामूहिक परणा हुआ

अहमदाबाद- अहमदाबाद के श्री कृष्ण नगर जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ में 142 सिद्धि तपाराधकों का सामूहिक रूप से पारणा के लिये पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। पूज्य आचार्यदेव श्री हेमप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में इस विराट तप का आयोजन की पूर्णाहुति 7 सितंबर को हुई। 14 से 18 सितंबर तक आयोजित महोत्सव में प्रथम तीन दिन अर्हुत महापूजन, स्नात्र पूजन, पंच कल्याणक पूजन पढ़ाई गई। सभी तपस्वियों का बहुमान 11 सितंबर को किया गया। सिद्धि तप का पारणा 7 सितंबर को हुआ।

✻ **पर्व**-***पर्व गरीब से गरीब व्यक्ति के मन में उत्सव का भाव जगा देता है।***

श्री सागर गच्छाधिपति की निश्रा में घसोई तीर्थ में चार्तुमास आराधना का रंग चढ़ा

✽ 9 अक्टूबर को सागर समुदाय श्रावक समिति की बैठक होगी।
✽ सागर समुदाय के साथ अन्य मुद्दों पर चर्चा होगी।

घसोई तीर्थ- सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति पूज्यपाद आचार्य देवेश जिनागमसेवी श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा, अजातशत्रु पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री नंदीवर्धनसागर सूरीजी महाराजा पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा की निश्रा में यहां चातुमार्सिक आराधना के साथ महापर्व की आराधना जोरदार रही है। बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविका यहां पर्व की आराधना के लिये चारों ओर विभिन्न आराधना और तप के साथ परमात्म और गुरू भक्ति का आनंद लिया। उज्जैन के सुश्रावक श्री कांतिलालजी संघवी ने मासक्षमण किया। पूज्यश्री की निश्रा में 9 अक्टूबर को सागर समुदाय की श्रावक समिति की बैठक का आयोजन किया गया है जिसमें समुदाय के संबंध में विभिन्न चर्चा की जावेगी। समुदाय की गरिमा सम्मान के साथ पूज्य गच्छाधिपति और सागर समुदाय का जैन जगत में सम्मान बढ़े इस हेतु क्या किया जा सकता है, इस बारे में विशेष चर्चा होगी। इस सभी प्रक्रिया साधु-साध्वी तथा श्रावक-श्राविका और श्री संघ की भूमिका पर भी विचार किया जावेगा।

मेरूधाम में उपधान तपाराधना आचार्यश्री हेमप्रभसूरीजी की निश्रा में होगी

अहमदाबाद- पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्री विजय हेमप्रभ सूरीश्वरजी महाराज की निश्रा में उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप में प्रवेश का प्रथम मुहूर्त 11 अक्टूबर तथा दूसरा 13 अक्टूबर को है। रथयात्रा 27 नवंबर को होगा। 28 नवंबर को मोक्षमाल का कार्यक्रम रखा गया है।

श्री आर्यगुण गुरूकृपा जैन तीर्थ में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव नववर्ष 2017 में होगा

✽ *प्रतिष्ठा जाजम 2 अक्टूबर को।*
✽ *पूज्य आचार्य श्री कलाप्रभसागरजी का भव्य अवदान।*

रामजी का पोल- पूज्य आचार्य श्री गुणसागर सूरीजी एवं पूज्य आचार्य श्री गणोदयसागर सूरीजी की कृपा से पूज्य जैनाचार्य श्री कलाप्रभसागरजी म.सा. को जैन अवदान के रूप में महत्वपूर्ण भेंट श्री आर्य गुण गुरूकृपा जैन तीर्थ के रूप में मिलने जा रही है। बीकानेर, जैसलपुर, बाड़मेर, चण्डला हाईवे पर रामजी का पोल में निर्मित हो रहे इस तीर्थ का भव्य प्रतिष्ठा जाजम का आयोजन 2 अक्टूबर को होने जा रहा है। प्रतिष्ठा अंजन का महापूजन 11 से 22 जनवरी 2017 तक होगा। प्रतिष्ठा 21 जनवरी को सम्पन्न होगी। प्रतिष्ठा की तैयारी आरंभ हो चुकी है।

2017 में मनोजजी हरण यू.एस.ए.में पर्वाराधना करवायेंगे

शाहपुर- वहां 1008 व्यक्तियों के द्वारा सामूहिक रूप से श्री सरस्वती की महापूजन में भाग लिया गया। प्रेरक मार्गदर्शक भाई मनोजजी हरण थे। आप 2017 में यू.एस.ए. अमेरिका में पर्वाराधना करवायेंगे।

पंचान्हिका महोत्सव मना

झीलवाड़ा- पूज्य पंन्यास श्री विद्यानंदविजयजी के कालपर्स निमित्त त्रिदिवसीय अर्हत महापूजन का आयोजन पूज्य आचार्यदेव श्री रविशेखरसूरीजी की निश्रा में हुआ। 11 से 15 अगस्त तक पंचान्हिका महोत्सव मनाया गया।

राऊ में पंचान्हिका महोत्सव मना

राऊ- श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय में चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. की निश्रा में यहां 7 से 23 सितंबर तक विविध महापूजन के साथ पंचान्हिका महोत्सव मनाया गया। 6 अक्टूबर को श्री मणिभद्रवीर का संकल्प दिन तथा 19 अक्टूबर को पूज्यश्री का 52 वां दीक्षा वर्ष मनाया जावेगा। 20 नवंबर को चापड़ा से शिवपुर का संघ निकलेगा।

श्री नागेश्वर तीर्थ में पर्व क्षमापना

नागेश्वर- श्री जैन श्वेतांबर नागेश्वर महातीर्थ में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान साध्वीवर्या मुक्तिरेखा श्रीजी की निश्रा में पर्व की आराधना जोरदार रही। 8 सितंबर को तपस्वियों का बहुमान श्री पार्श्व पंचकल्याणक पूजन तथा साधार्मिक वात्सल्य का आयोजन किया गया। चार्तुमास एवं पर्व के दौरान अनेक धार्मिक प्रतियोगिता आयोजित की गई।

आचार्यदेव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा आगामी महामांगलिक

31 अक्टूबर 2016 सोमवार शंखेश्वर महातीर्थ, महामांगलिक

30 नवंबर 2016 बुधवार शंखेश्वर महातीर्थ, महामांगलिक

दीक्षा दानेश्वरी आचार्यश्री गुणरत्न सूरीजी तथा आचार्यश्री रश्मिरत्न सूरीजी की निश्रा में अद्भूत शासन प्रभावना का दौर

अहमदाबाद- श्री अहमदाबाद पालड़ी विस्तार के श्री जैन सोसायटी जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ में पूज्यपाद 354 दीक्षा दानेश्वरी आचार्यश्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा., आचार्यश्री रश्मिरत्न सूरीश्वरजी म.सा.,पंन्यास श्री संयमरत्नविजयजी म.सा. महातपस्वी मुनिराज श्री गौतमरत्नविजयजी म.सा., नूतन दीक्षित मुनिराज श्री भव्यरत्न विजयजी म.सा. (सां.नाम श्री भंवरलालजी दोशी) आदि 50 साधु भगवंत एवं पूज्य दीक्षा दानेश्वरी के आज्ञानुवर्तिनी तपस्विनी साध्वीश्री पुष्पलता श्रीजी व उनकी शिष्या 300 शिष्याओं की गुरूमाता प्रवर्तिनी साध्वी श्री पुण्यरेखाश्रीजी आदि 20 ठाणा साध्वी भगवंतों का चार्तुमास प्रवेश जब से हुआ है पूरा संघ उल्लास से मानो नाच रहा है। प्रतिदिन अध्यात्म कार्यक्रम (गुरू-शुक्र-शनि), आचार्यश्री रश्मिरत्न सूरीजी द्वारा (सोम-मंगल-बुध) मुनिश्री चारित्ररत्न विजयजी द्वारा विविध विषयों पर प्रवचन धारा चल रही है। 14 वर्ष से ऊपर के भाई-बहिनों के लिये पांच दिवसीय आय.एम. इन्टर मोटीवेशन प्रवचन श्रेणी सम्पन्न हुई जिसमें 500 से अधिक भाई-बहिन जुड़े। विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. श्री प्रवीणभाई तोगड़िया ने संस्कृति रक्षा व धर्मसभा की बात कही। भाईयों के लिये प्रातः तत्वज्ञान क्लासिक व रात्रिप्रवचन भी चली रही है। 4 से 13 वर्ष के बालक-बालिकाओं के लिये गुरूवंदन अभियान बहिनों के लिये साध्वीजी द्वारा गुरूवारीय अनुष्ठान व हर शनिवार को महिला शिविर का आयोजन हुआ। श्री पादरली श्री संघ व श्री शंखेश्वर पार्श्व- श्री जितेन्द्रसूरीजी जन्म भूमि गुरू मंदिर निर्माण समिति द्वारा 18 जनवरी 2017 को प्रतिष्ठा-अंजनशलाका मुहूर्त ग्रहण किया गया। श्री करेड़ा पार्श्वनाथ जैन देरासर ट्रस्ट के अग्रणी श्री श्रेयकभाई आदि ट्रस्टी मंडल ने श्री दयालशा किला के जीर्णोद्धारित विराट जिनालय की प्रतिष्ठा का मुहूर्त 2 मार्च 2017 का लिया गया। सांसद डॉ. श्री किरीटभाई सोलंकी ने गुरूदर्शन किये। राज्यपाल महामहिम श्री ओ.पी. कोहलीजी को 21 अगस्त आय.एम. समापन हेतु विनंती की गई है। जीरावला पार्श्वनाथ तप में 125, जीरावला अट्ठम में 200 आराधक जुड़े। जीरावला ट्रस्ट ने पूरे विश्व में एक लाख आठ हजार अट्ठम करवाये। 18 अगस्त को साध्वी भावार्थी रेक्षाश्रीजी के 31 उपवास की पूर्णाहुति हुई। आचार्य श्री जयसुंदरसूरीजी एवं आ.श्री रविरत्नसूरीजी भी पधारे। 8 मार्च 2017 को श्री खमनोट (मेवाड़) प्रतिष्ठा का मुहूर्त घोषित किया गया।

महातपस्वी मुरिराज श्री गौतमरत्न विजयजी म.सा. (बेलागाम-हरजीवाले) के महाभद्रतप चल रहा है। भगवान महावीर के युग के इस घोर तप में 295 दिनों में 186 उपवास और 48 पारणे आते है। इस महातप की पूर्णाहुति का उत्सव पर्युषण बाद 18 अगस्त के दिन हुआ।

श्री गुरू गौतम स्वामी महापूजन हुई

केनपुरा-चारेष्टा- श्री विश्व विघ्नहरा मणिभद्र जैन श्वेतांबर तीर्थ में पूज्य आचार्य श्री विजय हिरण्यप्रभ सूरीजी की छठी पुण्य तिथि निमित्त दिनांक 7 अगस्त को अनंत विधान श्री गौतम स्वामी महापूजन पढ़ाई गई। पूज्य आचार्य श्री भाग्यशेखर सूरीजी एवं आचार्य श्री भाग्यपूर्ण सूरीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा रही।

श्री शांतिनाथ तीर्थ में जन्मवाचन हुआ

सेमलिया- श्री शांतिनाथ जैन श्वेतांबर महातीर्थ सेमलियाजी में दिनांक 3 सितंबर को परमात्मा का जन्मवाचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जन्मोत्सव शाम 7 बजे हुआ। इस अवसर पर स्वामी वात्सल्य भी रखा गया था।

श्री उवसग्गहरम् तीर्थ में रजत जयंति महोत्सव

उवसग्गहरम्-श्री उवसग्गहरम् तीर्थ की 25 वीं वर्षगांठ पर रजत जयंति महोत्सव का आयोजन 31 जनवरी 2020 को मनाया जावेगा। पांच वर्ष बाद आयोजित होने वाले महोत्सव के लिये तीर्थ सफ्ल संचालन निधि का संकलन हो रहा है। आर्शीवाददाता पूज्य आचार्यश्री राजयश सूरीजी म.सा. है।

***** *धन होने पर दान, कष्ट सहने पर साहस, मूर्खों से पाला पड़ने पर उपेक्षा, उच्च काम करते हुए निरभिमानता यह साधुजनों के विशेष गुण है।*

श्री जीरावला महातीर्थ में प्राण-प्रतिष्ठा के सुखद आयोजन हेतु अट्ठम-आयंबिल की सारे देश में आराधना

* प्रतिष्ठा चढ़ावे की जाजम 10 दिसंबर को।
* प्रतिष्ठा 2 फरवरी 2017 को।
* युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी दोनों कार्यक्रमों में निश्रा देंगे।

जीरावला- जैन जगत के इतिहास में वर्तमान युग से एक अनोखा आयोजन जीरावला पार्श्वनाथ परमात्मा के जिनालय की प्रतिष्ठा रूप में सम्पन्न होने जा रहा है। अध्यक्ष श्री बाबूलालजी संघवी, श्री रमणभाई जैन, श्री प्रकाश के.संघवी की संपूर्ण टीम इस भव्य आयोजन को अंतिम रूप देने के लिये लम्बे समय से कार्यरत है। एक अद्भूत अनोखे आयोजन में 5000 हजार से अधिक साधु-साध्वीजी की निश्रा सारे देश-विदेश लाखों धर्मिष्ठ का आगमन होने जा रहा है। जैन शासन को गौरवान्वित करनेवाले अनेक आयोजन, गीत-संगीत से भरी परमात्म भक्ति, तन-मन-धन से शासन की प्रभावना, धर्माराधना के दर्शन कराने अनेक कार्यक्रम हाँ सब अद्भूत होगा।

इस महोत्सव में इस वर्ष के अंतिम माह की 10 दिसंबर को प्रतिष्ठा की जाजम होगी जिसमें परमात्मा की असीम कृपा प्राप्त करने के लिये श्रेष्ठिवर्य चढ़ावे का लाभ लेंगे जिससे प्रतिष्ठा का स्वरूप उभर कर सामने आयेगा इसके उपरांत 2 फरवरी 2017 को परमात्मा की प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी। पूज्यपाद गुरूदेव मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी ।राजा के प्रतिनिधि के तौर पर युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. प्रतिष्ठा महोत्सव तथा जाजम के कार्यक्रम गुरूकुल निश्रा प्रदान करेंगे।

साध्वीजी की वर्धमान तप की 84 वीं ओली का पारणा सम्पन्न

बाड़मेर- थार नगरी बाड़मेर नगर की पावन धरा पर जैनाचार्य श्री गुणसागरसूरी साधना भवन में चातुर्मासार्थ व्यवहार कुशला साध्वीवर्या श्री विपुलगुणा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में साध्वी श्री लक्षगुणा श्रीजी म.सा. की वर्धमान तप की 84 वीं ओली का पारणा 8 अगस्त को सानंद सम्पन्न हुआ।

दुर्ग में उपधान तप की आराधना

दुर्ग- पूज्य गुरूदेव खरतगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.की पावन निश्रा में दुर्ग श्री संघ द्वारा महामंगलकारी उपधान तप का आयोजन किया गया। यह उपधान तप 19 सितंबर से प्रारंभ हुआ। माल महोत्सव कार्तिक सुदी-8, दिनांक 8 नवंबर को होगा। 3

सिद्धी तपाराधना

अहमदाबाद- श्रीमती मीता बहन की सिद्धितप तथा ऋषिका बहन के वर्षीतप पर 7 सितंबर को तपोत्सव का आयोजन किया गया। पू.पंन्यास श्रीवैराग्यरत्नसागरजी म.सा. साध्वी श्री स्मितदर्शना श्रीजी, साध्वी श्री भव्यदर्शना श्रीजी के आर्शीवाद एवं पूज्य आचार्य श्री अरूणोदयसागर सूरीजी, युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी एवं पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.सा. की प्रेरणा रही।

जैनाचार्य श्री सुशील सूरीजी की पुण्यतिथि मनेगी

मुंबई- पूज्य आचार्य श्री जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.सा.की पावन निश्रा में यहां पू. आचार्य श्री सुशीलसूरीजीश्वरजी म.सा. की 11 वीं पुण्यतिथि 9 अक्टूबर को मनाई जावेगी। यह कार्यक्रम मोतीशा आदिश्वर मंदिर भावकला में होगा। चार्तुमास के बाद आपका विहार कार्यक्रम निम्नानुसार रहेगा-

* श्री खिमाड़ा नगर (राणावतों का) प्रतिष्ठा महोत्सव 18 जनवरी 2017
* श्री शांति-सुशीलधाम, हस्तिनापुर नगरी, तखतगढ़ अंजनशलाका प्रतिष्ठा- 17 फरवरी 2017
* श्री नाकोड़ा रथ मंदिर, गुड़ा एंदला-अंजनशलाका प्रतिष्ठा-1 मार्च 2017
* योगीराज श्री शांति सूरीश्वरजी ध्यान मंदिर आहोर प्रतिष्ठा-8 मार्च 2017
* सन् 2017 वर्ष के चार्तुमास की प्रायः संभावना राजस्थान प्रांत अथवा श्री पालीताना तीर्थ में।

विजयवाड़ा में पंचान्हिका महोत्सव मना

विजयवाड़ा- यहां चार्तुमास हेतु विराजित सागर समुदाय की साध्वीवर्या पूज्यश्री हेमप्रज्ञाश्री म.सा. आदि ठाणा-5 की निश्रा में श्री संघ में हुई विविध तपस्या-मासक्षमण-निगोद निवारण तप तथा नमस्कार महामंत्र आदि तप-जप-अनुष्ठान के निमित्त पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन 8 से 12 सितंबर तक किया गया। विविध पूजन-महापूजन के साथ सधार्मिक वात्सल्य का भी आयोजन किया गया। आगे भी आयंबिल ओली, दीपावली छट्ठ सरस्वती पूजन जैसे आयोजन होंगे।

15 गर्भगृह के साथ 303 जिनालय श्री महेन्द्रपुरम् तीर्थ में दर्शन के लिये पधारो

श्री महेन्द्रपुरम् तीर्थ- श्री शाश्वत तीर्थ तीर्थाधिराज शत्रुंजय की महिमा अद्भूत है, तीर्थ प्राचीन तलेटी वल्लभीपुर समीप निर्माण हुआ श्री महेन्द्रपुरम् तीर्थ.... तीर्थ के प्रांगण में वि.सं. 2071, महा सुद-14 दिनांक 2/2/2015 के पावन दिन अंजनशलाका-प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्य तपागच्छाचार्य श्री लब्धि-भुवन-भद्रंकर सू.म. के पट्टधर ॐकारतीर्थ स्थापक पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय पुण्यानंद सूरीश्वरजी आदि आचार्य भगवंत तथा विशाल श्रमण-श्रमणीगण सह श्रावक-श्राविका के विशाल समूह उपस्थिति में चिरस्मरणीय हुई। पूज्य साधु-साध्वीजी म.सा.का वसविद्वान-गोचरी लाभ अच्छा मिल रहा है। मुख्य 15 गंभारों में से 10 गंभारे में प्रभु प्रतिष्ठा-ध्वजारोहण हुआ और 120 देवकुलिकाओं में 600 जिनप्रतिमा की 120 मंगल मूर्ति की प्रतिष्ठा ध्वजारोहण की गई, बाकी आगामी समय में करने की भावना रखते है, जरूर तीर्थ में पधारकर पार्श्व प्रभु के दर्शन-वंदन-पूजन का लाभ लेवें, धर्मशाला-भोजनशाला की अच्छी व्यवस्था है।

प्रभु महावीर के शासन में सम्राट संप्रति ने सवा करोड़ जिनबिंब निर्माण करवा के बहुत उपकार किया। वह प्रभु प्रतिमा अपने पर तारक-उपकारक बनी है, जैसे अषाढ़ी श्रावक ने प्रभु पार्श्वनाथ की प्रतिमा निर्माण की, वह आज शासन में तरणतारण महान प्रभावक बिराजमान है, वैसे प्रभु अपने को भवोंभव तारण बने, ऐसी भावना से श्रावक जीवन में शक्ति हो तो भक्ति जगाकर, आसक्ति तोड़ने प्रभु प्रतिमा निर्माण करके प्रतिष्ठा का लाभ लेकर पुण्यानुबंधी पुण्य निर्माण करो...।

शांतिधाम पदयात्रा संघ का आयोजन

थाने- श्री शांतिनाथ जैन तीर्थ मानपाड़ा और थाने तीर्थयात्रा का आयोजन 1 जनवरी से 30 जून 2017 के मध्य तीर्थयात्रा का आयोजन होने के साथ पदयात्री को विभिन्न तीर्थों की यात्रा कराई जायेगी।

पौषधधारी छःरिपालक संघ का आयोजन

शिखरजी- श्री वर्धमान मित्र मण्डल गुजरात मुंबई द्वारा गिरीडीह से श्री सम्मेत शिखरजी तीर्थ का छःरीपालक यात्री संघ परम पूज्य कच्छ वागड़ देशोद्धारक, अध्याम योगी आचार्यदेव श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न प.पू. प्रवचन प्रभावक आचार्यदेव श्रीमद् विजय पूर्णचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की पावन निश्रा में 26 नवंबर को गिरिडीह से प्रस्थान होकर ऋजुबालिका तीर्थ पहुंचेगा। 22 नवम्बर को पिताड़ा से रवाना होकर श्री सम्मेतशिखरजी महातीर्थ पहुंचेंगे तथा 29 नवम्बर को श्री सम्मेतशिखरजी गिरीराज की यात्रा करेंगे। 30 नवंबर को श्री भोमियाजी मंदिर के पास तीर्थ माल का आयोजन होगा।

इस संघ में पौषधधारी को ही यात्रा करवाई जायेगी। भाग लेने वाले पोषध की आवश्यक सामग्री साथ में लाने का कष्ट करें। अधिक जानकारी के लिये श्री रश्मिभाई सौदागर अहमदाबाद मो. 9426863196 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री प्रेमसूरीजी महाराज का कालधर्म

मुंबई- पूज्यपाद तपागच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री प्रेमसूरीजी महाराजा का शनिवार की रात्री 12.18 बजे कालधर्म हो गया। आपश्री लम्बे समय से अस्वथ्य थे। बाबू अमीचंद जैनश्री संघ वालकेश्वर में आपकी देह दर्शनार्थ रविवार को रखी गई। पालकी दोपहर 2.30 बजे वालकेश्वर बाबू अमीचंद्र पन्नालाल जैन देरासर उपाश्रय से आरंभ होकर सपार्श्वनाथ वाईट हाउस, बाबुलनाथ सुख सागर प्रार्थना ससाज नवग्रह मंदिर, फ्रेंच ब्रिज से धरम पेलेस होकर पंचशील प्लाजा पहुंची जहां आपश्री की देह का अग्नि संस्कार किया गया। हजारों की संख्या में गुरूपालकी में आये, अंतिम चढ़ावे भी जोरदार रहे।

काल धर्म

कीर्तिस्तंभ-घाणेराव (राज.)- में नाकोड़ा तीर्थोद्धारक, मेवाड़ केशरी प.पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय हिमाचल सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न सरल स्वभावी, ज्योतिर्विद शासन प्रभावक प.पू. पंन्यास प्रवर श्री विधानंदविजयजी म.सा. का श्रावण वदी-(गुज. आषाढ़ वदी) 14 दिनांक 1 अगस्त को रात्री 11.20 बजे संपूर्ण समाधिमय नवकार मंत्र का श्रवण करते हुए कालधर्म हुआ है। 2 अगस्त को हिमाचल सूरि दादावाड़ी में अनेक गुरूभक्तों की उपस्थिति में अग्नि संस्कार हुआ। ज्ञात रहे पूज्य पंन्यासजी म. ज्योतिष शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान थे, आपश्री ने अनेक नगरों में धार्मिक कार्यक्रमों में मुहूर्त प्रदान किये थे, आपश्री द्वारा प्रदत्त मुहूर्त में शासन के कार्य उत्तरोत्तर वृद्धिकारक बने थे। सद्गत पूज्यश्री के आत्मश्रेयार्थ झीलवाड़ानगर (मेवाड़) में 11 से 15 अगस्त तक अर्हद् महापूजन युक्त पंचान्हिका महोत्सव आयोजित किया है।

हमारे तीज-त्यौहार

1- आसोज सुद-5	गुरूवार	6-10-2016	गुरूउदय
2- आसोज सुद-7	शनिवार	8-10-2016	आयंबिल ओली आरंभ
3- कार्तिक वदी-4	बुधवार	9-10-2016	रोहिणी
4- कार्तिक वदी-13	शुक्रवार	28-10-2016	धनतेरस
5- कार्तिक वदी-14	शनिवार	29-10-2016	चौदस
6- कार्तिक वदी अमावस्य	बुधवार	30-10-2016	दीपावली
7- कार्तिक सुद-1	सोमवार	31-10-2016	नूतन वर्षाभिनंदन, परमात्मावीर प्रभु का निर्वाण,श्री नेमिसूरीजी की तिथि

पंचक- आरंभ-आसोज सुदी-11, दिनांक 22/10/2016, बुधवार, समयः- सुबह 7.52 बजे
समाप्त-आसोज सुदी-15, दिनांक 16/10/2016,रविवार, समयः- दोपहर 11.15 बजे

पुष्प नक्षत्र- आरंभ-कार्तिक वदी-7, दिनांक 22/10/2016, शनिवार, समयः- रात 8.29 बजे
समाप्त-कार्तिक वदी-8, दिनांक 23/10/2016,रविवार, समयः- रात 8.40 बजे

आत्म-उपदेश

परिवर्तन संसार की जान है। जिसको मौत समझते हो वही जीवन है। मिनट में तुम करोड़ों के वारिस और क्षणभर में लावारिस बन जाते हो। मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-बेगाना दिल से मिटा दो। ख्याल से हटा दो। फिर सब तुम्हारा है और तुम सबके हो। न यह जिस्म तुम्हारा है, न तुम इस जिस्म के हो। यह आग से बनता है और यह आग में मिल-जुल जाता है। मिट्टी से बनता है और मिट्टी में मिल जाता है। यह पानी से पैदा होता है और पानी में समा जाता है। यह हवा से भरा हुआ है और में भर जाता है। न हड्डी रहती है, न जबान, कान, आँख का निशान बाकी रहता है, मगर फिर भी तुम्हारा वैभव वैसे-का-वैसा ही रहता है। फिर तुम सोचो कि तुम क्या हो ?

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

आगमोद्धारक का नवम्बर अंक दीपावली विशेषांक होगा। आपकी रचनाएं भेजिए।

सादर आमंत्रण

※पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चातुर्मास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें। ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सके।

※आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

※पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव,मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

※अंक आपके तक नियमित रूप से नवीन स्वरूप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक